वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 234
ISBN-978-93-82071-43-3

समवसरण विधान

–रचयित्री–

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत दशलक्षण महापर्व-2013 (9 से 19 सितम्बर) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
-Visit us-
www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com

तृतीय संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	भादों शु.चतुर्थी, 9 सितम्बर 2013	80/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण सन् 2006–2200 प्रतियाँ,
द्वितीय संस्करण सन् 2013–500 प्रतियाँ प्रकाशित

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

वर्तमान में जैन समाज में प्रायः हर स्थान पर अब पूजा मण्डल विधानों की धूम मची रहती है। इस बीसवीं सदी में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य सृजन के इतिहास में एक अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है। उसेंम बड़े-बड़े आध्यात्मिक ग्रंथों के लेखन के साथ ही भक्ति गंगा को प्रवाहित करते हुए छोटे-बड़े सभी मिलाकर लगभग 35-40 विधानों की रचना की है, जिनमें इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र विधान आदि प्रमुख हैं। पूज्य माताजी की लेखनी अविरल चलती रहती है। जिसके द्वारा नई-नई कृतियों का उद्‌गम होता रहता है। प्राचीन समय में शास्त्र लेखन की परंपरा नहीं थी केवल सुनने मात्र से मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त हो जाता था। किन्तु धीरे-धीरे काल केप्रभाव से बुद्धि क्षीण होने से सब विस्मृत होने लगा, तो सर्वप्रथम आचार्यश्री पुष्पदंतऔर भूतबलि ने षट्‌खण्डागम ग्रंथ की रचना की जो महान ग्रंथ है। पूज्य माताजी ने इस षट्‌खण्डागम ग्रंथ की 16 पुस्तकों पर भी 'सिद्धान्तचिंतामणि टीका' नाम से संस्कृत टीका लिखकर जैन संस्कृति पर महान उपकार किया है। पूज्य माताजी द्वारा लिखित पूजा विधानों की हर पंक्ति, सरल ज्ञानवर्धक और आगम सम्मत होती है। यदि कोई विद्वान उसके अर्थ को नहीं समझाये तो भी उसका अर्थ स्वयं समझ में आ जाता है।

यह ''समवसरण विधान'' भी अन्य विधानों के समान सरस-सुबोध भाषा में लिखा है। जिसमें 24 तीर्थंकरों के समवसरण के वैभव का वर्णन है तथा समवसरण में स्थित 8 भूमियों, मानस्तंभ, गंधकुटी एवं तीर्थंकरों के गुणों की पूजा की गई है।

मानव मात्र को सुख-शांति व समृद्धि प्राप्त हो इसी भावना से पूज्य गणिनी माताजी ने सुगम भक्ति मार्ग को प्रधानता देकर पूजन-विधानों की रचना की है। इस विधान में समवसरण की रचना का मंडल बनाकर पूजा करें जिससे साक्षात् समवरण में बैठकर पूजा करने का अनुभव होगा। यह 'समवसरण विधान' सभी के लिए मनोवांछित फल प्रदान करने वाला हो, इसी मंगल भावना के साथ पूज्य माताजी के चरणों में शतशः नमन।

प्रस्तावना

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर (समाधिस्थ)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित अनेक पूजन-विधानों की श्रृंखला में उनकी एक और कृति श्रद्धालु पाठकों के हाथों में पहुँच रही है 'समवसरण विधान'। यह विधान भी सरस-सरल भाषा में विभिन्न छंदों में निबद्ध किया गया है।

इस विधान में कुल 14 पूजाएं हैं, जिनमें प्रथम समुच्चय पूजा है। द्वितीय पूजा में समवसरण में चारों दिशाओं में स्थित मानस्तंभों के जिनप्रतिमाओं की पूजा है। आगे की 8 पूजाओं में वहाँ स्थित 8 भूमियों से संबंधित जिनमंदिरों की पूजाएँ हैं। 11वीं, 12वीं पूजा में अंतिम श्रीमंडपभूमि के आगे स्थित प्रथम कटनी और द्वितीय कटनी की चारों दिशाओं में स्थित धर्मचक्र और महाध्वजाओं की पूजा है। 13वीं पूजा में तृतीय कटनी पर स्थित गंधकुटी की पूजा है।

अंतिम ''तीर्थंकर गुण'' पूजा में 112 अर्घ व 4 पूर्णार्घ्य हैं। इसके पूर्व की पूजाओं में किसी में 96 व किसी में 24 अर्घ्य हैं। इस प्रकार इस विधान में कुल 760 अर्घ्य व 16 पूर्णार्घ्य हैं। अंत में समुच्चय जयमाला दी गई है।

इसमें पूजाओं का क्रम इस प्रकार है–

पूजाएँ	अर्घ्य	पूर्णार्घ्य
1. समुच्चय पूजा	0	0
2. मानस्तंभ पूजा	96	1
3. चैत्यप्रासाद भूमि पूजा	24	1
4. खातिका भूमि पूजा	24	1
5. लता भूमि पूजा	24	1
6. उपवन भूमि पूजा	96	1
7. ध्वजभूमि पूजा	24	1
8. कल्पभूमि पूजा	96	1
9. भवनभूमि पूजा	96	1
10. श्री मंडपभूमि पूजा	24	1
11. प्रथम पीठ पूजा	96	1
12. द्वितीय पीठ पूजा	24	1
13. गंधकुटी पूजा	24	1
14. तीर्थंकर गुण पूजा	46+18+24+24=112	4
	760	16

समवसरण का वर्णन—समवसरण के नाम से प्रायः सभी भक्त श्रावक परिचित हैं। जब तीर्थंकर भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तब सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर अर्धनिमिष मात्र में समवसरण की रचना कर देता है। यह रचना पृथ्वी से 5000 धनुष (20000 हाथ) ऊपर आकाश में निर्मित होती है। जहाँ मनुष्य 20 हजार सीढ़ियों को पार कर पहुँचता है। एक सीढ़ी 1 हाथ की होती है। यह रचना थाली के समान गोलाकार इन्द्रनीलमणि की शिला पर बनती है। इस शिला पर 8 भूमियाँ, 4 कोट और 5 वेदियाँ होती हैं। इसके ठीक मध्य में श्रीमंडप भूमि के आगे तीन कटनियाँ होती हैं। पहली कटनी पर चारों दिशाओं में सर्वाण्हयक्ष धर्मचक्र को लिये होते हैं। दूसरी कटनी पर 8 महाध्वजाएँ होती हैं तथा अंतिम कटनी पर गंधकुटी में तीर्थंकर प्रभु कमलासन पर अधर विराजमान रहते हैं। जिसके ऊपर अशोकवृक्ष लगा रहता है। भगवान के पीछे भामंडल होता है, जिसमें भव्य प्राणी अपने आगे-पीछे के कुल 7 भव देख लेते हैं। भगवान के मस्तक पर तीन छत्र, आजू-बाजू चौंसठ चंवर आदि 8 प्रातिहार्य होते हैं।

समवसरण में क्रम से 8 भूमियाँ इस प्रकार हैं—1. चैत्य प्रासाद भूमि 2. खातिकाभूमि 3. लता भूमि 4. उपवन भूमि 5. ध्वजाभूमि 6. कल्पभूमि 7. भवनभूमि और 8. श्रीमंडपभूमि।

अंतिम श्रीमंडपभूमि में ही 12 सभाएँ लगती हैं, जिनमें भव्यजीव बैठकर भगवान की दिव्यध्वनि सुनकर धर्मोपदेश ग्रहण करते हैं। इन कोठों में बैठने का क्रम इस प्रकार है—

1. पहले कोठे में गणधर आदि मुनिगण 2. कल्पवासिनी देवियाँ 3. आर्यिकाएँ और श्राविकाएँ 4. ज्योतिषी देवियाँ 5. व्यंतर देवियाँ 6. भवनवासी देवियाँ 7. भवनवासी देव 8. व्यंतर देव 9. ज्योतिषी देव 10. कल्पवासी देव 11. चक्रवर्ती आदि मनुष्य 12. तिर्यंच पशु-पक्षी आदि बैठते हैं।

समवसरण में सबसे बाहर धूलिसाल कोट होता है, जो पंचवर्णी रत्नों से चमकता हुआ गोल होता है। यह तीर्थंकर की ऊँचाई से चौगुना ऊँचा होता है। इसके 4 गोपुर द्वार होते हैं-विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित।

भगवान ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यंत 24 तीर्थंकरों के समवसरण का विस्तार अलग-अलग है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का समवसरण 12 योजन अर्थात् 96 मील का था, जो आगे-आगे घटते क्रम में भगवान महावीर का 1 योजन अर्थात् 8 मील का रह गया था। प्रत्येक समवसरण में मानस्तंभों की ऊँचाई भगवान की ऊँचाई से 12 गुनी ऊँची होती है। इस मानस्तंभ का दर्शन करते ही मानी का मान गलित हो जाता है। सम्यग्दृष्टि भव्यजीव ही प्रभु के समवसरण में प्रवेश कर सकते हैं। मिथ्यादृष्टि नहीं जा सकते। समवसरण की यह विशेषता होती है कि अंधे,

लूले, लंगडे सभी क्रम से 20 हजार सीढ़ी पार कर ऊपर पहुँच जाते हैं और पूर्ण निरोगी हो जाते हैं। तीनों लोकों में समवसरण के समान बहिरंग लक्ष्मी युत वैभव और कहीं नहीं होता है। यह सब तीर्थंकर प्रकृति के पुण्य का ही प्रभाव है।

तिलोयपण्णत्ति महाग्रंथ में विस्तार से समवसरण का वर्णन है, जिसका स्वाध्याय कर इसके बारे में जानना चाहिए।

विधान में छंदों का प्रयोग—इस विधान में पूज्य माताजी ने 23 प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है। जिनके नाम हैं-गीता छंद, रोला छंद, चौबोल छंद, शंभु छंद, पद्धड़ी छंद, स्रग्विणी छंद, नरेन्द्र छंद, सखी छंद, वसंततिलका छंद, घत्ता छंद, भुजंगप्रयत छंद, चामर छंद, दोहा, मोतीदाम छंद, नाराच छंद, सोरठा, अनंगशेखर छंद, त्रिभंगी छंद, चौपाई, अडिल्ल छंद, तोटक छंद, शेर छंद, नंदीश्वर पूजा की छंद।

पूजन की प्रत्येक पंक्ति में सुन्दर-सुन्दर भाव भरे हैं—पूज्य माताजी रचित प्रत्येक पूजा में उसकी एक-एक पंक्ति जनमानस को प्रेरणा प्रदान करती है। ऐसा भाव उन पंक्तियों में भरा है कि हर भक्त उसमें निमग्न होकर प्रभु भक्ति की गंगा में स्नान करने लगता है।

समवसरण विधान की प्रत्येक पूजा की जयमाला में माताजी ने समवसरण का पूरा वर्णन ही उधृत कर दिया है, जिससे पूजा के साथ-साथ स्वाध्याय भी हो जाता है। इस विधान की अंतिम पूजा में तीर्थंकर भगवान के 46 गुणों का वर्णन किया है। वे 18 दोषों से रहित होते हैं। फिर भी तीर्थंकर भगवान में अनंतगुण होते हैं,जिनका वर्णन करना कठिन है, यही भाव पूज्य माताजी ने संजोते हुए लिखा है—

तीर्थंकर के गुणमणि अनंत, नहिं गणधर भी कह सकते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनके मन पंकज खिलते हैं।।
मैं भी प्रभु आप कीर्ति सुनकर, अब चरण-शरण में आया हूँ।
अब जो कर्तव्य आपका हो, वह कीजे मैं अकुलाया हूँ।।

विधान की जाप्य मंत्र—इस विधान में निम्न मंत्र के जाप्य का संकल्प कर अधिक से अधिक जाप करनी चाहिए।

1. ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सकलगुणकरण्डाय श्रीसर्वज्ञाय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

अथवा इस मंत्र का अनुष्ठान भी कर सकते हैं।

2. ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

भक्ति से मनोरथ सफल हो जाते हैं—पूज्य माताजी ने अनेक विधानों की रचना की, जिनके माध्यम से भगवान की भक्ति करके सभी अपने मनोवांछित फल की प्राप्ति करते हैं। उसी श्रृंखला में भक्तों के आग्रह पर पूज्य माताजी ने समवसरण विधान की रचना की। इस विधान में विभिन्न रंगों की रंगोली से समवसरण का मण्डल

बनाना चाहिए। मध्य में तीन कटनी से युक्त सुंदर गंधकुटी रखकर उसमें चारों दिशाओं में चार प्रतिमाएँ विराजमान करनी चाहिए। जो चतुर्मुखी प्रतिमा का प्रतीक होती हैं। क्योंकि जब तीर्थंकर भगवान साक्षात् समवसरण में विराजमान होते हैं तो उनका मुख पूर्व या उत्तर दिशा में होता है किन्तु केवलज्ञान के अतिशय से 12 सभाओं में बैठे सभी जीवों को भगवान का मुख अपनी ओर दिखता है।

इस समवसरण विधान में 24 तीर्थंकरों की आराधना की गई है। जैनधर्म में यद्यपि ईश्वर को पूर्ण वीतरागी माना है, वे किसी को सुख-दुःख नहीं प्रदान करते। फिर भी भावों से की गई भगवान की भक्ति से स्वयं पापकर्म नष्ट होते हैं और पुण्य का बंध होता है। फलस्वरूप कार्यों की सिद्धि होती है। यह समवसरण विधान भी समस्त सुखों को प्रदानकर मनोवंछितफल प्रदान करे यही मंगल भावना है।

-मार्च 2006

समवसरण विधान का नक्शा

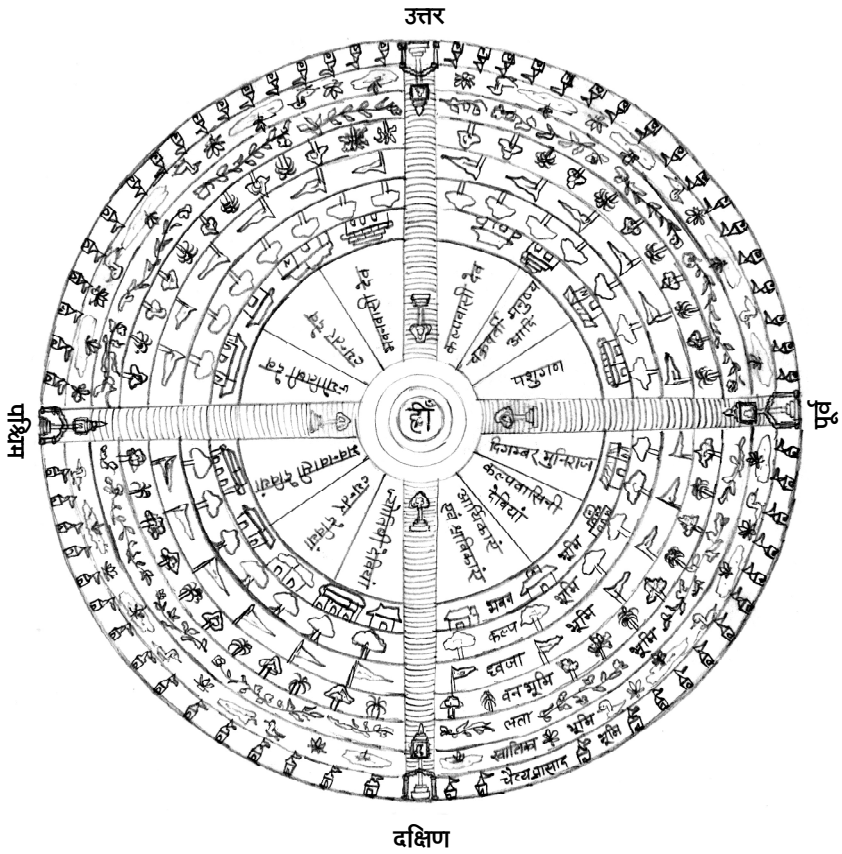

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान-टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि-आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)
जाति-अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**-गोयल, **नाम**-कु. मैना
माता-पिता-श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत-ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
क्षुल्लिका दीक्षा-चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम- क्षुल्लिका वीरमती
आर्यिका दीक्षा-वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व-अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।
डी.लिट्. की मानद उपाधि-सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।
तीर्थ निर्माण प्रेरणा-हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।
महोत्सव प्रेरणा-पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**
शैक्षणिक प्रेरणा-'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।
रथ प्रवर्तन प्रेरणा-जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन कियेजाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, रीबाबावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

विषयानुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	पूजा नं.	पृष्ठ
1.	वंदना		1
2.	समवसरण पूजा (समुच्चय)	1	5
3.	मानस्तंभपूजा	2	10
4.	चैत्यप्रासाद भूमि पूजा	3	31
5.	खातिका भूमि पूजा	4	39
6.	लता भूमि पूजा	5	46
7.	उपवन भूमि पूजा	6	53
8.	ध्वज भूमि पूजा	7	77
9.	कल्पवृक्ष भूमि पूजा	8	84
10.	सातवीं भवन भूमि पूजा	9	109
11.	आठवीं श्री मंडप भूमि पूजा	10	128
12.	प्रथम पीठ पूजा	11	137
13.	द्वितीय पीठ पूजा	12	157
14.	गंधकुटी पूजा	13	166
15.	तीर्थंकर गुण पूजा	14	175
16.	बड़ी जयमाला	15	201
17.	प्रशस्ति		205
18.	समवसरण की आरती		206
19.	भजन		207
20.	श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन		208

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हों।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

–दोहा –

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री समवसरण विधान

(मंगलाचरण)

– दोहा –

समवसरण में राजते, तीर्थंकर भगवंत।
नमूँ अनंतो बार मैं, पाऊँ सौख्य अनंत।।1।।

– शंभु छंद –

कैवल्य सूर्य के उगते ही, प्रभु समवसरण गगनांगण में।
पृथ्वी से बीस हजार हाथ, ऊपर पहुँचे अर्हंत बनें।।
सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से, तत्क्षण ही धनपति आ करके।
बस अर्धनिमिष में समवसरण, रच देता दिव की संपति से।।2।।

सौधर्म इन्द्र इंद्राणी सह, ऐरावत गज पर आते हैं।
सब शेष प्रमुख बत्तीस इंद्र निज-निज वाहन चढ़ आते हैं।।
आगे-आगे किल्विषिक देव, चल रहे नगाड़े बजा रहे।
फिर इन्द्रराज सामानिक त्रायस्त्रिंश पारिषद देव रहें।।3।।

सुर आत्म रक्ष अरु लोकपाल, पुनरपि सेना के देव चलें।
नंतर प्राकीर्णक देव निजी, परिकर ले वाहन बैठ चलें।।
अप्सरियां नृत्य करें, उस क्षण गंधर्व बजाते बाजे हैं।
किन्नरियाँ गातीं प्रभु के गुण, सुरगण जय जय ध्वनि करते हैं।।4।।

सुरपति आज्ञा से चउ निकाय के देव सपरिकर आते हैं।
अच्युत स्वर्गों तक के इन्द्रादिक देव सपरिकर आते हैं।।
आकाश व्याप्त कर असंख्यात सुर मध्यलोक में आते हैं।
प्रभु समवसरण को देख दूर से नमते शीश झुकाते हैं।।5।।

प्रभु समवसरण वैभव देखें, अतिशय विस्मित हो जाते हैं।
टिमकार रहित हो बार-बार दर्शन करते हर्षाते हैं।।
निज जन्म सफल करते सुरगण, अतिशय आनंद मनाते है।
क्रम से वंदन पूजन करते, तीर्थंकर सन्निध्य आते हैं।।6।।

त्रय प्रदक्षिणा देते प्रभु का, वंदन कर पूजन करते हैं।
बहु विध स्तोत्र पढ़ें स्वर से, अतिशय पुण्यार्जन करते हैं।।
फिर निज-निज कोठों में बैठे, प्रभु दिव्यध्वनी को सुनते हैं।
जिनवच अमृत पी तृप्त हुए, सम्यग्दर्शन निधि लभते हैं।।7।।

– नरेन्द्र छंद –

तीर्थंकर की धर्मसभा में अतिशय लक्ष्मी शोभे।
त्रिभुवन का अतिशायी वैभव, सुर नर खग मन लोभे।।
तीर्थंकर की अंतर लक्ष्मी, ज्ञान दर्श सुख वीरज।
इनसे युत चौबीसों जिनवर, यहाँ पूज्य हैं नीरज।।8।।

इस विधान में समवसरण ही पूज्य बना अतिशायी।
इसकी पूजा नर नारी को समविध है सुखदायी।।
इस भव में धन धान्य संपदा, यश सुख संतति देती।
परभव में इंद्रादि संपदा, चक्रीपद भी देती।।9।।

जिनपूजा है अमोघ शक्ती, निश्चित ही फलती है।
सांसारिक अभ्युदय सभी दे, त्रिभुवन वश करती है।।
आध्यात्मिक पीयूष पिलाकर, परमानंद सुख देती।
जन्म जन्म का भ्रमण मिटाकर, सिद्धि संपदा देती।।10।।

– दोहा –

गणधर मुनिगण आर्यिका, नमें नमें नतशीश।
मैं भी श्रद्धा से नमूँ, अंजलि पर धर शीश।।11।।

अथ समवसरणपूजायज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौबीस तीर्थंकर स्तुतिः

(अनुष्टुप् छंद)

पुरुदेव! नमस्तुभ्यं, युगादिपुरुषाय ते।
इक्ष्वाकुवंशसूर्याय, वृषभाय नमो नमः।।1।।

नमस्तेऽजितनाथाय, कर्मशत्रुजयाय ते।
अजयेशक्ति-लाभार्थ-मजिताय नमो नमः।।2।।

भवसंभवदुःखार्त्ति-नाशिने परमेष्ठिने।
नमो संभवनाथाया-नंत विभवलब्धये।।3।।

गुणसमृद्धियुक्ताय, जिनचंद्राय ते नमः।
अभिनंदनदेवाय, नमः स्वगुणवृद्धये।।4।।

ध्वस्तकुमतिदेवाय, जन्ममृत्युप्रमाथिने।
नमो सुमतिनाथाय, सुष्ठुमतिप्रदायिने।।5।।

मुक्तिपद्मासुकांताय, पद्मवर्ण! नमोस्तु ते।
पद्मप्रभजिनेशाय, जिनलक्ष्म्यै नमो नमः।।6।।

भवपाशच्छिदे तुभ्यं, श्रीसुपार्श्व! नमो नमः।
संसृतिपार्श्वदूराय, मुक्तिपार्श्वविधायिने।।7।।

वागमृतकरैर्भव्य-पोषिणे जिनचंद्र! ते।
नमो नमोऽस्तु चन्द्राय, सर्वसंतापहानये।।8।।

पुष्पदंतजिनेंद्राय, पुष्पवाणच्छिदे नमः।
तुष्टिपुष्टिप्रदातस्ते, स्वात्मपुष्ट्यै नमो नमः।।9।।

शीतलेश! नमस्तुभ्यं, वचस्ते सर्वतापहृत्।
श्रीमत्शीतलनाथाय, शीतीभूताय देहिनाम्।।10।।

श्रेयस्करो जगत्यस्मिन्, श्री श्रेयन्! ते नमो नमः।
अन्वर्थनामधृत् देव! श्रेयो मे कुरुतात् सदा।।11।।

वासुपूज्यो जगत्पूज्यः, पूज्यपूजातिदूरगः।
पूज्यो जनः प्रसादात्ते, भवेत्तुभ्यं नमो नमः।।12।।

कर्ममलविनिर्मुक्तो, विमलाय नमो नमः।
तव नामस्मृतिर्लोकं, नैर्मल्यं कुरुते क्षणात्।।13।।

अनंतनाथ! दृग्ज्ञान-वीर्यसौख्यैरनन्तगः।
अनंतसौख्यलाभाय, भक्त्या तुभ्यं नमो नमः।।14।।

नमोऽस्तु धर्मनाथाय, धर्मतीर्थंकराय ते।
धर्मचक्रेश! मे नित्यं, धर्म्यध्यानं विधीयताम्।।15।।

स्वकर्मक्षयतः शांतिं, लब्ध्वा शांतिकरोऽभवत्।
शांतिनाथ! नमस्तुभ्यं, मनःक्लेशप्रशांतये।।16।।

अहिंसां कुंथुजीवेषु, कृत्वा कुंथुजिनोऽभवत्।
रक्षां विधेहि मे नित्यं, कुंथुनाथ! नमोऽस्तु ते।।17।।

जगत्त्रयविभुर्सूर्यो, मोहान्धकारहृज्जिनः।
हंताप्यरेर्नमस्तुभ्य-मरनाथ! नमो नमः।।18।।

कर्ममल्लभिदे तुभ्यं, मल्लिनाथ! नमो नमः।
स्वमोहमलनाशाय, भववल्लिभिदे नमः।।19।।

महाव्रतधरो धीरः, सुव्रतो मुनिसुव्रतः।
नमस्तुभ्यं तनुतान्मे, रत्नत्रयस्य पूर्णताम्।।20।।

सर्वसंगविरक्तः सन्, मुक्तिश्रीरक्तमानसः।
नमिनाथ! नमस्तुभ्यं, मह्यं मुक्तिश्रियं दिश।।21।।

राजीमतीं परित्यज्य, महादयार्द्रमानसः।
लेभे सिद्धिवधूं सिद्ध्यै, नेमिनाथ! नमोऽस्तु ते।।22।।

सर्वंसहो जिनः पार्श्वो, दैत्यारिमदमर्दकः।
सहिष्णुतां प्रपुष्यान्मे, नित्यं तुभ्यं नमो नमः।।23।।

वर्धमानो महावीरो-ऽतिवीरो सन्मतिर्जिनः।
वीरनाथो नमस्तुभ्यं, सन्मतिं वितनोतु मे।।24।।

चतुर्विंशतितीर्थेशान्, त्रिसंध्यं स्तौति यो नरः।
प्राप्नोति स त्वरं लक्ष्मीं, ज्ञानमत्या समन्विताम्।।25।।

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।26।।

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।27।।

–शार्दूल विक्रीडित छंद (संस्कृत)–

या कैवल्यविभा निहन्ति भविनां ध्वान्तं मनःस्थ महत्।
सा ज्योतिःप्रकटीक्रियात् मम मनो-मोहन्धकारं हरेत्।।
या आश्रित्य वसन्ति द्वादशगणा वाणीसुधापायिनः।
तास्तीर्थेशसभा अनन्तसुखदाः कुर्वनतु नो मंगलम्।।28।।

अथ समवसरणमण्डपान्तः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री समवसरण विधान

(पूजा नं.1)

समवसरण पूजा

(समुच्चय पूजा)

–अथ स्थापना –गीता छंद –

तीर्थंकरों की सभाभूमी, धनपती रचना करें।
है समवसरण सुनाम उसका, वह अतुलवैभव धरे।।
जो घातिया को घातते, कैवल्यज्ञान विकासते।
वे इस सभा के मध्य अधर, सुगंधकुटि पर राजते।।1।।

–दोहा –

अनंत चतुष्टय के धनी, तीर्थंकर चौबीस।
आह्वानन कर मैं जजूँ, नमूँ नमूँ नत शीश।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंरकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –चाल-नंदीश्वर पूजा

जिनवचसम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि तीर, जिन पद धार करूँ।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तनु सम सुरभित गंध, कंचन पात्र भरूँ।
मैं चर्चूं जिनपद पद्म, भव संताप हरूँ।।जिन.।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनध्वनि सम अमल अखंड, तंदुल थाल भरूँ।
मैं पुँज धरूँ जिन अग्र, सौख्य अखंड भरूँ।।जिन.।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन यश सम सुरभित पुष्प, चुनचुन कर लाऊँ।
जिन आगे पुष्प समर्प्य, निजके गुण पाऊँ।।जिन.।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वच अमृत के पिंड, सदृश चरु लाऊँ।
जिनवर के निकट चढ़ाय, समरस सुख पाऊँ।।जिन.।।5।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तनु की कांति समान, दीपक ज्योति धरे।
मैं करूँ आरती नाथ, मम सब आर्त हरे।।जिन.।।6।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन यश सम सुरभित धूप, खेऊँ अग्नी में।
हो अशुभ कर्म सब भस्म, पाऊँ निज सुख मैं।।जिन.।।7।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

जिनवच सम मधुर रसाल, श्रीफल फल बहुते।
जिन निकट चढ़ाऊँ आज, अतिशय भक्तियुते।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।8।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि मिलाय, अर्घ बनाय लिया।
निज पद अनर्घ के हेतु, आप चढ़ाय दिया। जिन.।।9।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
आत्यंतिक शांती मिले, प्रगटे सौख्य अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल श्वेत पीतादि बहु, सुरभित पुष्प गुलाब।
पुष्पांजलि से पूजते, हो निजात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

चिन्मय चिंतामणि प्रभो, गुण अनंत की खान।
समवसरण वैभव सकल, वह लवमात्र समान।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, तुम धर्म चक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंतदर्शन सुज्ञान, सुखवीर्य चतुष्टय भर्त्ता हो।।
जय जय अनंत गुण के धारी प्रभु तुम उपदेश सभा न्यारी।
सुरपति की आज्ञा से धनपति रचता है त्रिभुवन मनहारी।।2।।
प्रभु समवसरण गगनांगण में, बस अधर बना महिमाशाली।
यह इन्द्र नीलमणि रचित गोल आकार बना गुणमणिमाली।।

सीढ़ी इक एक हाथ ऊँची, चौड़ी सब बीस हजार बनी।
नर बाल वृद्ध लूले लंगड़े चढ़ जाते सब अतिशायि घनी।।3।।
पहला परकोटा धूलिसाल, बहुवर्ण रत्न निर्मित सुंदर।
कहिं पद्मराग कहिं मरकतमणि, कहिं इन्द्रनीलमणि से मनहर।।
इसके अभ्यंतर चारों दिश, हैं मानस्तंभ बने ऊँचे।
ये बारह योजन से दिखते, जिनवर से द्विदश गुणे ऊँचे।।4।।
इनमें चारों दिश जिनप्रतिमा उनको सुरपति नरपति यजते।
ये सार्थक नाम धरें दर्शन से मानो मान गलित करते।।
इस समवसरण में चार कोट अरु पांच वेदिकाएं ऊँची।
इनके अंतर में आठ भूमि फिर प्रभु की गंधकुटी ऊँची।।5।।
इस धूलिसाल अभ्यंतर में है भूमि चैत्य प्रसाद प्रथम।
एकेक जैन मंदिर अंतर से पाँच पाँच प्रासाद सुगम।।
चारों गलियों में उभय तरफ दो दोय नाट्यशालाएं हैं।
अभिनय करतीं जिनगुण गातीं सुर भवनवासि कन्याएं हैं।।6।।
फिर वेदी वेढ़ रही ऊँची गोपुर द्वारों से युक्त वहाँ।
द्वारों पर मंगलद्रव्य निधी ध्वज तोरण घंटा ध्वनी महा।।
फिर आगे खाई स्वच्छ नीर से भरी दूसरी भूमी है।
फूले कुवलय कमलों से युत हंसों के कलरव की ध्वनि है।।7।।
फिर दूजी वेदी के आगे तीजी है लताभूमि सुन्दर।
बहुरंग बिरंगे पुष्प खिले जो पुष्पवृष्टि करते मनहर।।
फिर दूजा कोट बना स्वर्णिम, गोपुर द्वारों से मन हरता।
नवनिधि मंगल घट धूप घटों युत में प्रवेश करती जनता।।8।।
आगे उद्यान भूमि चौथी चारों दिश बने बगीचे हैं।
क्रम से अशोक वन सप्तवर्ण चंपक अरु आम्र तरु के हैं।।
प्रत्येक दिशा में एक-एक तरु चैत्य वृक्ष अतिशय ऊँचे।
इनमें जिन प्रतिमा प्रातिहार्ययुत चार-चार मणिमय दीखें।।9।।
इसके आगे वेदी सुन्दर फिर ध्वजाभूमि ध्वज से शोभे।
फिर रजतवर्णमय परकोटा गोपुर द्वारों से युत शोभे।।

फिर कल्पवृक्ष भूमी छट्ठी दशविध के कल्पवृक्ष इसमें।
प्रतिदिश सिद्धार्थ वृक्ष चारों हैं सिद्धों की प्रतिमा उनमें।।10।।
चौथी वेदी के बाद भवन भूमी सप्तमि के उभय तरफ।
नव नव स्तूप रत्न निर्मित, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखप्रद।।
परकोटा स्फटिकमयी चौथा मरकत मणि गोपुर से सुन्दर।
उस आगे श्रीमंडप भूमी बारह कोठों से जनमनहर।।11।।
फिर पंचम वेदी के आगे त्रय कटनी सुन्दर दिखती हैं।
पहली कटनी पर यक्ष शीश पर धर्मचक्र चारों दिश हैं।।
दूजी कटनी पर आठ महाध्वज नवविधि मंगल द्रव्य धरे।
तीजी कटनी पर गंधकुटी पर जिनवर दर्शन पाप हरें।।12।।
जय जय जिनवर सिंहासन पर चतुरंगुल अधर विराज रहे।
जय जय जिनवरकी दिव्यध्वनी सुनकर सब भविजन तृप्त भये।।
सब जातविरोधी प्राणीगण, आपस में मैत्री भाव धरें।
जो पूजें ध्यावें गुण गावें वे ज्ञानमती कैवल्य करें।।13।।

–दोहा –

चतुर्मुखी ब्रह्मा तुम्हीं, ज्ञान व्याप्त जग विष्णु।
देवों के भी देव हो, महादेव अरि जिष्णु।।14।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.2)

मानस्तंभ पूजा

–अथ स्थापना –नरेन्द्र छंद –

धूलिसाल के अभ्यंतर में चारों दिश वीथी में।
मानस्तंभ रत्नमणि निर्मित शोभें चारों दिश में।।
उनमें चारों दिश जिन प्रतिमा भक्ति भाव से वंदूँ।
आह्वानन कर पूजन करके कर्म शत्रु को खंडूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तंभजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तंभजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तंभजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –नरेन्द्र छंद

नंदा वापी का निर्मल जल, कंचन भृंग भराऊँ।
श्री जिनवर के चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
मानस्तंभ चार दिश में भी, जिन प्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर आठों मद से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।मान.।।2।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल तंदुल ले, तुम ढिग पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित निज आतमपद पाऊँ।।मान.।।3।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की लता भूमि से, सुरभित पुष्प चुनाऊँ।
जिनवर चरण कमल में अर्पूं निजगुण यश विकसाऊँ।।
मानस्तंभ चार दिश में भी, जिन प्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर आठों मद से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते सब दुख व्याधि नशाऊँ।। मान. 5।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञान ज्योति उद्योतन।।मान.।।6।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरु तगर चंदन से मिश्रित धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म को दग्ध करूँ मैं अग्नी संग जलाऊँ।।मान.।।7।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरस फल लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते परमानंद सुख पाऊँ।।मान.।।8।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि आदिक अर्घ बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, तीन रत्न निज पाऊँ।। मान.।।9।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तंभविराजमानजिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पद्म सरोवर नीर से, जिनवर पद अरविंद।
त्रयधारा विधि से करूँ, हो सुख शांति अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधि युत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

जिनवर चरण सरोज, पुष्पांजलि से पूजते।
मिटे सर्व दुख शोक, सुख संपति होवे सदा।।

इति मण्डलस्योपरि मानस्तम्भेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–रोला छंद –

वृषभदेव के समवसरण में चारों दिश में।
वीथी दो दो कोश चौड़ी उन पूरब में।।
मानस्तंभ अपूर्व, चारों दिश जिन प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, होवे सौख्य अनुपमा।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितपूर्वदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में दक्षिण दिश में शोभ रहा है।
मानस्तंभ विचित्र मुनिगण पूज्य कहा है।।
उसमें शिखर समीप चहुँदिश जिनप्रतिमाएँ।
पूजूँ अर्घ समर्प्य अनुपम सौख्य दिलायें।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितदक्षिणदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश की महा, गलि में रत्नविनिर्मित।
मानस्तंभ जिनेश, का मिथ्यात्वी मदहृत्।।उसमें.।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितपश्चिमदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश में तुंग, मानस्तंभ विराजे।
जो वंदें धर प्रीत उनके पातक भाजें।।उसमे.।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितउत्तरदिक्मानस्तम्भ चतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ जिनदेव, समवसरण में राजें।
पूरब दिश में तुंग मानस्तंभ विराजें।।उसमें.।।5।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भ चतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश में श्रेष्ठ मानस्तंभ अपूरब।
बारहगुणा जिनेश, तनु से तुंग रतनप्रभ।।
उसमें शिखर समीप चहुँदिश जिनप्रतिमाएँ।
पूजूँ अर्घ समर्प्य अनुपम सौख्य दिलायें।।6।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भ चतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश में तुंग, मानस्तंभ दिखे हैं।
सुरपति नरपति वंद्य कांतीमान दिपे है।।उसमें.।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भ चतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में उत्तर दिश में महा गली में।
मानस्तंभ सुरत्न मणिमय शोभे जग में।।उसमें.।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भ चतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

श्री संभव जिनराज का, समवसरण जगवंद्य।
मानस्तंभ सुपूर्व दिशि, पूजूँ जिनवर बिंब।।9।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में दक्षिणी, दिश में मानस्तंभ।
अग्रभाग में चहुँ दिशी, पूजूँ जिनवर बिंब।।10।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में अपर दिशि, मानस्तंभ अपूर्व।
शिखरभाग में चहुँ दिशी, पूजूँ जिनवर सूर्य।।11।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशि मुनिनाथनुत, मानस्तंभ महान।
शिखर भाग जिनबिंब को, जजूँ जोड़ जुग पान।।12।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन जिनराज का, समवसरण गुणखान।
पूरब मानस्तंभ को जजूँ, मिले सुखखान।।13।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में दक्षिणी, दिश में मानस्तंभ।
शिखर भाग में चहुँदिशी, पूजूँ जिनवर बिंब।।14।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में अपरदिशि, मानस्तंभ अनिंद्य।
चहुँदिश के जिन बिंब को, पूजूँ सुर नर वंद्य।।15।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में उत्तरी दिश में मानस्तंभ।
चहुँदिश के जिनबिंब को जजूँ हरूँ जग दंभ।।16।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

सुमतिनाथ की सभा अनिंद्य, समवसरण है त्रिभुवनवंद्य।
पूर्वदिशा में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।17।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण सब दुख हरतार, पूजत ही सब भरे भंडार।
दक्षिण दिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।18।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में बारह सभा, मुनिगण गाते जिनगुणकथा।
पश्चिमदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।19।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रनील मणि से बन रही, कमलाकार सभा शुभ कही।
उत्तरदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।20।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभूजिन गुणमणि भरे, उनका समवसरण मन हरे।
पूरबदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।21।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में भूमी आठ, दर्शन से हो मंगल ठाठ।
दक्षिण दिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण सब सुख दातार, पूजत भरते गुण भंडार।
पश्चिमदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।23।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण अभिराम, नितप्रति शतशत करूँ प्रणाम।
उत्तरदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।24।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वजिन त्रिभुवन ईश, समवसरण को नाऊँ शीश।
पूरबदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।25।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में कोट उतुंग, पहरा देते नित सुरवृंद।
दक्षिण दिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।26।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनद रचित जिनसभा अपूर्व, गणधर कहें अंगअरु पूर्व।
पश्चिमदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।27।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में वेदी पाँच, चार कोट भू आठ विभांत।
उत्तरदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।28।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदाप्रभु जिनकी शुभसभा, हरती भक्तजनों की व्यथा।
पूरब दिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।29।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण का नाम पवित्र, करता शत्रुगणों को मित्र।
दक्षिणदिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।30।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण भवदधि का कूल, पूजत ही सब हों अनुकूल।
पश्चिम दिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।31।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण जगवंद्य, वहाँ रहें सुरनर पशु वृन्द।
उत्तर दिश में मानस्तंभ, जजूँ चतुर्दिश के जिनबिंब।।32।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पद्धड़ी छंद –

श्री पुष्पदंत का समवसर्ण, वंदन से नशता जन्ममर्ण।
पूरबदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।33।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में गली चार, सीढ़ी उनमें बीसहिं हजार।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण में मुनि वसंत, जिन धुनि सुन करते कर्म अन्त।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।35।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण रचता कुबेर, बस अर्ध निमिष नहिं लगे देर।
उत्तर दिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनका जो समवसर्ण, सब भव्यों को दे रहा शर्ण।
पूरबदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।37।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस समवसरण में तीर्थनाथ, करते सब भक्तों को सनाथ।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।38।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो समवसरण में तरु अशोक, भव्यों का हरता सर्व शोक।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।39।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल की धुनि शीतल करंत, भवताप हरे मंगल भरंत।
उत्तर दिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।40।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ का समवसर्ण, गणधर मुनिगण भी लेय शर्ण।
पूरबदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।41।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में प्रातिहार्य, भक्तों के पूरण करें कार्य।
दक्षिणदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।42।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामंडल छवि का अतिप्रकाश, लजते करोड़ सूरज प्रकाश।
पश्चिमदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।43।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पुष्पवृष्टि निशिदिन करंत, जय जय ध्वनि करते हर्षवंत।
उत्तरदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।44।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवासुपूज्य सुरवृन्द पूज्य, उन समवसरण अतिशय विशुद्ध।
पूरबदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।45।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ऊपर चौंसठ चमर स्वच्छ, ढोरें नित चौंसठ देवयक्ष।
दक्षिणदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।46।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन रत्नजड़ा विचित्र, नित अधर विराजे जिनपवित्र।
पश्चिमदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।47।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाजे साढ़े बारह करोड़, दुंदुभि बाजे बजते अजोड़।
उत्तरदिशि मानस्तंभ एक, जिन प्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।48।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद –

जिन विमलनाथ का समवसरण, है अमल अखंड सौख्यदाता।
उसमें नवनिधियाँ भरी पड़ीं, बहु वैभव कोई न कह पाता।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, पूरब दिश मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।49।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण में धूप घंटों में सुरगण धूप खेवते हैं।
सुरभित चारों दिशि धुआँ उड़े, भवि जिनपद कंज सेवते हैं।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, दक्षिण दिशि मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।50।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण में गोपुर के दोनों, तरफी नाटक शाला।
वहाँ देव अप्सरा नृत्य करें, गावें नित प्रति जिन गुणमाला।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, पश्चिम में मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।51।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभों के चारों दिश, वापी के सन्निध कुंड बने।
उनमें जन पैर धूलि धोकर, अन्दर प्रवेश कर पाप हने।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, उत्तर दिश मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।52।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनंत का समवसरण, दर्शन से अंतक[1] भय हरता।
जिनगुण अनंत प्रगटित करके, भव्यों के गुण विकसित करता।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, पूरब दिश मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में आठ द्रव्य, मंगलमय बहुत जगह रहते।
दर्शक जन का मंगल करते, चहुँदिशी अमंगल को हरते।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, दक्षिण दिश मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।54।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो समवसरण में जिन दर्शन करते वे भव्य कहाते हैं।
वे निश्चित ही उस भव या कुछ, भव लेकर शिव श्री पाते हैं।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, पश्चिम दिश मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।55।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में मिथ्यात्वी, अभिमानी क्षुद्र न जा सकते।
जो सम्यग्दृष्टी होते हैं वे, ही जिनवर दर्शन करते।।

1. मृत्यु का।

जिनवर से बारह गुणा तुंग, उत्तर दिश मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।56।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ के समवसरण में ध्वनि खिरती नित[1] चार बार।
वह धर्मामृत बरसा करके, भव्यों को तृप्त करे अपार।।
गणधर व इंद्र चक्रेश्वर के प्रश्नों से अन्य समय खिरती।
पूरब दिश मानस्तंभ जजूँ, जिन पूजा सब इच्छित फलती।।57।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण में गणधर मुनि, जिनवर ध्वनि का विस्तार करें।
फिर द्वादशांग में गूंथ गूंथ, कहते मुनिगण कंठाग्र करें।।
जिन वचनामृत को पी पीकर द्वादश गण को शांती मिलती।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिन पूजा मन वाञ्छित फलती।।58।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण की वापी के, जल में भवि निजभव देखे हैं।
भामंडल में निज सात भवों, को देख भवों से छूटे हैं।।
जिन वचनामृत को पी पीकर, भव्यों को सुख शांती मिलती।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिन पूजा मन वाञ्छित फलती।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण अद्भुत रचना, इन्द्राज्ञा से धनपति रचता।
वहं मानस्तंभ के दर्शन से, अभिमानी का सब मद गलता।।
जिनवर सन्निध का ही प्रभाव, अन मानस्तंभ में नहिं शक्ती।
उत्तर दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिन पूजा मन वाञ्छित फलती।।60।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अर्ध रात्रि में भी खिरती है ऐसा किन्हीं ग्रंथों में है।

श्री शांतिनाथ का समवसरण, भक्तों की भव भव दाह हरे।
जिननाम मंत्र भी भव्यों को, आत्यंतिक शांति प्रदान करे।।
जो समवसरण की भक्ति करें, उनकी सब बाधायें टलतीं।
पूरब दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिन पूजा मन वाञ्छित फलती।।61।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण का ही प्रभाव, सौ-सौ योजन दुर्भिक्ष टले।
सब ईति भीति मारी संकट, नहिं होवे जहँ जिनराज चलें।।
सब ऋतु के भी फलफूलफलें, असमय में भी कलियाँ खिलतीं।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिन पूजा मन वाञ्छित फलती।।62।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस मारग से हो श्रीविहार[1], वहाँ बहुत दिनों तक शांति रहे।
नहिं कष्ट उपद्रव दुर्घटना, सब रोग शोक दुःख शांत रहे।।
सब क्रूर मनुजगण पशुगण के, भी आपस में मैत्री बनती।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिन पूजा मन वाञ्छित फलती।।63।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन संनिध में सौधर्म इन्द्र, किंकर बन जिन आज्ञा पाले।
जहँ जहँ प्रभु का हो श्रीविहार, वह शीघ्र व्यवस्था कर डाले।।
इससे वह इक ही भव धरता, जिन भक्ती है अमोघ[2] शक्ती।
उत्तर दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिन पूजा मन वाञ्छित फलती।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद –

श्री कुंथुनाथ जिनवर का, है समवसरण अतिनीका।
मानस्तंभ पूरब दिश में, पूजूँ जिनप्रतिमा नित मैं।।65।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अरहन्तदेव का विहार। 2. हरिवंश पुराण में। 3. जो कभी व्यर्थ नहीं जाती[3]

जिनसमवसरण अति सुन्दर, नित भक्ती करें पुरन्दर[1]।
मानस्तंभ दक्षिण दिश में, पूजूँ जिनप्रतिमा नित मैं।।66।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण की महिमा, गणधर मुनि गाते गरिमा।
मानस्तंभ पश्चिम दिश में, पूजूँ जिनप्रतिमा नित मैं।।67।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण अतिशायी, गुण गावें मन हरषायी।
मानस्तंभ उत्तर दिश में, पूजूँ जिनप्रतिमा नित मैं।।68।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरनाथ अरी को नाशा, निज केवलज्ञान प्रकाशा।
उन समवसरण पूरब में, शुभ मानस्तंभ जजूँ मैं।।69।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण में आवो, अतिशायी पुण्य कमाओ।
वीथी में दक्षिण दिश में, शुभ मानस्तंभ जजूँ मैं।।70।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन को शरण प्रदाता, जिन समवसरण सुखदाता।
अति सुन्दर पश्चिम दिशि में, शुभ मानस्तंभ जजूँ मैं।।71।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं समवसरण में बाधा, नहिं निद्रा प्यास न क्षूधा।
अतिशयकर उत्तर दिश में, शुभ मानस्तंभ जजूँ मैं।।72।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. इन्द्र।

श्री मल्लिनाथ भवविजयी, उन समवसरण सुख प्रदयी।
पूरब दिशि मानस्तंभ में, जिन प्रतिमा पूजूँ नित मैं।।73।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण भव अंतक, पूजक होते दुख वंचक।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ में, जिनप्रतिमा पूजूँ नित मैं।।74।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेश सभा जिनवर की, है गोल चतुर्मुख जिनकी।
पश्चिम दिश मानस्तंभ में, जिनप्रतिमा पूजूँ नित मैं।।75।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो काम मोह यम विजयी, वे मल्लिनाथ भवविजयी।
उत्तर दिश मानस्तंभ में, जिनप्रतिमा पूजूँ नित मैं।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिनवर व्रतधर, उन समवसरण सब दुखहर।
अपूरब पूरब दिशि में, जिन मानस्तंभ जजूँ मैं।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण अभिरामा, सब भक्त लहें निजधामा।
दक्षिण दिश की वीथी में, निज मानस्तंभ जजूँ मैं।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण की शोभा, देवों का भी मन लोभा।
पश्चिम दिश की वीथी में, जिन मानस्तंभ जजूँ मैं।।79।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण अतिशयभृत, सब रिद्धि सिद्धि नवनिधिकृत।
उत्तर दिश की वीथी में, जिन मानस्तंभ जजूँ मैं।।80।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

नमिजिन जग परमेश, समवसरण अतिशय घना।
पूजूँ भक्ति समेत, पूरब मानस्तंभ को।।81।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदधि तारन सेतु, समवसरण अतिरम्य है।
पूजूँ भक्ति समेत, दक्षिण मानस्तंभ को।।82।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शक जन सुखहेत, समवसरण जिनराज का।
पूजूँ भक्ति समेत, पश्चिम मानस्तंभ को।।83।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सींचे भविजन खेत, जिनवच जल वर्षा करें।
पूजूँ भक्ति समेत, उत्तर मानस्तंभ को।।84।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीनाथ जिनेश, समवसरण धनपति रचा।
पूजूँ भक्ति समेत, पूरब मानस्तंभ को।।85।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन आनंद हेत, राजमती आर्या वहाँ।
पूजूँ भक्ति समेत, दक्षिण मानस्तंभ को।।86।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर वंदन हेत, समवसरण शोभे अती।
पूजूँ भक्ति समेत, पश्चिम मानस्तंभ को।।87।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरनर पावन हेतु, समवसरण अतिशुद्ध है।
पूजूँ भक्ति समेत, उत्तर मानस्तंभ को।।88।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

पार्श्वनाथ ने कमठ उपद्रव, जीत घाति अरि नाशा।
पद्मावति धरणेंद्र देव ने, सब उपसर्ग विनाशा।।
केवलज्ञान सूर्य के उगते, समवसरण क्षण भर में।
मानस्तंभ पूर्वदिश का मैं, पूजूँ रुचि धर मन में।।81।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाशील प्रभु महामना हो, बहु उपसर्ग सहा है।
संकट मोचन अतः भव्य के, ऋषि ने यही कहा है।।
पद्मावति शासन देवी का, मान बढ़ा इस युग में।
मानस्तंभ दक्षिणी दिश का, पूजूँ रुचि धर मन में।।90।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की शोभा न्यारी, जगह-जगह बावड़ियां।
लाल सफेद कमल खिलते लख, खिल जाती मन कलियां।।
केवलज्ञान सूर्य किरणों से, है प्रकाश त्रिभुवन में।
मानस्तंभ पश्चिमी दिश का, पूजूँ रुचि धर मन में।।91।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. देखते ही।

समवसरण में लताभूमि, उपवन में फूल खिले हैं।
जातविरोधी क्रूर पशू, आपस में गले मिले हैं।।
नाम मंत्र प्रभु का जपते, अरि बने मित्र क्षण भर में।
मानस्तंभ उत्तरी दिश का, पूजूँ रुचि धर मन में।।92।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितउत्तरीदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पचीस सौ ब्यालीस[1] वर्ष पूर्व, विपुलाचल पर्वत पर।
महावीर का समवसरण था, बना यहाँ अति मनहर।।
भरत क्षेत्र में आज उन्हीं का, शासन इस धरती पर।
मानस्तंभ पूर्व दिश का मैं, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।93।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर अतिवीर वीर प्रभु, वर्द्धमान जिन सन्मति।
पांच नाम से आप प्रथित हैं, दीजे मुझको सन्मति।।
समवसरण में आप विराजें, द्वादश गण के ईश्वर।
मानस्तंभ दक्षिणी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।94।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बासठ दिन तक खिरी नहीं ध्वनि, सब सौधर्म सुरेश्वर।
इन्द्रभूति गौतम को लाया, वे ही हुए गणेश्वर।।
समवसरण में तब जन तर्पित, किया धर्म वर्षा कर।
मानस्तंभ पश्चिमी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।95।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जब इस विधान को बनाया तब वीर नि. सं. 2512 था। महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर 12 वर्ष तपश्चरण किया था अनंतर केवलज्ञानी 30 वर्ष तक रहे थे। अतः 30+2512=2542 वर्ष पूर्व उन्हें केवलज्ञान हुआ था।

समवसरण की महिमा न्यारी, कह न सके शारद माँ।
लोकोत्तर सम्पत्ति वहाँ पर, लोकोत्तर ही गरिमा।।
ऐसे समवसरण का दर्शन, शीघ्र मिले यह दो वर।
मानस्तंभ उत्तरी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।96।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

चौबीसों तीर्थंकर जिनके, समवसरण में होते।
मानस्तंभ सु चार चार ही, मान पंक को धोते।।
गणधर मुनि गण सुरपति नरपति, खगपति वंदन करते।
मैं पूजूँ पूर्णार्घ चढ़ाकर, पुण्य पूर्ण ये करते।।97।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितषण्णवतिमानस्तंभसर्वजिन-प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

परमहंस परमात्मा, परमानंद स्वरूप।
गाऊँ तुम गुणमालिका, अजर अमर पद रूप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय मानस्तंभ चउदिश के, जय जय उन सबकी जिनप्रतिमा।
जय जय मानी का मान हरे, जय सार्थक नाम धरी महिमा।।
प्रत्येक जिनेश्वर ऊँचाई, से बारह गुणे कहे ऊँचे।
ये योजन बीस करें प्रकाश, बारह योजन से ही दीखें।।2।।
इनको घेरे हैं तीन कोट, जो चउ गोपुर द्वारों से युत।
इन कोट अभ्यंतर बावड़ियाँ उद्यान देवगण से संयुत।।

इन मध्य चतुर्दिक् सोम व यम अरु वरुण कुबेर जु लोकपाल।
इनके आवास बने सुन्दर, उनमें रमते ये पुण्यशालि।।3।।

बीचों बिच कटनी तीन कही, वैडूर्य सुवर्ण सु रत्नमयी।
द्वय कटनी पर पूजन सु द्रव्य अठ मंगल द्रव्य ध्वजादि सही।।
तीजी पर मानस्तंभ खड़े ये मूल भाग में वज्रमयी।
सर्वत्र फटिक मणि के सुन्दर, ऊपर में हैं वैडूर्यमयी।।4।।

ये मूलभाग में चतुष्कोण, ऊपर तक गोल बने सुन्दर।
इनमें पहलू[1] हैं दो हजार जिनकी है चमक बहुत मनहर।।
ऊपर में छत्र चंवर घंटा, किंकिणियां रत्नहार शोभें।
चारों दिश आठ सु प्रातिहार्य, अद्भुत शिखरों से अति शोभें।।5।।

चारों दिश जिन प्रतिमाएं हैं, जिनके वंदन से पाप टरें।
क्षीरोदधि से जल ला करके, सब सुरगण मिल अभिषेक करें।।
चंदन अक्षत पुष्पादि लिये, सुर नर गण पूजा करते हैं।
सम्यग्दृष्टी बहुभक्ति लिये, जिनगुण स्तवन उचरते हैं।।6।।

पूरब मानस्तंभ के चउदिश, नंदोत्तर नंदा नंदमिती।
नंदीघोषा बावड़ियाँ, कमलों कुमुदों से गंधवती।।
दक्षिण मानस्तंभ चउदिश में, बावड़ियाँ नीर पवित्र भरी।
विजया व वैजयंता रु जयंता, अपराजिता सुनाम धरी।।7।।

पश्चिम मानस्तंभ चारों दिश, बावड़ी अशोका सुप्रबुद्धा।
कुमुदा व पुंडरीका फूले, कुमुदों युत नीर भरी शुद्धा।।
उत्तर मानस्तंभ के चउदिश, हृदयानन्दा सु महानन्दा।
सुप्रतिबुद्धा अरु प्रभंकरा, वापी जलभरीं जनानन्दा।।8।।

इन सबमें मणिमय सीढ़ी हैं, द्वय बाजू दो-दो कुंड बने।
इन कुंडों में सुर नर पशुगण, पगधूली धोकर शुद्ध बने।।
इन सोलह वापी का वर्णन, सुरपति भी नहिं कर सकते हैं।
बहु हंस बतख सारस पक्षी, उनमें कलरव ध्वनि करते हैं।।9।।

1. हरिवंश पुराण, सर्ग 57, श्लोक 16।

जिनवर सन्निध का ही प्रभाव, जो मानस्तंभ मान हरते।
यदि सुरपति भी अन्यत्र रचे, नहिं यह प्रभाव वे पा सकते।।
है धन्य घड़ी यह धन्य दिवस, जो पूजन का सौभाग्य मिला।
वह धन्य घड़ी भी मिले शीघ्र, साक्षात् दर्श हो जाय भला।।10।।

–दोहा –

जय जय जिनवर बिंब सब, जय जय मानस्तंभ।
'ज्ञानमती' सुख संपदा, भरो हरो जगफंद।।11।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितषण्णवतिमानस्तंभचतुरशीतिअधिकत्रय-शत जिनप्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.3)

चैत्य प्रासाद भूमि पूजा

–अथ स्थापना –नरेन्द्र छंद –

चैत्य प्रासाद नाम भू पहली, धूलिसाल अभ्यंतर।
पांच पांच प्रासाद एक इक, जिनमंदिर के अंतर।।
तीर्थंकर ऊँचाई से ये, बारह गुणिते ऊँचे।
जिनमंदिर जिन प्रतिमाओं को, आह्वानन कर पूजें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –भुजंगप्रयात छंद –

पयोराशि को नीर निर्मल भराके।
करूं धार जिनपाद भक्ती बढ़ाके।।
जजूँ जैनमंदिर भवातापहारी।
नमूँ जैनप्रतिमा सदा सौख्यकारी।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा

घिसा गंध केशर लिया पात्र में है।
चरण चर्चते नाथ के सौख्य हो है।।जजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यचंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले शालि तंदुल भरा थाल लाया।
चढ़ा पुंज सन्मुख प्रभू को रिझाया।।जजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यअक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केवड़ा मल्लिका मोगरा ले।
चढ़ाऊँ चरण में सुगुण कीर्ति फैले।।
जजूँ जैनमंदिर भवातापहारी।
नमूँ जैनप्रतिमा सदा सौख्यकारी।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जलेबी इमरती पुआ पात्र भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें स्वात्मसुख हेतु रुचि से।।जजूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यनैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजत पात्र में दीप घृत का जलाऊँ।
करूँ आरती मोह तम को भगाऊँ।।जजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा

दशांगी सुरभि धूप खेऊँ अगनि में।
जले कर्म सब धूम्र फैले गगन में।।जजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा

सरस संतरा आम अंगूर लाऊँ।
मधुर फल प्रभो आपको मैं चढ़ाऊँ।।जजूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा

जलादी वसू द्रव्य ले अर्घ कीना।
चढ़ाऊँ तुम्हें हों अशुभ कर्म छीना।।जजूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं चैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

सीतानदि को नीर, सुवरण झारी में भरूँ।
मिले भवोदधि तीर, शांतिधारा त्रय किये।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला वकुल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
पुष्पांजलि को आप, चरण चढ़ाते यश बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

भूमि प्रथम जिनगृह धरे, हरे सकल संताप।
पुष्पांजलि से पूजते, भक्त बनें निष्पाप।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद –

वृषभदेव के समवसरण में, चैत्य महल भू प्रथमा।
पाँच पाँच महलों के अंतर, इक इक जिनगृह सुषमा।।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, मिटे सर्व दुख आपत्।
पाँच परावर्तन से छूटूँ, मिले स्वात्मसुख संपत्।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के समवसरण में, प्रथम भूमि में शोभें।
चतुष्कोण वापी उपवन में, जिनगृह जन मन लोभें।।जिन.।।2।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनके समवसरण में, प्रथम भूमि सुर मनहर।
विविध बावड़ी वन पर्वत से, जिनगृह से भव दुखहर।।जिन.।।3।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन जिन समवसरण की शोभा अतिशय न्यारी।
विविध पुष्प से सुरभित दशदिश फूल रही हैं क्यारी।।जिन.।।4।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ के समवसरण में, चैत्यमहल भूमी में।
देव देवियाँ क्रीड़ा करते, जिनगुण गाते लय में।।जिन.।।5।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म प्रभू के समवसरण में, विद्याधर ललनायें।
प्रथम भूमि के जिन मंदिर में, पूजा भक्ति रचायें।।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, मिटे सर्व दुख आपत्।
पाँच परावर्तन से छूटूँ, मिले स्वात्मसुख संपत्।।6।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिन समवसरण में, सुर किन्नर किन्नरियाँ।
प्रथम भूमि में जिनप्रतिमा के, गुण गावें रुचि धरिया।।जिन.।।7।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा प्रभु के समवसरण में, भव्य जीवगण आते।
प्रथम भूमि के जिनमदिंर को, झुक-झुक शीश नवाते।।जिन.।।8।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत जिनसमवसरण में, मानस्तंभ के आगे।
सम्यग्दृष्टि भक्ति भाव से, नृत्य करें गुण गाके।।जिन.।।9।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनके समवसरण में, प्रथम भूमि जिनमंदिर।
भक्तों का मन शीतल करते, सर्व तापहर सुंदर।।जिन.।।10।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांस के समवसरण में, नृत्य करें सुर ललना।
जिनवर सुयश उचरतीं हर पल, वच मानों सुख करना।।जिन.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य जिन वासव पूजित, समवसरण सुखकारी।
प्रथम भूमि के जिनआलय की महिमा अतिशय न्यारी।।जिन.।।12।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

विमलनाथ का समवसृति, प्रथम भूमि मनहार।
जिनमंदिर जिनबिंब को, जजूँ मिले सुखसार।।13।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंत जिनराज का, समवसरण सुखधाम।
प्रथम भूमि जिनगेह को, जजूँ मिले निजधाम।।14।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ धर्मैक धुर, समवसरण निष्पाप।
प्रथम भूमि जिनगेह को, जजूँ मिटे जग ताप।।15।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ जिनराज का, समवसरण अतिशायी।
प्रथम भूमि जिनगेह को, जजूँ सर्व सुखदायी।।16।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ त्रिभुवनपती, समवसरण के ईश।
प्रथम भूमि जिनगेह को, जजूँ नमाकर शीश।।17।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ सब भव्य हित, समवसरण के नाथ।
धर्मामृत वर्षा करें, जजूँ नमाकर माथ।।18।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ यम मोह अरु, काम मल्ल के जिष्णु।
समवसरण के जिनभवन, जजूँ त्रिजग हित विष्णु।।19।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत मुनिनाथ पति, सबको दें उपदेश।
समवसरण के जिनभवन, जजूँ मिटे भवक्लेश।।20।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिर-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिजिन सब दुख शोकहर, मंगल करण जिनेश।
समवसरण के जिनभवन, जजूँ न हो दुख लेश।।21।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ करुणा करें, त्रिभुवन के आधार।
समवसरण के जिनभवन, जजूँ कर्म हों क्षार।।22।।

ॐ ह्रीं नेमिजिनसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ संकट हरण, क्षमा निधान महान।
समवसरण के जिनभवन, जजतें स्वात्म निधान।।23।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर सिद्धार्थ सुत, त्रिभुवन पिता जिनेश।
समवसरण के जिनभवन, जजूँ सु भक्ति हमेश।।24।।

ॐ ह्रीं महावीरसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिन-प्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद-पूर्णार्घ्य –

चौबीस जिन के समवसरण में, प्रथम भूमि में जिनगृह।
उनको उनमें जिन प्रतिमा को, जजतें नशें अशुभ ग्रह।।
रोग शोक दारिद्र कलह सब, बैर विरोध मिटेंगे।
अर्घ सजाकर रत्न मिलाऊँ, अर्पूं कर्म कटेंगे।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिसर्वजिन-मंदिरजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

स्वात्म सुधारस सौख्यप्रद, परमाह्लाद करंत।
गाऊँ जिनगुण मालिका, हो मुझ शांति अनंत।।1।।

–स्रग्विणी छंद –

मैं नमूँ मैं नमूँ सर्व तीर्थेश को।
सर्व जिनबिंब युत सर्व जिनगेह को।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।2।।

जिन समोसर्ण में सर्व मन मोहती।
चैत्य प्रासाद भू चौतरफ शोभती।।नाथ.।।3।।

चउदिशी वीथि में नाट्यशाला बनी।
दो तरफ दोय दो नृत्य से सोहनी।।नाथ.।।4।।

एक इक में बतीसों हि रंग भूमियाँ।
एक इक में बतीसों भवन देवियाँ।।नाथ.।।5।।

नृत्य करती हुई नाथ गुण गावतीं।
पुष्प अंजलि बिखेरंत मन भावतीं।।नाथ.।।6।।

एक इक जिनभवन शिखर से तुंग हैं।
उन सभी बीच सुरमहल पण पंच हैं।।
नाथ मेरी सुनो एक ही प्रार्थना।
फेर होवे न संसार में आवना।।7।।

देवघर बावड़ी उपवनों युक्त हैं।
देव क्रीड़ा करें नाथ पद भक्त हैं।।नाथ.।।8।।

दोय दो धूप घट दो तरफ शोभते।
धूप खेवें सभी पाप मल धोवते।।नाथ.।।9।।

धन्य यह शुभ घड़ी धन्य है धन्य है।
धन्य मेरा जनम आप पद वंद्य हैं।।नाथ.।।10।।

आप पद पूजतें सर्व विपदा टलें।
सर्व इच्छित फलें सर्व संपत् मिले।।नाथ.।।11।।

– घत्ता–

जय जय जिनप्रतिमा, अनुपम महिमा, जय तीर्थंकर गुणराशी।
जय 'ज्ञानमती' को, निजगुण दे दो, दूर करो मम यम फांसी।।12।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिसर्वजिन-मंदिरजिनप्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.4)

खातिका भूमि पूजा

–अथ स्थापना –नरेन्द्र छंद –

चौबिस जिनके समवसरण में, भूमि खातिका द्वितयी।
फूले कमल कुमुद पुष्पों से, स्वच्छ नीर भृत सुभयी।।
हंस प्रभृति पक्षी कलरव ध्वनि, मणिमय सीढ़ी सोहें।
पूजूँ जिनवर समवसरण को, सुरनर खग मन मोहें।।1।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडित समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-सोरठा –

नीर सुरभि युत शुद्ध, त्रयधारा जिनपद करूँ।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।1।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुरभि युक्त, जिनपद पंकज चर्च के।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।2।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल धौत, पुंज धरूँ जिन अग्र मैं।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।3।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित बहुविध पुष्प, जिनपद पंकज अर्पते।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।4।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर मोदक शुद्ध, जिनवर अग्र चढ़ाय के।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।5।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग ज्योती युक्त, दीपक से जिन पूजके।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।6।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवस्तु विमिश्रित धूप, जिनवर सन्मुख खेवते।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।7।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध फल रसयुक्त, जिनवर अग्र चढ़ाय के।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।8।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन मिश्रित अर्घ, भर भर थाल चढ़ाय के।
भूमि खातिका युक्त, समवसरण पूजूँ सदा।।9।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

सीतानदि को नीर, सुवरण झारी में भरूँ।
मिले भवोदधितीर जिनपद त्रयधारा करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला वकुल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
पुष्पांजलि को आप, चरण चढ़ाते यश बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा –

द्वितिय खातिका भूमि, चारों तरफी घिर रही।
कुसुमांजली समीप, करके पूजूँ जिनचरण।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद –

प्रथम भूमि के आगे वेदी, चारों तरफी घेरे।
चारों गोपुर द्वारों से युत, इस पर बने कंगूरे।।
उसके आगे बनी खातिका, भूमी समवसरण में।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर, जिनवर समवसरण मैं।।1।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितवृषभदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर ऊँचाई से खाई, चौथाई गहरी हैं।
चारों तरफी गोलाई युत, जल से पूर्ण भरी हैं।।
खिली कमलनी जनमन हरतीं, मुख दीखें इस जल में।।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर, जिनवर समवसरण मैं।।2।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितअजितनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र इन्द्राणी सुर किन्नर गण, इनमें क्रीड़ा करते।
देख खातिका की शोभा सब, जिन स्तवन उचरते।।
खिले पुष्प मानों कहते हैं, हँसो सदा जीवन में।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर, जिनवर समवसरण मैं।।3।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितसंभवनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन के समवसरण में, भूमि खातिका सोहे।
सुरनर किन्नर विद्याधर नर, सबके मन को मोहे।।
तीर्थंकर की महिमा अनुपम, वैभव समवसरण में।।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर, जिनवर समवसरण मैं।।4।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितअभिनंदननाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ ने घाति कर्म को, हनकर केवल पायो।
निजपर भेद विज्ञान ध्यान से, ज्ञान ज्योति प्रगटायो।।
धनद देव से निर्मित उत्तम, राजें अधर गगन में।।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर, जिनवर समवसरण मैं।।5।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितसुमतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभू ने राज्यविभव तज, निज की लक्ष्मी पाई।
गुण अनंत के रत्नाकर बन, केवल ज्योति जलाई।।
धनददेव से निर्मित सुन्दर, राजें अधर गगन में।।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर, जिनवर समवसरण मैं।।6।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितपद्मप्रभजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीसुपार्श्व ने पूर्व जनम में, सोलह भावन भाया।
तीर्थंकर प्रकृती को बांधा, निज आतम चमकाया।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान कल्याणक, उत्सव किया सुरों ने।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर, जिनवर समवसरण मैं।।7।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितसुपार्श्वजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रनाथ जिनचंद्र कांति सम, उज्ज्वल तनु को धारें।
रोग शोक दुख दारिद संकट, निज भक्तों के टारें।।
धनद देव से निर्मित परिषद्, राजें अधर गगन में।
पूजूँ नितप्रति अर्घ चढ़ाकर, जिनवर समवसरण मैं।।8।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचद्रप्रभजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद –

श्री पुष्पदंत जिनदेवा, सुरपति करते तुम सेवा।
पूजूं जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।9।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितपुष्पदंतजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ जिनेशा, हरते भव क्लेश अशेषा।
पूजूं जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।10।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितशीतलनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन श्रेयांस श्रेयस्कर, त्रिभुवन के हित क्षेमंकर।
पूजूं जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।11।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितश्रेयांसजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वासुपूज्य वासवनुत, गणधर मुनिगण से संस्तुत।
पूजूं जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।12।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितवासुपूज्यजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन विमल कर्म मल वर्जित, निज स्वात्म सुधारस तर्पित।
पूजूं जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।13।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितविमलनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनंत अघ हंता, सब मंगलकर भगवंता।
पूजूं जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।14।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितअनंतनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ सुखदाता, सब मेटें कर्म असाता।
पूजूं जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।15।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितधर्मनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन शांतिनाथ भगवंता, सब जग में शांति करंता।
पूजूं जिन समवसरण को, खाई भूयुत अनुपम जो।।16।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितशांतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–मोतीदाम छंद –

जिनेश्वर कुंथुनाथ जगपाल, हरें जनमन की व्यथा कृपाल।
जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।17।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितकुंथुनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर अरहनाथ जगसूर्य, मुनी मनकमल विकासें सूर्य।
जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।18।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितअरनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर मल्लिनाथ भगजिष्णु, ज्ञान से व्याप्त किया जगविष्णु।
जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।19।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितमल्लिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकेश्वर मुनिसुव्रतदेव, जजत ही सभी दुःख हों छेव
जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।20।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितमुनिसुव्रतजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भविक जन को नमिजिन रक्षंत, अनंतों गुणमणि से विलसंत।

जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।21।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितनमिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिजिन राजमती को त्याग, किया शिवरमणी से अनुराग।
जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।22।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितनेमिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमठ उपसर्ग विजेतानाथ, मुझे करिये हे पार्श्व सनाथ।
जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।23।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाकल्पद्रुम वीर जिनेश, सभी इच्छित पूरो परमेश।
जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।।24।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितमहावीरजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-नरेन्द्र छंद –

सब जिनवर के समवसरण में, द्वितिय भूमि खाई है।
खिले कुसुम को देख देख कर, जनता हरषाई है।।
बहु वैभव यह धनपति निर्मित, जिनवर चरण कमल में।
मैं पूजूँ नित अर्घ चढ़ाकर, नहीं फिरूँ भववन में।।25।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

– अनंगशेखर छंद–

जयो जिनेंद्र! आपके पदारविंद में नमें,
असंख्य देवदेवियों समेत इंद्र आय के।
जयो जिनेंद्र! आपके गुणानुवाद को भणें,
असंख्य देव देवियाँ स्वशीश नाय नाय के।।
गणीश आपके गुणों को गिन नहीं सकें कभी,
स्व भक्ति वश पुनः पुनः संस्तुती उचारते।

मुनीशवृंद आपके समीप आय आय के,
निजात्म तत्त्व प्राप्ति हेतु तीनरत्न धारते।।1।।
सुरेन्द्र के कहेनुसार धनपती यहाँ पे आ,
निमेष अर्धमात्रमें समोसरण बनावते।
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य से सनाथ आप,
नाथ तीनलोक के समस्त जीव गावते।।
लवण समुद्र के समान स्याहि घोल शारदा,
लिखे अनंतगुण अनंत काल तक सु आपके।
तथापि माँ सरस्वती कभी न पार पा सके,
गणीन्द्र औ बृहस्पती सदैव हार मानते।।2।।
अहो! महान् पुण्य के प्रभाव से जिनेन्द्र आप,
वंदना करूँ नमाय माथ हाथ जोड़ के।
अहो! जिनेन्द्र आपकी परोक्ष अर्चना करूँ,
यहीं जिनालयों में भक्ति से हि हाथ जोड़के।।
न हो मुझे कभी यहाँ पुनर्जनम का दुःख भी,
यही करूँ सुयाचना जिनेन्द्र! आश पूरिये।
सुज्ञान की मती करो न देर एक पल करो,
अखंड ज्ञान दो मुझे समस्त सौख्य पूरिये।।3।।

– दोहा–

परिखा से मंडित प्रभो! समवसरण है आप।
'ज्ञानमती' सुखसंपदा, देकर करो सनाथ।।4।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.5)

लता भूमि पूजा

–अथ स्थापना –नरेन्द्र छंद –

निज आत्मसुधारस निर्झरिणी, जल पीकर अतिशय तृप्त हुये।
वे ही निजकर्म कालिमा को, धोकर के अतिशय शुद्ध हुये।।
उनका ही धनपति समवसरण, रचते हैं अतिशय भक्ती से।
उस लताभूमि वैभव संयुत, जिनवर को पूजूँ भक्ती से।।1।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-गीता छंद –

क्षीरोदधी का नीर पयसम स्वर्ण झारी में भरूँ।
निज कर्म पंकिल धोवने को नाथपद धारा करूँ।।
तीर्थंकरों के समवसृति में लतावन की भूमियाँ।
जैवंत होवें सर्वदा फूले कुसुम की भूमियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय चिदंबर चित्पुरुष, तीर्थेश के पादाब्ज को।
शुभ गंध से चर्चन करूँ मुझको सुगुण यश प्राप्त हो।।तीर्थं.।।2।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य चिंतामणि जिनेश्वर को रिझाऊँ भक्ति से।
उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल पुंज अर्पूं युक्ति से।।तीर्थं.।।3।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली केवड़ा सुरभित कुसुम अर्पण करूँ।
जिनराज पारसमणि जजत निज आत्म को कंचन करूँ।।तीर्थं.।।4।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी इमरती रसभरी मिष्टान्न से भर थाल को।
निज आत्म अमृत स्वाद हेतु मैं चढ़ाऊँ नाथ को।।तीर्थं.।।5।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति स्वर्ण दीपक में दिये सब तम हरे।
निज ज्ञान ज्योती हो प्रगट इस हेतु हम आरति करें।।तीर्थं.।।6।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित दशांगी धूप खेऊँ धूप घट की अग्नि में।
निज आत्मयश सौरभ उठे सुख शांति फैले विश्व में।।तीर्थं.।।7।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमृत फल सरस फल, अर्प कर प्रभु पूजते।
स्वात्मैक परमानन्द अमृत, प्राप्त हो जिन भक्ति से।।तीर्थं.।।8।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत आदि लेकर, अर्घ भर कर ले लिया।
निजरत्नत्रय निधि लाभ हेतु, नाथ को अर्पण किया।।तीर्थं.।।9।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

सुवरण झारी में भरूँ, सीता नदि को नीर।
शांतीधारा त्रय करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, बेला वकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र-स्वात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा –

चिच्चिंतामणिरत्न, चिंतित फल देवो मुझे।
मिले शीघ्र त्रयरत्न, पुष्पांजलि से पूजते।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(छंद–हे दीन बंधु.....)

है तीसरी भूमी लता में पुष्प लताएँ।
जिनमें भ्रमर गुंजारते जिनराज गुण गायें।।
बल्लीवनी फूले कुसुम से सर्वमन हरे।
हम पूजते जिनवर विभव को निज विभव भरें।।1।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितवृषभदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराजवृंद नाथ का वैभव विलोकते।
जिनसूर्य से निजमन सरोज को विकासते।।बल्ली.।।2।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितअजितनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव्य देवदेव के चरणारविंद में।
भक्ती से नमें देव भी उनको सतत नमें।।बल्ली.।।3।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसंभवनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनरूप है चैतन्य चमत्कार अरूपी।
मैं भी इसी प्रकार ज्योतिपुंज अरूपी।।बल्ली.।।4।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितअभिनन्दनजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं पूर्ण विमल ज्ञान दर्श वीर्य स्वभावी।
श्रद्धा बनी प्रभु दर्श से मैं सौख्य स्वभावी।।बल्ली.।।5।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसुमतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस गंध फरस रूप से मैं शून्य ही कहा।
हे नाथ! आप भक्ति से यह ज्ञान हो रहा।।बल्ली.।।6।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितपद्मप्रभसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अष्टकर्म आत्मा से बद्ध नहीं हैं।
जिन पूजने से स्वपर भेद ज्ञान यही है।।बल्ली.।।7।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितसुपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं एकला हूँ शुद्ध ज्ञान दरस स्वरूपी।
जिनवर कृपा से शीघ्र बनूँ सिद्ध अरूपी।।बल्ली.।।8।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचंद्रप्रभसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमार्थनय से मैं तो सदा शुद्ध कहाता।
जिनराज भक्ति एक सर्व सिद्धि प्रदाता।।बल्ली.।।9।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितपुष्पदंतजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यवहार नय से आज मैं संसारि कहाऊँ।
जिनेश भक्ति से निजात्म शुद्ध बनाऊँ।।बल्ली.।।10।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितशीतलनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ये सागर अपार आप खिवैया।
निज हाथ का अवलंब दे भवपार करैया।।बल्ली.।।11।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितश्रेयांसनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।बल्ली.।।12।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितवासुपूज्यसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल—नंदीश्वर पूजा)

श्री विमलनाथ जिनराज, अघमल विरहित हैं।
उन समवसरण अतिशायि, जिनगुण पूरित हैं।।
बल्लीवन सुरभित पुष्प, वापी पर्वत युत।
इस विभव सहित जिन ईश, पूजूँ त्रिकरण युत।।13।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितविमलनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनंत गुणधाम, गणपति गण वंदित।
मैं शत शत करूँ प्रणाम, होवे यम खंडित।।बल्ली.।।14।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितअनंतनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्रावक धर्म द्विभेद, जिनने परकासा।
उन जजत हरूँ भव खेद, जिनने भवनाशा।।
बल्लीवन सुरभित पुष्प, वापी पर्वत युत।
इस विभव सहित जिन ईश, पूजूँ त्रिकरण युत।।15।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितधर्मनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध संघ में हो शांति, सब जग में होवे।
हो मुझ मन में भी शांति, तुम पद नित सेवें।।बल्ली.।।16।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितशांतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ गुणराशि, समरस सुखदाता।
मैं झुक झुक नाऊँ शीश, पूजूँ जग त्राता।।बल्ली.।।17।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितकुंथुनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान्, त्रिभुवन के स्वामी।
भवि मन पंकज भास्वान्, पूजूँ जग नामी।।बल्ली.।।18।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितअरनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ जिनराज, स्वात्मसुधास्वादी।
उन समवसरण दिन रात, हरता भव व्याधी।।बल्ली.।।19।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितमल्लिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रत जिनदेव, देवों के देवा।
वे हरते सर्व कुटेव, करते जो सेवा।।बल्ली.।।20।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितमुनिसुव्रतजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ नवों निधि सिद्धि, देते भक्तों को।
स्वयमेव स्वात्म की सिद्धि, पाई निरवधि जो।।बल्ली.।।21।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितनमिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान्, करुणा के सागर।
अज्ञान हरें भास्वान्, पूजूँ अंजलिकर।।बल्ली.।।22।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितनेमिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ तीर्थेश, कलिमल दलन करें।
जो भविजन जजें हमेश, निज दुख शमन करें।।बल्ली.।।23।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महति वीर महावीर, कर्म विनाशक हैं।
जो जजें हरें भवपीर, प्रभु सुखदायक हैं।।बल्ली.।।24।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितमहावीरजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा –

चौबीसों जिनराज के, समवसरण सुखकार।
बल्लीवन युत जिनविभव, जयवंतोमनहार।।25।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

चिन्मूरति परमातमा, चिदानंद चिद्रूप।
गाऊँ तुम गुणमालिका, पूर्णज्ञान सुखरूप।।1।।

–स्रग्विणी छंद –

जय जयो नाथ आर्हन्त्य लक्ष्मी धरें।
जय जयो नाथ आनन्त्य गुणमणि भरें।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।2।।।

जय जयो नाथ कैवल्य ज्ञानी तुम्हीं।
जय जयो नाथ त्रैलोक्य दर्शी तुम्हीं।।नाथ.।।3।।

आप उपदेश हित इंद्र मंडप रचें।
जो समवसरण इस नाम से बहु दिपे।।नाथ.।।4।।

जय लता भूमि घेरे वहाँ चउ तरफ।
पुष्पफल की लतायें भरीं सब तरफ।।
नाथ तेरे निकट एक ही याचना।
स्वात्म अनुभव सुधारस पिऊँ आपना।।5।।।

गोल चउकोण त्रयकोण की वापियाँ।
स्वच्छ जल से भरीं पुष्प हँसते वहाँ।।।।नाथ.।।6।।

तुंग पर्वत बहुत सीढ़ियों युत बने।
देवदेवी मनुजगण उन्हीं पर रमें।।।।नाथ.।।7।।

नाथ वैभव तुम्हारा न उपमा कहीं।
धनद ने सर्वभंडार खोला यहीं।।।।नाथ.।।8।।

मैं बड़े पुण्य से नाथ पायो तुम्हें।
धन्य है धन्य है या घड़ी धन्य मैं।।।।नाथ.।।9।।

पूजता हूँ बड़ी भक्ति श्रद्धा धरे।
पूर्ण निज 'ज्ञानमति' की हि आशा धरे।।नाथ.।।10।।

–दोहा –

सब जन को देता शरण, समवसरण जिन आप।
'ज्ञानमती' सुख संपदा, भरो पूर्ण निष्पाप।।11।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं. 6)

उपवन भूमि पूजा

–अथ स्थापना –नरेन्द्र छंद –

बल्लीवनी को वेढ़कर, परकोट सुंदर स्वर्ण का।
चउ गोपुरों से युक्त उससे, बाद चौथी भूमिका।।
उपवन धरा के चार दिश में, चैत्य द्रुम अति सोहने।
उनके जिनेश्वर बिंब को, हम पूजते मन मोहने।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-गीता छंद –

अतिस्वच्छ शीतल नीर से, जिनपाद त्रयधारा करूँ।
निजमानसिक संताप शांती, हेतू मैं आशा धरूँ।।
उपवन धरा के चार दिश में, चैत्यद्रुम अति सोहने।
उनके जिनेश्वर बिंब को, हम पूजते मन मोहने।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी का गंध सुरभित, घिस कटोरी भर लिया।
निज तापत्रय संहार हेतू, नाथ पद चर्चन किया।।उप.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि धौत तंदुल चन्द्रदीधित, सम धवल के पुंज से।
तुम पूजते निज आत्म अक्षय सौख्य होवे भक्ति से।।उप.।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

दश दिश सुगंधित कर रहे, ये पुष्प बेला मल्लिका।
तुम पद कमल अर्पण किये, हो स्वात्म सुरभित संपदा।
उपवन धरा के चार दिश में, चैत्यद्रुम अति सोहने।
उनके जिनेश्वर बिंब को, हम पूजते मन मोहने।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूआ अंदरसा पूड़ियाँ, हलुआ भराया थाल में।
निज भूख व्याधी दूर होने, हेतु अर्पूं आज मैं।।उप.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर बाती जगमगे, तुम आरती रुचि से करूँ।
अज्ञान तम विध्वंस हो, निजज्ञान की ज्योती धरूँ।।उप.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध मिश्रित धूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ अबे।
सब कर्म भस्मीभूत होकर, धूम्र के छल से भगें।।उप.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर केला आम अमरख, फल मधुर बहु ले लिया।
तुम पाद अग्र चढ़ावते, निज आत्म सुख अनुभव किया।।उप.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक अर्घ लेकर, स्वर्ण पुष्प मिलाइया।
यह अर्घ आप चढ़ाय के, निज आत्म निधि को पा लिया।।उप.।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिचतुर्दिक्चैत्यवृक्ष-संबंधिसर्वजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

सुवरण झारी में भरूँ, गंगानदि को नीर।
शांतिधारा त्रय करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा बेला वकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र स्वात्मसुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा –

समवसरण प्रभु आप, त्रिभुवन की लक्ष्मी धरे।
पुष्पांजली समर्प, चैत्यवृक्ष जिन पूजहूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरिउपवनभूमिचैत्यवृक्षस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद –

वृषभेश जिनके समवसृति में वनधरा में पूर्वदिश।
वन है अशोक कहा वहाँ तरु हैं कुसुम पत्रों भरित।।
उन मध्य एक अशोक तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्षसंबंधि-चतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभेश जिनके समवसृति दक्षिण दिशी वनभूमि में।
तरु सप्तछद शोभें बहुत फल पुष्प पत्रों से घने।।
उन मध्य सप्तच्छद तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणि जिनमूर्तियाँ।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभेश प्रभु के समवसृति में पश्चिमी वन भूमि में।
चंपक तरु शोभें बहुत सुरभित कुसुम पत्ते घने।।
उन मध्य चंपक चैत्य तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ समवसरण में उत्तरी वन भूमि में।
तरु आम्र के फल पुष्प पत्तों युत वहाँ शोभें घने।।
उन मध्य आम्र सुचैत्यतरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्षसंबंधि-चतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ समवसरण में पूर्वदिक् वनभूमि में।
तरु हैं अशोक अनेक विध पुष्पादि से शोभें घने।।
उन मध्य चैत्य अशोक तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।5।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब भव्यजन का शरण जो इस दक्षिणी वनभूमि में।
तरु सप्तछद शोभें विविध फल पुष्प पत्रों युत घने।।
उन मध्य सप्तच्छद तरु में चारदिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।6।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्य-वृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब भक्तजन को दे शरण उस पश्चिमी वनभूमि में।
चंपक तरु शोभें बहुत विध पुष्प पत्रों से घने।।

उन मध्य चंपक चैत्यतरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनपतिरचित इस समवसृति में उत्तरी वन भूमि में।
तरु आम्र के शोभें विविध फल पुष्प पत्रों से घने।।
उन मध्य आम्र सुचैत्य तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनेश्वर समवसृति में वन धरा में पूर्व दिक्।
तरु वर अशोक विभासते पुष्पादि से सौगंध युत।।
उन मध्य चैत्य अशोक तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।9।।

ॐ ह्रीं सम्भवनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधरगणों युत समवसृति में दक्षिणी वन भूमि में।
तरु सप्तछद शोभें विविध पुष्पादि से फूले घने।।
उन मध्य सप्तच्छद तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।10।।

ॐ ह्रीं सम्भवनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिगण सहित जिन समवसृति में पश्चिमी वनभूमि में।
चंपक तरु शोभें विविध पुष्पों सहित सुरभित घने।
उन मध्य चंपक चैत्य तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।11।।

ॐ ह्रीं सम्भवनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशगणों युत समवसृति में उत्तरी वन भूमि में।
बहु आम्र तरु शोभें विविध फल पुष्प पत्रों युत घने।।
उन मध्य आम्र सुचैत्यतरु में, चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।12।।

ॐ ह्रीं सम्भवनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ अभिनंदन समवसृति पूर्वदिक् वनभूमि में।
तरुवर अशोक विभासते बहु पुष्प पत्रों से घने।।
उन मध्य चैत्य अशोकतरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।13।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसृति सौख्यकर दिस दक्षिणी वनभूमि में।
तरु सप्तछद शोभें वहाँ बहु पुष्प पत्रों से घने।।
उन मध्य सप्तच्छद तरु में, चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।14।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराजपरिषद सर्वहितकर पश्चिमी वनभूमि में।
चंपक तरु शोभे विविध कुसुमादि से सुरभित घने।।
उन मध्य चंपक चैत्य तरु में चार दिश जिनमूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।15।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्चंपकचैत्य-वृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसृति सिद्धिप्रद की उत्तरी वनभूमि में।
तरु आम्र के शोभें बहुत विध पुष्प फल से युत घने।।

उन मध्य आम्र सुचैत्य तरु में चार दिश जिन मूर्तियाँ।
जैवंत होवें नित्य ये चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।16।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

सुमतिनाथ के समवसरण में, पूरब वन भूमी में।
तरु अशोक के वृक्ष घनेरे, शोक हरें पलपल में।।
उनके बीच अशोक चैत्यतरु, चउदिश जिन प्रतिमायें।
प्रातिहार्य मानस्तंभों युत उनको अर्घ चढ़ायें।।17।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण में दक्षिण दिश उपवन भूमी में।
सप्तच्छद के वृक्ष घनेरे पुष्प सुगंधित उनमें।।
उनके बीच सप्तछद तरु में चहुंदिशजिन प्रतिमायें।
प्रातिहार्य मानस्तंभों युत उनको अर्घ चढ़ायें।।18।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मंगलकर समवसरण में, पश्चिम वनभूमी में।
चंपक तरु हैं नित पुष्पों से सुरभि करें दशदिश में।।
उनके बीच वृक्ष चंपक में चहुंदिश जिन प्रतिमायें।
प्रातिहार्य मानस्तंभों युत उनको अर्घ चढ़ायें।।19।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम जिन समवसरण में उत्तर वन भूमी में।
आम्रवृक्ष हैं फल पुष्पों युत सुरनर रमतें उनमें।।
उनके बीच आम्रतरु इनमें चहुंदिश जिनप्रतिमाएँ।
प्रातिहार्य मानस्तंभों युत उनको अर्घ चढ़ायें।।20।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभू के समवसरण में पूरब दिश उपवन में।
तरु अशोक सब पवन झकोरे हिलते हैं क्षण क्षण में।।
उनके बीच अशोक चैत्यतरु, उसमें चहुंदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।21।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण सुखदाता, दक्षिण दिश उपवन में।
वृक्ष सप्तछद पृथिवीकायिक पुष्प पत्र हैं उनमें।।
उनके बीच चैत्यतरु सुंदर उसमें चहुंदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण जन शरणभूत है, उसमें पश्चिम वन में।
चंपक वृक्ष सुगंधित सुंदर, सुरगण रमते उनमें।।
उनके बीच चैत्यतरु चंपक, उसमें चहुँ दिश प्रतिमा।।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।23।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में उपवन भूमि उत्तरदिश में सोहें।
आम्रवृक्ष फल पुष्पों से युत सुरकिन्नर मन मोहें।।
उनके बीच आम्र चैत्यतरु उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।24।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिनसमवसरण में, पूरबदिश उपवन में।
तरु अशोक हैं मणिमय पत्ते पुष्प लगे हैं उनमें।।

उनके बीच वृक्ष इक सुंदर उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।25।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण त्रिभुवन हितकारी, उसमें दक्षिण वन में।
वृक्ष सप्तछद मरकतमणिमय, पत्तों से युत उनमें।।
उनके बीच चैत्यतरु सुंदर, उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।26।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण सब रोग शोकहर, उसमें पश्चिम वन में।
चंपक वृक्ष रत्नमणि निर्मित उन सुगंधि दश दिश में।।
उनके बीच चैत्यतरु सुंदर, उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।27।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण सब वैर कलह हर, उसमें उत्तर वन में।
आम्र वृक्ष सब कुबेर निर्मित, फल फूलोंयुत उनमें।।
उनके बीच चैत्यतरु सुंदर, उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।28।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभू के समवसरण में, पूरब दिश उपवन में।
तरु अशोक उद्यान कुसुम युत शोक हरे हर पल में।।
उनके बीच चैत्यतरु सुंदर, उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।29।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण श्रेयस्कर, उसमें दक्षिण वन में।
वृक्ष सप्तछद विविध रत्नमय, पत्र पुष्प हैं उनमें।।
उनके बीच चैत्यतरु सुंदर, उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।30।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण है विश्वहितंकर, उसमें पश्चिम वन में।
चंपक तरु उद्यान मनोहर, खिले कुसुम उन सबमें।।
उनके बीच चैत्यतरु सुंदर, उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।31।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण सब भव्य हितंकर, उसमें उत्तर वन में।
आम्रवृक्ष फल पुष्प भारयुत, सुरभि करें दशदिशमें।।
उनके बीच चैत्यतरु सुंदर, उसमें चहुँदिश प्रतिमा।
उनको पूजूँ सर्व सौख्यप्रद लोकोत्तर जिन महिमा।।32।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–अडिल्ल छंद –

पुष्पदंत के समवसरण में वन मही[1]।
पूरब दिश में तरु अशोक वन सोभहीं।।
उसके मध्य अशोक चैत्यतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।33।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. भूमि।

समवसरण जिनवर का नवनिधि से भरा।
उसमें दक्षिण दिश सप्तच्छद वन धरा[1]।।
उसके बीच सप्तछद तरु इक शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत जिन अधर राजते गगन में।
समवसरण में चंपक वन दिश अपर में।।
उसके बीच चैत्य चंपकतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।35।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत की दिव्यधुनी मुनिगण सुनें।
उत्तरदिश में आम्र वनी में तरू घने।।
उसके बीच आम्र चैत्यतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनका समवसरण शीतल करे।
उसमें पूरब दिश अशोक वन मन हरे।।
उसके मध्य अशोक वृक्षवन शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।37।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में चैत्यवृक्ष को मुनि नमें।
दक्षिण में सप्तच्छद वन में सुर रमें।।

1. भूमि।

उसके मध्य सप्तछद तरु इक शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।38।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्यवृक्ष जिनप्रतिमा गणधर वंद्य हैं।
पश्चिमदिश में चंपक वन अभिनंद्य है।।
उसके मध्य चैत्य चंपकतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।39।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरनर पूजें चैत्यवृक्ष जिनबिंब को।
उत्तर वन में चैत्य आम्रतरु बिंब को।।
यह वन मणिमय प्रतिमा से अति शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।40।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसजिनसमवसरण अतिशय भरा।
त्रिभुवन जन क्षेमंकर पूरब वन धरा।।
उसके मध्य अशोक चैत्यतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।41।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण में सुरपति भक्त हैं।
दक्षिण दिश सप्तच्छद वन अतिरम्य है।।
उसके मध्य सप्तछद चैत्य तरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।42।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण सौ इन्द्रों वंद्य है।
पश्चिमदिश में चंपकवन अभिनंद्य है।।
उसके बीच चैत्य चंपकतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।43।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में रोग शोक पीड़ा नहीं।
उत्तर दिश में सुंदर आम्रतरु मही।।
उसके बीचों आम्र चैत्यतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।44।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य जिन समवसरण में राजते।
वहाँ पूर्ववन में अशोक तरू लसें।।
उसके मध्य अशोक चैत्यतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।45।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में भूख प्यास बाधा नहीं।
दक्षिण दिश में सप्तछद वन की मही।।
उसके मध्य सप्तछद तरुवर शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।46।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में अपमृत्यू भय दुख नहीं।
पश्चिमदिश चंपक वन अतिशय शोभहीं।।

उसके बीच चैत्य चंपकतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।47।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में सम्यग्दृष्टी जा सकें।
उत्तरवन के जिन बिंबों को भज सकें।।
उसके बीच आम्रचैत्यतरु शोभता।
चहुँदिश जिनवर बिंब जजूँ मन मोहता।।48।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौबोल छंद –

विमलनाथ के समवसरण में, भविजन निजको शुद्ध करें।
उपवन भूमी के चारों दिश, जिनप्रतिमा की भक्ति करें।।
पूरबदिश अशोक तरु उपवन, चैत्यवृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।49।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में गणधर मुनिगण, सुरनर पशुगण भक्ति करें।
स्वपर भेद विज्ञान प्राप्त कर, चतुर्गती के दुःख हरें।।
दक्षिणदिश सप्तच्छद तरुवन, चैत्य वृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।50।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण में आलस निद्रा तंद्रा कष्ट नहीं।
रोग शोक दुख संकट मृत्यु वैर कलह विद्वेष नहीं।।
पश्चिमदिश चंपक तरु उपवन, चैत्यवृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।51।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में जिनवर अतिशय क्रूर पशू गण शांत बने।
सभी वैर विद्वेष छोड़कर, करें परस्पर प्रेम घने।।
उत्तर दिशी आम्रतरु उपवन, चैत्यवृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।52।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंतजिन अंतक भयहर, गुण अनंत के स्वामी हैं।
समवसरण में अधर विराजें, त्रिभुवन अंतर्यामी हैं।।
पूरब दिश अशोकतरु उपवन, चैत्यवृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवरसमवसरण सुरनिर्मित, नवनिधि सुख संपत्ति भरें।
जो जन पूजें भक्तिभाव से, सर्व अमंगल दोष हरें।।
दक्षिण दिश सप्तच्छद उपवन, चैत्यवृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।54।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनकुबेर ने सब संपत्ती, समवसरण में लाय धरी।
भव्यजनों के सर्वमनोरथ, तभी भक्ति ने पूर्ण करी।।
पश्चिमदिश चंपकतरु उपवन, चैत्यवृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।55।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सभा बनी हैं उनमें, मुनिगण सुरनर पशु बैठे।
जिनवर दिव्यध्वनी सुन करके, चतुर्गती के दुख मेटे।।

उत्तरदिश में आम्र वृक्षवन, चैत्यवृक्षसुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।56।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के समवसरण में धर्मामृत नित बरस रहा।
मुनी आर्यिका श्रावक और श्राविका रुचि से पियें अहा।।
पूरबदिश अशोक तरु उपवन, चैत्यवृक्ष सुरवंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।57।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण यह असंख्य भवि को, धर्मसुधा से तृप्त करे।
भवअनंत के अगणित दुख को इक, क्षण में ही नष्ट करें।।
दक्षिणदिश सप्तच्छद उपवन, चैत्यवृक्षसुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।58।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण को वंदत, सप्त परमस्थान मिले।
भक्ती में रत भव्यजनों के, मन की कलियाँ शीघ्र खिलें।।
पश्चिमदिश चंपक तरु उपवन, चैत्य वृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर वंदत इन्द्र संपदा, चक्रवर्ति साम्राज्य मिले।
अधिक और क्याजिनगुण संपद मुक्तिरमा सहशीघ्र मिले।।
उत्तरदिश में आम्र तरूवन, चैत्य वृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।60।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के समवसरण में, इन्द्रराज भी भक्त बनें।
भक्तपूर्ण शांती को पाकर, जन्म मृत्यु का कष्ट हनें।।
पूरब दिश अशोक तरु उपवन, चैत्य वृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।61।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में सुरललनायें, भक्तिभाव से नृत्य करें।
धवल चंद्रकिरणों सम उज्ज्वल, प्रभु की गुण कीर्ती उचरें।।
दक्षिण दिश सप्तच्छद उपवन, चैत्यवृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।62।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में शारीरिक, मानस आगंतुक कष्ट नहीं।
षट्ऋतु के फल फूल वहाँ, इक साथ फलें फूलें नित ही।।
पश्चिमदिश में चंपक तरु वन, चैत्यवृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।63।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में जिनप्रभाव से, वैर कलह संघर्ष नहीं।
सिंह हिरण अरु सर्प नेवला प्रेम परस्पर करें सही।।
उत्तरदिश उद्यान आम्र का चैत्यवृक्ष सुर वंद्य खड़े।
उनकी चहुँदिश जिनप्रतिमा को, पूजत सुख संपत्ति बढ़े।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद –

श्री कुंथुनाथ जिनदेवा, तुम समवसरण दुख छेवा।
उपवन अशोक पूरब में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।65।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण के अन्दर, सौधर्म इन्द्र प्रभु किंकर।
वन सप्तच्छद दक्षिण में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।66।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिनाथ प्रभू गुण भजते, सुर किन्नर पूजा रचते।
चंपक वन पश्चिम दिश में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।67।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर तुम गुण को गाते, निज में परमानंद पाते।
वन आम्र तरू उत्तर में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।68।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अरहनाथ मुनिनाथा, इन्द्रादि नमाते माथा।
उन समवसरण पूरब में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।69।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण अतिशायी, त्रिभुवनजन को सुखदायी।
सप्तच्छद वन दक्षिण में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।70।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सन्निध पा करके, भविजन भव भव दुख हरते।
चंपक वन पश्चिम दिश में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।71।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँदिश प्रतिमा के सन्मुख, हैं मानस्तंभ चतुर्मख।
आमों का वन उत्तर में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।72।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमल्लिनाथ भव विजयी, उन समवसरण सुखकरई।
उपवन अशोक पूरब में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।73।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजपरमानंद सुखदाता, जो भजे सर्व सुख पाता।
सप्तच्छदवन दक्षिण में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।74।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आतम रस सुख पायो, उन समवसरण शिर नायो।
चंपक तरुवन पश्चिम में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।75।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण जो यजते, उन सर्व मनोरथ फलते।
आमों का वन उत्तर में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिन भवहर्ता, उन पूजत सब सुख भर्ता।
उपवन अशोक पूरब में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण की पूजा, इस सम नहिं हितकरूजा।
सप्तच्छद वन दक्षिण में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आधि व्याधि परिहारे, जिन समवसरण गुणधारे।
चंपक वन पश्चिम दिश में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।79।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो समवसरण मन धारें, वे दुख दारिद सब टारें।
आमों का वन उत्तर में, जजुँ चैत्यवृक्ष रुचिधर मैं।।80।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

समवसरण नमिनाथ का, सब सुख का भण्डार।
वन अशोक पूरब दिशी, जजूँ चैत्यतरु सार।।81।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्मों का कल्पतरु, समवसरण सुखकार।
सप्तच्छदवन दक्षिणी, जजूँ चैत्यतरु सार।।82।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर की अद्भुत सभा, भविजन सुख दातार।
चंपक वन पश्चिम दिशी, जजूँ चैत्य तरु सार।।83।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म जन्म के पाप सब, नाशूँ जिन गुणधार।
आम्रवनी उत्तर दिशी, जजूँ चैत्य तरु सार।।84।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ की भक्ति से, मिले स्वात्म साम्राज्य।
तरु अशोक वन पूर्वदिश, जजूँ चैत्यतरु आज।।85।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण जिनराज का, त्रिभुवन सुख साम्राज।
दक्षिण दिश वन सप्तछद, जजूँ चैत्यतरु आज।।86।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनभक्ती से इन्द्र पद, मिले चक्रि साम्राज्य।
चंपक वन पश्चिम दिशी, जजूँ चैत्यतरु आज।।87।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन भक्ती से ही मिले, मुक्तिपुरी का राज।
उत्तर दिश में आम्रवन, जजूँ चैत्यतरु आज।।88।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण प्रभुपार्श्व का, सब मंगल करतार।
तरु अशोकवन पूर्वदिश, जजूँ चैत्यतरु सार।।89।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व अमंगल दोषहर, धर्मतीर्थ करतार।
दक्षिण दिश वन सप्तछद, जजूँ चैत्यतरु सार।।90।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम मंत्र जिन पार्श्व का, सर्व सौख्य दातार।
चंपक वन पश्चिमदिशी, जजूँ चैत्यतरु सार।।91।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकट मोचन पार्श्वप्रभु, कलियुग दुख हरतार।
उत्तर दिश में आम्रवन, जजूँ चैत्यतरु सार।।92।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण जिन वीर का, अतिशय गुण भंडार।
जजुँ अशोक तरु बिंब को, सर्व सौख्य भण्डार।।93।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सन्मति दें सन्मती, कुमति विनाशनहार।
जजूँ सप्तछद बिंब को, सर्व सौख्य भण्डार।।94।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्द्धमान भगवान का, समवसरण सुखकार।
चंपक तरु प्रतिमा जजूँ, सर्व सौख्य भण्डार।।95।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर प्रभू का नाम है, स्वातम निधि दातार।
आम्र वृक्ष प्रतिमा जजूँ, सर्व सौख्य भण्डार।।96।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्ष-संबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ-शंभु छंद –

चौबिस जिनवर के समवसरण में, चौथी उपवन भू मानी है।
चारों दिश इक इक चैत्य वृक्ष, चहुँदिश जिनप्रतिमा मानी हैं।।
चारों दिश की जिन प्रतिमा के, सन्मुख में मानस्तंभ खड़े।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, दिन पर दिन सुख सौभाग्य बढ़े।।97।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिसंबंधिषण्णवति-चैत्यवृक्ष-चतुरशीत्यधिकत्रिशतजिनप्रतिमातावत्प्रमाणमानस्तम्भसंबंधिषट्त्रिंश दधिकएकसहस्रपंचशतजिनप्रतिमाभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

नासा दृष्टी सौम्य छवि, जिनवर सम जिनबिंब।
नमूँ नमूँ मस्तक नमां, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय श्री जिनवर समवसरण, जयजय चौथी उपवन भूमी।
जय जय मणिमय जिन चैत्यवृक्ष, जय जय सुर नर वंदित भूमी।।

जय जय गणधर गुरु से वंदित, जय जय मुनिगण विहरण भूमी।
जय जय अशोक सप्तच्छद अरु, चंपक व आम्रवन की भूमी।।2।।

परकोटा दूजा स्वर्णमयी, चउ गोपुर द्वारों से युत है।
व्यंतर सुर मुद्गर लेकर के, जिनभक्त वहाँ पर रक्षक हैं।।
तोरण द्वारों के उभय तरफ, अठ विध के मंगल द्रव्य धरे।
प्रत्येक एक सौ आठ कहे, ये सर्व अमंगल दोष हरें।।3।।

उसके आगे वेष्टित करके, उपवन भूमी अति शोभ रही।
दिशक्रम से अशोक सप्तच्छद, चंपक व आम्रवन दिखें वहीं।।
चारों दिश इक इक चैत्य वृक्ष, प्रभु से बारह गुणिते ऊँचे।
प्रत्येक चैत्यतरु में चारों, दिश इक-इक जिन प्रतिमा दीखें।।4।।

ये आठ प्रातिहार्यों संयुत, मणिमय श्रीजिन प्रतिमाएं हैं।
हर प्रतिमाओं के सन्मुख इक, इक मानस्तंभ कहायें हैं।।
ये तीन कोट से परिवेष्टित त्रय कटनी के ऊपर शोभें।
मानस्तंभों के चारों दिश इक इक जिन प्रतिमाएँ शोभें।।5।।

चौबिस जिनवर के उपवन में, छ्यानवे चैत्यतरु माने हैं।
उनमें त्रय शतक सुचौरासी, मणिमय जिनबिंब बखाने हैं।।
इनके मानस्तंभ तीन शतक चौरासी ही हो जाते हैं।
चारों दिश जिनवर बिंब सभी पन्द्रह सौ छत्तिस गाते हैं।।6।।

इन जिनबिंबों को भक्ती से जो नित प्रति वंदन करते हैं।
वे सर्व मनोरथ पूर्ण करें, क्रम से शिव लक्ष्मी वरते हैं।।
इन उपवन में कहिं बावड़ियाँ कहिं क्रीड़ा पर्वत दिखते हैं।
कहिं भवन बने सुन्दर ऊँचे, इनमें सुर नर नित रमते हैं।।7।।

पूरबदिशवन में बावड़ियाँ[1] नंदा नन्दोत्तर आनन्दा।
नन्दवती व अभिनन्दिनी नन्दिघोषा जलभरी महानन्दा।।
जो जन इनकी पूजा करते वे उदय सुफल को पाते हैं।
वापी से पुष्पों को लेकर जिनबिंब पूजते जाते हैं।।8।।

दक्षिणदिश विजय तथा अभिजय, जैत्री व वैजयन्ती वापी।
अपराजित जयोत्तरा नामा ये यजत विजय फल को देतीं।

1. हरिवंशपुराण सर्ग 57, श्लोक 32 से यह प्रकरण लिया गया है।

पश्चिमदिश कुमुदा नलिनी अरु, पद्मा पुष्करा वापियाँ हैं।
विश्वोत्पला, कमला ये छह, यजते प्रीति फल देती हैं।।9।।

उत्तर में प्रभासा भासवती भासा सुप्रभा भरीं जल से।
पुन भानुमालिनी स्वयंप्रभा, ख्याती फल देतीं पूजन से।।
वापी जल से स्नान किये, भवि जन इक भव को देखे हैं।
उस जल अवलोकन से निज के ही सात भवों को देखे हैं।।10।।

इन उदय और प्रीती फलदा बावड़ियों के मधि मारग के।
द्वय तरफी तीन तीन खन की बत्तीस नाट्यशाला दीखें।।
प्रत्येक में बत्तिस बत्तिस, ज्योतिषि, देवी नर्तन करती हैं।
वे हाव भाव से तन्मय हो, जिनवर गुण कीर्तन करती हैं।।11।।

हम नित्य नमें जिन प्रतिमा को सारे कलिमल धुल जावेंगे।
निज आत्म सुधारस पीकर के निज में ही तृप्ती पावेंगे।।
सब आधि व्याधि पीड़ा संकट, इक क्षण में ही नश जावेंगे।
निज 'ज्ञानमती' केवल करके, सिद्धालय में बस जावेंगे।।12।।

–घत्ता –

जय जय जिन प्रतिमा, अनवधि महिमा, जय जिनवरगुण पूर्णभरे।
जय सर्व सुखाकर, गुण रत्नाकर पूजक भवदधि तूर्ण तरें।।13।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितउपवनभूमिसंबंधिमानस्तंभसहित-सर्वचैत्यवृक्षजिनप्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.7)

ध्वज भूमि पूजा

– अथ स्थापना – नरेन्द्र छंद –

ध्वज भूमि पंचम में ध्वजा, दश चिह्न चिह्नित सोभहीं।
प्रत्येक दिश दस विधों इक सौ आठ इक सौ आठ हीं।।
ये महाध्वज प्रत्येक इक सौ आठ लघुध्वज को धरें।
इन सब ध्वजाओं को जजूँ जिन समवसृति में फरहरें।।1।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –सोरठा –

पद्मसरोवर नीर, धारा देते अघ टले।
ध्वज भूमि सुखसीर, समवसरण पूजूँ सदा।।1।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन गंध सुगंध, चर्चत अंतर शांत हो।
ध्वज की भूमि अमंद, समवसरण पूजूँ सदा।।2।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा।

तंदुल धुले अखंड, पुंज चढ़ाते सुख मिले।
ध्वज की भूमि अनिंद, समवसरण पूजूँ सदा।।3।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीतिस्वाहा।

बेला कमल सुगंधि, पुष्प चढ़ाते यश बढ़े।
ध्वज की भूमि अनिंद, समवसरण पूजूँ सदा।।4।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू पेड़ा मिष्ट, चरू चढ़ाते क्षुध टले।
ध्वज की भूमिविशिष्ट, समवसरण पूजूँ सदा।।5।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

दीपक ज्योति उद्योत, आरति करते तम भगे।
ध्वज की भूमि समेत, समवसरण पूजूँ सदा।।6।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित गंध, खेते दशदिश अघ भगे।
ध्वज की भूमि अनिन्द, समवसरण पूजूँ सदा।।7।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की जाति अनेक, अर्पण करते धन बढ़े।
ध्वज की भूमि समेत, समवसरण पूजूँ सदा।।8।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः फलं निर्वपामीतिस्वाहा।

जल फल आदि विशेष, अर्घ चढ़ाते सुख बढ़े।
ध्वज की भूमि समेत, समवसरण पूजूँ सदा।।9।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

सुवरण झारी में भरूँ, गंगा नदि को नीर।
शांतीधारा मैं करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, बेला बकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र स्वात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा –

परमानंद पियूष घन, वर्षा करें जिनंद।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सर्व सुख कंद।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–स्रग्विणी छंद –

जो समोशर्ण में नाथ को पूजते।
वे जनम मृत्यु के दुःख से छूटते।।
पांचवीं ध्वज धरा शोभती है वहाँ।
मैं जजूँ जिन समोसर्ग को नित यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितवृषभदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य प्राणी वहाँ नाथ गुण गावते।
साधुगण नित्य ही आत्म को ध्यावते।।पांचवीं.।।2।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितअजितनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ संभव हरें, सर्व व्याधी व्यथा।
शारदा भी नहीं कह सके गुण कथा।।पांचवीं.।।3।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितसंभवनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ अभिनंदनं को नमूँ भक्ति से।
अन्य से स्वात्म होवे पृथक् युक्ति से।।पांचवीं.।।5।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितसुमतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभ मुक्ति लक्ष्मीपती लोक में।
जो जजें वे लहें मुक्ति सुख शीघ्र में।।पांचवीं.।।6।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितपद्मप्रभसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुपारस प्रभू को सदा वंदते।
वे जरा मृत्यु के दुःख को खंडते।।पांचवीं.।।7।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितसुपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ चंदा प्रभू सर्व संकट हरें।
जो जजें भक्ति से सर्व संपति भरें।।पांचवीं.।।8।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचंद्रप्रभजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदन्तेश को जो जजें भाव से।
स्वात्म पीयूष को वे चखें चाव से।।पांचवीं.।।9।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितपुष्पदंतजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ शीतल वचन चित्त शीतल करें।
जो जजें रोग शोकादि पीड़ा हरें।।
पांचवीं ध्वज धरा शोभती है वहाँ।
मैं जजूँ जिन समोसर्ण को नित यहाँ।।10।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितशीतलजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ श्रेयांस श्रेयोभिवृद्धी करें।
जो जजें नव निधी सुख समृद्धी वरें।।पांचवीं.।।11।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितश्रेयांसजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ वसुपूज्य सुत कल्पतरु श्रेष्ठ हैं।
जो जजें वे जगत में बने श्रेष्ठ हैं।।पांचवीं.।।12।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितवासुपूज्यसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विमलनाथ को वंदते भाव से।
शुद्ध सम्यक्त्व की ज्योति उनमें जगे।।पांचवीं.।।13।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितविमलनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थकृत श्री अनंतेश को पूजते।
वे उपासक गृही धर्म को पूरते।।पांचवीं.।।14।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितअनंतनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धरमनाथ नव लब्धि को धारते।
जो जजें वे नवों निद्धि को पावते।।पांचवीं.।।15।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितधर्मनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति प्रभु की सदा जो करें अर्चना।
वे करें क्रोध मानादि की वंचना।।पांचवीं.।।16।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितशांतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथु जिन की करूँ भक्ति से वंदना।
दुःख दारिद्र संकट रहे रंच ना।।पांचवीं.।।17।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितकुंथुनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अरहनाथ को अर्चते नित्य ही।
वे अरी मोह हन पावें शिव की मही।।पांचवीं.।।18।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितअरनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिजिन मोह यम काम को जीत के।
पाइ निज संपदा मुक्ति को जाय के।।पांचवीं.।।19।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितमल्लिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धिधारी मुनी भी जिन्हें वंदते।
वे मुनी सुव्रतेश्वर विघन खंडते।।पांचवीं.।।20।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितमुनिसुव्रतनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमीनाथ के भक्त ज्ञानी बनें।
मोह रागादि ईर्ष्यादि शत्रू हनें।।पांचवीं.।।21।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितनमिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमि प्रभु सिद्धि कांता पती ख्यात हैं।
जो उन्हें पूजते वे महाभाग हैं।।पांचवीं.।।22।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितनेमिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वप्रभु भक्त के विघ्न निरवारते।
जो जजें क्रोध अरि वे हि संहारते।।पांचवीं.।।23।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर अतिवीर महावीर सन्मति प्रभो।
वो लहें सर्व सुख जो जजें आपको।।पांचवीं.।।24।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितमहावीरजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

ईश चौबीस की अर्चना सौख्यदा।
साधु के हेतु जिनभक्ति है मोक्षदा।।पांचवीं.।।25।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

नव केवल लब्धी धरें, त्रिभुवनपति जिनदेव।
नमूँ नमूँ मस्तक नमां, करूँ चरणयुग सेव।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय श्री जिनवर समवसरण जय पंचम धर्म ध्वजाभूमी।
जय तृतिय कोट से परिवेष्टित, लहरातें ध्वज संयुत भूमी।।
जय जय चारण ऋद्धीधारी, मुनिगण वहाँ विचरण करते हैं।
ऊँचे लहरातें ध्वज सुंदर, सुरनर खगपति मन हरते हैं।।2।।

प्रत्येक दिशा में दश प्रकार चिह्नों से चिह्नित ध्वज सोहें।
प्रत्येक एक सौ आठ एक सौ आठ सर्व जन मन मोहें।।
हैं चिह्न सिंह गज वृषभ गरुड़, अरु मोर चंद्र भास्कर सुंदर।
फिर हंस कमल अरु चक्र कहे, दशविध ये चिन्ह बने मनहर।।3।।

ये महाध्वजायें चार हजार तीन सौ बीस चार दिश की।
ये स्वर्णमयी स्तंभों में संलग्न बनी हैं रत्नों की।।
निजनिज जिनवर ऊँचाई से बारहगुणिते ऊँची मानी।
प्रत्येक महाध्वज के आश्रित लघु इक सौ आठ ध्वजा मानी।।4।।

सब मिलकर चार लाख सत्तर हजार आठ सौ अस्सी हैं।
रत्नों से बनी ध्वजाएं ये फिर भी रेशम की दिखती हैं।।
ये पवन झकोरे से हिलतीं ऊपर अतिशय लहराती हैं।
मानों भव्यों को जिनवर भक्ती करने हेतु बुलाती हैं।।5।।

इस भूमी आगे तृतिय कोट चांदी का बना बहुत सुंदर।
चारों द्वारों के रक्षक सुर हैं भवनवासि भक्ती तत्पर।।
इन गलियों में भी धूप घड़े नवनिधियाँ इच्छित फल देतीं।
नाटकशालायें उभय तरफ दर्शक जन का मन हर लेतीं।।6।।

सब इंद्र चक्रवर्ती नरपति, खगपति धरणीपति भी आते।
इन सभी ध्वजाओं की पूजा1, करके मन में अति हरसाते।।
जैवंत रहे यह जिन वैभव, जैवंतो समवसरण महिमा।
जैवंतो सदा ध्वजा भूमी, जय जय जिनवर की गुण गरिमा।।7।।

–घत्ता –

जय जय श्री जिनवर, करम भरम हर, जय जय श्री जिनगुणमाला।
जय 'ज्ञानमती' धर, शिवरमणीवर दीजे निजगुण मणिमाला।।8।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.8)

कल्पवृक्ष भूमि पूजा

– अथ स्थापना – नरेन्द्र छंद –

समवसरण में छठी भूमि है, कल्पवृक्ष की सुंदर।
चारों दिश में एक-एक, सिद्धार्थ वृक्ष हैं मनहर।।
इनमें चारों दिश इक इक हैं, सिद्धों की प्रतिमायें।
हम पूजें आह्वानन करके, इच्छित फल पा जायें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

चाल –नंदीश्वर पूजा

सीतानदि को जल स्वच्छ, कंचन भृंग भरूँ।
त्रयधारा देते चर्ण, भव भव तपन हरूँ।।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, सिद्धों की प्रतिमा।।
परमानन्दामृत हेतु, पाऊँ गुण गरिमा।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, प्रभु के चरण जजूँ।
पाऊँ निज अनुभव गंध, जिनवर शरण भजूँ।।मैं.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

तंदुल अतिधवल अखंड, धोकर थाल भरूँ।
होवे मुझ ज्ञान अखंड, तुम ढिग पुंज धरूँ।।मैं.।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुलादि सुगंधित पुष्प, लाऊँ चुन चुन के।
पाऊँ निज समरस सौख्य, प्रभु चरणों धरके।।मैं.।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुःसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू है मोतीचूर, अर्पूं तुम सन्मुख।
हो क्षुधा वेदनी दूर, पाऊँ स्वातम सुख।।मैं.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
नशे मोह तिमिर का जाल, ज्योति प्रगटे ही।।मैं.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, अग्नी में खेऊँ।
उड़ जावे चहुँदिश धूम्र, तुम पद को सेवूँ।।मैं.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम, फल से यजन करूँ।
हो निजपद में विश्राम, भव भव भ्रमण हरूँ।।मैं.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल से अर्घ बनाय, रत्न मिलाऊँ मैं।
सिद्धों के चरण चढ़ाय, गुणमणि पाऊँ मैं।।मैं.।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयधारा प्रभु पद देत, हो जग में शांति।
जिनपूजा भवदधि सेतु, मिटती मन भ्रांति।।मै.।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जूही केतकी गुलाब, पुष्पांजलि करके।
पाऊँ निज गुण यशलाभ, चहुंगति दुख हरके।।मै.।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा –

नित्य निरंजन सिद्ध, परमहंस परमातमा।
पाऊं निजगुण सिद्धि, पुष्पांजली चढ़ायके।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल –हे दीनबंधु.....

श्री आदिनाथ का समोसरण विशाल है।
ध्वजभू को वेढ़ रजतमयी तृतिय साल[1] है।।
सिद्धार्थ नमेरू तरू है, कल्पभूमि में।
पूजूँ सदा चउसिद्ध की प्रतिमा प्रसिद्ध मैं।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण सुकल्प भूमि में मंदार तरू है।
उस मूल में चतुर्दिशा में सिद्धबिंब हैं।।
प्रत्येक बिंब के समक्ष मानथंभ हैं।
पूजूँ सदा चउसिद्ध की प्रतिमा अनिंद हैं।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुकल्पभूमि में संतानकांघ्रिपा[2]।
सिद्धार्थ वृक्ष है इसी के चार हों दिशा।।

1. परकोटा। 2. संतानक नाम का वृक्ष।

एकेक सिद्ध बिंब साधु वृंद वंद्य हैं।
पूजूँ सदा इन्हें ये चक्रवर्ति वंद्य हैं।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर सुकल्प भू में पारिजात वृक्ष है।
ये सिद्ध की प्रतिमाओं से सिद्धार्थ सार्थ है।।
जो इनको जजें उनके सर्वकार्य सिद्ध हैं।
पूजूँ सदा चउसिद्ध की प्रतिमा अनिंद हैं।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश अजितनाथ की समवसरण कथा।
भू कल्पतरू पूर्व में नमेरु वृक्ष था।।
सिद्धार्थ नाम इसमें चार सिद्धबिंब हैं।
पूजूँ सदा ये सिद्धबिंब इंद्र वंद्य हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज समोसरण में जो कल्पवृक्ष हैं।
दक्षिणदिशी मंदार नाम सिद्ध[1] अर्थ है।।
उस मूल में चतुर्दिशा में सिद्ध बिंब हैं।
पूजूँ सदा इन्हें ये तीन लोक वंद्य हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतानकाख्य नाम के सिद्धार्थ वृक्ष में।
चारों दिशा में सिद्ध की प्रतिमा नमूँ उन्हें।।
जो पूजते जिनराज समोसर्ण को सदा।
वे स्वर्ग सौख्य भोग के शिव पावें शर्मदा।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सिद्धार्थ वृक्ष।

जो पारिजात नाम के सिद्धार्थ वृक्ष को।
नित पूजते हैं भक्ति से उन सिद्धबिंब को।।
वे गणपती सुरेंद्र चक्रवर्ति वंद्य भी।
अतिशय अनंत सौख्य धाम प्राप्त करें ही।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनेश समोसर्ण में विराजते।
दशविध के कल्पवृक्ष वहां पे हि राजते।।
पूरबदिशी नमेरू सिद्धार्थ वृक्ष है।
पूजूँ उन्हें चउदिश के जो सिद्ध बिंब हैं।।9।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी मनुष्य कल्पवृक्ष के निकट आते।
जो कुछ भी मांगते वो क्षणमात्र में पाते।।
दक्षिण में जो मंदार ही सिद्धार्थ वृक्ष है।
पूजूँ वहाँ चउदिश के जो सिद्ध बिंब हैं।।10।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कल्पभूमि में कहिं पे बावड़ी बनी।
लघु पर्वतों पे देवियाँ क्रीड़ा करें घनी।।
पश्चिम दिशी संतानक सिद्धार्थ वृक्ष है।
पूजूँ वहाँ चउदिश के जो सिद्ध बिंब हैं।।11।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर में पारिजात जो सिद्धार्थ वृक्ष है।
उस मूल में चउदिश में सिद्ध बिंब रम्य हैं।।

प्रतिमा समक्ष मानथंभ जगत वंद्य हैं।
पूजूँ वहां चउदिश के जो सिद्ध बिंब हैं।।12।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

अभिनंदनेश समोसर्ण में विराजते।
उसमें छठी धरा पे कल्पवृक्ष राजते।।
पूरबदिशी नमेरू सिद्धार्थ वृक्ष है।
पूजूँ वहाँ चउदिश के जो सिद्ध बिंब हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

दक्षिणदिशी कहा है मंदार वृक्ष जो।
उसके चतुर्दिशा में चउ सिद्धबिंब जो।।
सुरपति व चक्रवर्ती नरपति से वंद्य हैं।
पूजूँ वहाँ चउदिश भी जो मानथंभ हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

पश्चिम दिशी संतानक सिद्धार्थ वृक्ष है।
उसके चतुर्दिशा में चउ सिद्ध बिंब हैं।।
निज साम्य सुधारस के स्वादी मुनी वहाँ।
वन्दन करें सतत ही हम पूजते यहाँ।।15।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थवृक्ष मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

उत्तर में पारिजात जो सिद्धार्थ वृक्ष है।
मुनिगण से वंद्य नित्य ही सुरगण से पूज्य है।।
इसके चतुर्दिशा में चउ सिद्ध बिम्ब हैं।
हम पूजते इन्हें ये सर्वार्थसिद्ध हैं।।16।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–रोलाछंद –

सुमतिनाथ जिनराज, समवसरण में राजें।
छठी कल्पतरु भूमि, कल्पवृक्ष से साजें।।
पूरब दिश सिद्धार्थ, वृक्ष नमेरू मानों।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।17।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जो भवि पूजें नित्य, सिद्धों की प्रतिमायें।
समवसरण में जाय, अतिशय पुण्य कमायें।।
दक्षिण दिश मंदार, तरु सिद्धार्थ बखानों।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।18।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

साधु मुमुक्षू नित्य, स्वात्मसुधारस पीते।
सिद्धबिंब को ध्याय, कर्म अरीको जीतें।।
पश्चिमदिश सिद्धार्थ, संतानक तरु जानो।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।19।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

श्रावक भक्ति समेत, सिद्धबिम्ब को पूजें।
भवदधि शोषण हेत, करें प्रयत्न सुनीके।।
उत्तर दिश सिद्धार्थ, पारिजात तरु जानो।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।20।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

पद्मप्रभु भगवान, समवसरण में तिष्ठें।
उन अतिशय से भव्य, असंख्य मिलकर बैठें।।

पूरबदिश सिद्धार्थ, वृक्ष नमेरू मानों।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।21।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र सभी परिवार, लेकर वहाँ पे आवें।
भरें पुण्य भंडार, जिनवर गुण को गावें।।
दक्षिणदिशमंदार, तरु सिद्धार्थ बखानों।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन जन सुख परिवार, बढ़ता जिन भक्ती से।
मिले मुक्ति का द्वार, स्वपर भेद युक्ती से।।
पश्चिम दिश सिद्धार्थ, संतानक तरु जानों।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।23।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिले राज्य सन्मान, जग में मान्य कहावें।
जो करते गुणगान, जिनवर भक्ति बढ़ावें।।
उत्तर दिश सिद्धार्थ, पारिजात तरु जानों।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।24।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वजिनराज, भविजन मन तम हरते।
जो पूजें प्रभुपाद अतिशय सुख निधि भरते।।
पूरब दिश सिद्धार्थ वृक्ष नमेरु जानों।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।25।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन वैभव पूर्ण, समवसरण सुखकारी।
भव्य करें भवचूर्ण, नित पूजें मनहारी।।
दक्षिण दिश मंदार, तरु सिद्धार्थ बखानो।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।26।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंतामणि जिनभक्ति, चिंतित फल को देवे।
जो पूजें निज शक्ति, झट प्रगटित कर लेवें।।
पश्चिम दिश सिद्धार्थ, संतानक तरु जानों।
सिद्ध बिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।27।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष की भूमि, मुंह मांगा फल देवे।
दर्श करें जो भव्य, सब उत्तम सुख लेवें।।
उत्तर दिश सिद्धार्थ, पारिजात तरु जानों।
सिद्ध बिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।28।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा प्रभु भगवान, समवसरण नभ में है।
उन वचनामृतपान, करके भव्य नमें हैं।।
पूरबदिश सिद्धार्थ, वृक्ष नमेरू जानों।
सिद्ध बिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।29।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र सदृश आल्हाद, करते जिनवच जग में।
जो जजते चरणाब्ज, झट पहुँचे शिवपद में।।

दक्षिण दिश मंदार, तरु सिद्धार्थ बखानों।
सिद्ध बिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।30।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार समेत, चंद्रसूर्य सुर आवें।
निज पद पावन हेतु, प्रभु पूजें गुण गावें।।
पश्चिम दिश सिद्धार्थ, संतानक तरु जानों।
सिद्ध बिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।31।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रकिरण समश्वेत, जिनवर तन अति सुंदर।
नेत्र हजार बनाय, दर्शन करें पुरंदर।।
उत्तर दिश सिद्धार्थ, पारिजात तरु जानों।
सिद्ध बिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।32।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–वसंततिलका छंद –

श्री पुष्पदंत जिनसर्वहितानुशास्ता।
जो पूजते समवसर्ण हरें असाता।।
है पूर्वदिक् तरु नमेरु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिम्ब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।33।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार वृक्ष प्रतिमा यजते सदा जो।
स्वात्मैक सौख्य संपति भरते सदा वो।।
सिद्धार्थ वृक्ष सुखदायि नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिम्ब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतानकाख्य तरु में प्रतिमा नमें जो।
संसार घोर वन में न कभी भ्रमें वो।।
सिद्धार्थ वृक्ष प्रतिमा नमते मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।35।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पारिजात तरु की प्रतिमा जजें हैं।
वे रोग शोक दुख संकट से बचे हैं।।
सिद्धार्थ वृक्ष सुखदायि नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलेश वचनामृत तापहारी।
जो पूजते समोसर्ण न हों दुखारी।।
है पूर्वदिक् तरु नमेरु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेन्द्रा।।37।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतानकाख्य तरु में प्रतिमा यजें जो।
संतान मोह अरि को उनकी नशे जो।।
है कल्पभूमि सिद्धार्थ नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।38।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतानकाख्य तरु में प्रतिमा यजें जो।
संतान मोह अरि को उनकी नशे जो।।

है कल्पभूमि सिद्धार्थ नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।39।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पारिजात तरु की प्रतिमा जजें हैं।
वे पाप ताप हर स्वात्म सुधा चखे हैं।।
है कल्पभूमि सिद्धार्थ नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।40।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ जिनका जु समोसरण है।
सिद्धार्थ वृक्षदिक् पूर्व अपूर्व सो है।।
रम्या नमेरु प्रतिमा नमते मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।41।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार वृक्ष दिश दक्षिण में सुहाता।
जो भव्य नित्य जजते तम भाग जाता।।
भक्ती करें सम सुधा रसिका मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।42।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धार्थ वृक्ष संतानक को जजें जो।
संतान सौख्य धन धान्य समृद्धि ले वो।।
ऋद्धीधरा सतत ध्यान धरें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।43।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पारिजात तरु की प्रतिमा भजे हैं।
वे जन्म मृत्यु भय से निश्चित छुटे हैं।।
भक्ती भरे स्तुति पढ़ें नित ही मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।44।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य तनु लाल सरोज जैसा।
सुंदर लिखे समवसर्ण अपूर्व वैसा।।
है पूर्वदिक् तरु नमेरु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।45।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार वृक्ष फलदायि अपूर्व सोहे।
जैनेन्द्र बिंबयुत मानस्तंभ मोहे।।
सर्वार्थसिद्धि सुख हेतु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।46।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतानकादि तरु पश्चिम में खड़ा है।
इंद्रादि पूज्य गुण अतिशय से बड़ा है।।
आनंद धाम पद हेतु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।47।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है पारिजात तरु उत्तर में अनोखा।
जो पूजते फल लहें अतिशायि चोखा।।

आत्मा पवित्र करके नमते मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।48।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–भुजंगप्रयात छंद –

समोसर्ण को पूजते भक्ति से जो।
लहें सौख्य संपद नवों निद्धि को वो।।
नमेरू तरू में जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।49।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

विमलनाथ का है समोसर्ण सोहे।
दिशा दक्षिणी वृक्ष मंदार मोहे।।
चतुर्दिक् तरूके जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।50।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सुरासुर व किन्नर सदा कीर्ति गाते।
बृहस्पति गुणों का नहीं पार पाते।।
सुसंतानकं के जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।51।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सुरों की वहाँ टोलियाँ आ रही हैं।
करें नृत्य भी अप्सरा गा रही है।।
जजूँ [1]पारिजातागा के सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।52।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

1. पारिजात नाम का अग – वृक्ष।

अनंताधिपति का समोसर्ण पूजें।
नमेरू तरू को जजें पाप धूजें।।
सुसिद्धार्थ के मैं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

हरो दुःख मेरे अनंतों भवों के।
हमें सौख्य देवो अनंते स्वयं के।।
सुमंदार के मैं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।54।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

महामोह अंधेर छाया हृदय में।
उसे दूर कर ज्ञान ज्योती भरूँ मैं।।
सुसंतानकांघ्रिप[1] जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।55।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

अनंते चतुष्टय कि लक्ष्मी धरे हैं।
अठारह महादोष तुमसे परे हैं।।
महा पारिजातं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।56।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

धरमनाथ का है समोसर्ण दीपे।
वहाँ पूर्वदिक् में नमेरू तरू पे।।

1. अंघ्रिप-वृक्ष।

नमूँ शीश नाके जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।57।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समोसर्ण में भूमि छट्ठी दिपे हैं।
नमूँ नित्य जो बिंब मंदार पे हैं।।
जजें इंद्र मैं भी जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।58।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

भरी कल्पतरु से छठी भूमि दीखे।
सभी के वहाँ पे मनोरथ फले थे।।
महावृक्ष संतानवंâ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सुसिद्धार्थ तरु पारिजातं नमें जो।
चतुर्दिक्क प्रतिमा हरें कर्म सब वो।।
फलें सर्ववांछित जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।60।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

प्रभो शांति ईश्वर जगत् शांति कर्ता।
नमेरू तरू को नमूँ सौख्य भर्ता।।
पुनर्जन्म नाशों जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।61।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मुनीचित्तपंकज खिलाते रवी हो।
महाशांतिदाता विधाता शशी हो।।
सुमंदार तरु के जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।62।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समोसर्ण शांतीश का सौख्यकारी।
वहाँ कल्पभूमी फलें इष्ट भारी।।
सुसंतानकांघ्रिप जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।63।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

महावृक्ष है पारिजाताख्य उसमें।
चतुर्दिक्क सुरपूज्य प्रतिमा उसी में।।
गणीश्वर नमें मैं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–दोहा –

कुंथुनाथ जिनराज का, समवसरण अभिराम।
छट्ठी भूमि नमेरु के, जजूँ सिद्ध सुखधाम।।65।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समवसरण दक्षिणदिशी, तरु मंदार महान्।
जजूँ सिद्ध प्रतिमा सदा, पाऊँस्वात्मनिधान।।66।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समवसरण पश्चिमदिशी, सन्तानक सिद्धार्थ।
सिद्धि बिंब चउदिश जजूँ, पूर्ण फलें सर्वार्थ।।67।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश में कल्पतरु, भूमि सर्व हितकार।
पारिजात तरु बिंब को, जजूँ सर्व सुखकार।।68।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिननाथ का, समवसरण जग श्रेष्ठ।
जजूँ सिद्ध प्रतिमा सदा, तरु नमेरु सब ज्येष्ठ।।69।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थनाथ को पूजते, अंत मिले जिननाम।
सिद्धारथ मंदार के, सिद्ध जजूँ गुणधाम।।70।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ तीर्थपति अर्चना, खंडित हो यमराज।
संतानक तरु बिंब को, जजत मिले निज राज्य।।71।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर जिनवर की भक्ति से, मुक्तिरमा वश होय।
पारिजात तरु बिंब को, जजूँ स्वात्म सुख होय।।72।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ का जगत् में, समवसरण अतिरम्य।
तरु नमेरु के बिंब को, जजत मिले शिवशर्म।।73।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहराज यमराज को, जीत बने जगदीश।
दक्षिणदिश मंदार के, बिंब जजूँ नत शीश।।74।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाभाव से क्रोध को, किया निमूल जिनेश।
संतानक तरु अपरदिश, जजूँ मिटे भव क्लेश।।75।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ पाप को नष्ट कर, पाया त्रिभुवन राज्य।
पारिजात तरु बिंब को, जजत लहूँ निजराज्य।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत भगवान का समवसरण सुरवंद्य।
तरु नमेरु के बिंब को, पूजूँ जग अभिनंद्य।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ सदा जिनदेव का, समवसरण अतिशायि।
सिद्धबिंब मंदार के, जजूँ सर्व सुखदायि।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन जनता पूज्य है, समवसरण गुणधाम।
संतानक तरु बिंब को, जजूँ मिले निजधाम।।79।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामोह अज्ञानहर, ज्ञान ज्योति से पूर्ण।
पारिजात के बिंब को, जजत करूँ यम चूर्ण।।80।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

नमि जिन समवसरण अभिरामा, जजत भव्य बनते निष्कामा।
तरु नमेरु के चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।81।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिजिनवर दुख संकट हारी, जो जन नमें वरें शिव नारी।
तरु मंदार चतुर्दिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।82।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ स्वात्मसुख भोगें, जो जन नमें परम सुख भोगें।
संतानक तरु चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।83।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिजिन पाद सरोज जजें जो, सर्व उपद्रव दूर भगें जो।
पारिजात तरु चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।84।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ करुणा के सिंधू, जजत चखूँ समरस सुखबिंदू।
तरु नमेरु के चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।85।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवललना के जिनवरस्वामी, त्रिभुवन के प्रभु अंतर्यामी।
तरु मंदार चतुर्दिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।86।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. बेध करूँ – नष्ट करूँ।

जगत्पूज्य सुरनर खग ईशा, जो पूजें सो लहें मनीषा।
संतानक तरु चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।87।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्मेन्द्र नरेन्द्र फणीन्द्रा, जिनचरणांबुज नमें मुनींद्रा।
पारिजात तरु चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।88।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण जिन पारसनाथा, पद्मावति फणपति नत माथा।
तरु नमेरु के चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।89।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण सुरवंद्य जिनंदा, वंदत सुरनर खग रविचंदा।
तरु मंदार चतुर्दिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।90।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमठ मान भंजन जिनराजा, भविजन पूजें निजहित काजा।
संतानक तरु चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।91।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलियुग पाप दलन जगख्याता, तुम यश गातीं शारद माता।
पारिजात तरु चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।92।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण जिनगुण मणिमाली, जजत बने नर महिमाशाली।
तरु नमेरू में सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।93।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में राजें वीरा, महावीर सन्मति अतिवीरा।
तरु मंदार सिद्ध की मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।94।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्द्धमान जिनवर को वंदे, पाप अद्रि हों सौ सौ खंडे।
संतानक तरु सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।95।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोत्तम कल्पद्रुम वीरा, बिन मांगे फल पावें धीरा।
पारिजात तरु सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।96।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-गीता छंद –

इस कल्पतरु की भूमि में, सिद्धार्थ तरु चारों दिशी।
श्री सिद्धबिंब विराजते, प्रत्येक तरु के चहुँदिशी।।
एकेक मानस्तंभ हैं, प्रत्येक प्रतिमा के निकट।
उनमें चतुर्दिश बिंब जिनवर पूजते ही शिव निकट।।97।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पतरुभूमिसंबंधिषण्णवतिसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुरशीत्यधिकत्रिंशतसिद्धप्रतिमातत्संबंधितावत्प्रमाणमानस्तम्भचतुर्दिक्-विराजमानषट्त्रिंशदधिकपंचदशशतजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

कल्पवृक्ष चिंतामणी, जिनभक्तों के दास।
गाऊँ जिन गुणमालिका, पहुँचे जिनवर पास।।1।।

चाल –हे दीन बंधु.....

धनि धन्य सिद्ध वृंद जो सिद्धालयों में हैं।
धनि धन्य सिद्ध बिंब जो सिद्धार्थ तरु में हैं।।
धनि धन्य तीर्थकृत समोसरण महान हैं।
धनि धन्य समोसरण स्वात्म गुणनिधान हैं।।2।।

जो कल्पतरु नाम की छट्टी धरा वहाँ।
हैं कल्पवृक्ष दशविधा चउदिश दिखे वहाँ।।
जन मांगते जो कुछ भी वे वृक्ष दे रहे।
सुरगण वहाँ पे आके क्रीड़ा में रत रहें।।3।।

पानांग वृक्ष बहुते विधपेय दे रहे।
तूर्यांग वाद्यवीणा मृदंग दे रहे।।
तरु भूषणांग बहुत से गहने दिया करें।
वस्त्रांग बहुत वस्त्र धोतियाँ दिया करें।।4।।

तरु भोजनांग विविध भोज्य वस्तु दे रहे।
तरु आलयांग महल कोठियाँ भी दे रहे।।
दीपांग दीप दे रहे सुंदर प्रकाशयुत।
तरु भाजनांग थाल आदि पात्र दें विविध।।5।।

मालांग वृक्ष सुरभि पुष्पमाल दे रहे।
तेजांग वृक्ष कोटि सूर्य ज्योति हर रहे।।
उस भूमि में कहीं पर ऊँचे भवन बनें।
कहिं बावड़ी जलों में फूले कुसुम घनें।।6।।

प्रत्येक दिश में इक इक सिद्धार्थ वृक्ष हैं।
तरु मूल में चतुर्दिक् श्री सिद्ध बिम्ब हैं।।
प्रत्येक बिम्ब आगे इक मानथंभ हैं।
ये तीन कोट सहिते त्रयपीठ उपरि हैं।।7।।

एकेक समवसृति में, सिद्धार्थ चार-चार।
एकेक तरु में सिद्धों के बिंब चार-चार।।
एकेक मानथंभों में बिंब चार-चार।
सिद्धों के बिंब सोलह, चौसठ सु जिनाकार।।8।।

चौबीस समवसृति में, तरु छयान्वे सिद्धार्थ।
वे तीन सौ चुरासी, तरु सिद्धबिंब सार्थ।।
इतने हि [1]मानथंभों, में बिंब चतुर्दिश।
वे बिंब सर्व इक हजार पाँच सौ छत्तिस।।9।।

सौ इंद्र भक्ति से वहाँ पे वंदना करें।
नर नारियाँ भि द्रव्य लेय अर्चना करें।।
सुर अप्सरायें नित्य वहाँ नृत्य कर रहीं।
सुर किन्नरी वीणा व बांसुरी बजा रहीं।।10।।

चारों गली में चार चार नाट्य[2] शालिका।
बत्तीस रंगभूमियुक्त पांच खन युता।।
प्रत्येक में बत्तीस हि ज्योतिष्क देवियाँ।
वे नृत्य करें भक्ति भरीं, पुण्य देवियाँ।।11।।

इस भूमि के आगे चतुर्थ वेदिका बनी।
गोपुर पे देव भावन रक्षा करें घनी।।
प्रतिद्वारमंगलद्रव्यइक सौ आठ इकसौ आठ।
प्रत्येक तोरण द्वार पे नवनिधि के रहें ठाठ।।12।।

बहुविध अनेक वर्णना कोई न कह सके।
धनपति वहाँ जिनके प्रभाव से हि रच सके।।
मैं सिद्ध बिंब की सदैव वंदना करूँ।
तीर्थेश भक्ति से दुखों को रंच ना धरूँ।।13।।

1-2. तिलोयपण्णत्ति से।

–दोहा –

तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।
ज्ञानमती की याचना, पूरो नाथ अबार।।14।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पभूमिसंबंधिसर्वसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानसिद्धप्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.9)

सातवीं भवन भूमि पूजा

–अथ स्थापना– नरेन्द्र छंद–

भवन भूमि में भवन बने हैं, अतिशय ऊँचे-ऊँचे।
इनमें देव देवियाँ किन्नर, क्रीड़ा करने पहुँचे।।
चारों गतियों में नव-नव, स्तूप बने मणियों के।
उनमें रत्नमयी जिनप्रतिमा, पूजूँ श्रद्धा करके।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-वसंततिलका छंद –

गंगा नदी सलिल उज्ज्वल भृंग में है।
धारा करूँ जिनपदाम्बुज में रुची से।।
अर्हंत सिद्ध प्रतिमा नित पूजहूँ मैं।
नौ लब्धिवत् नव नवों स्तूप में जो।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरि केशर घिसी भर के कटोरी।
चर्चन करूँ जिनपदाम्बुज में रुची से।।अर्हंत.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धुले धवल लेकर थाल भर के।
मैं पुंज धर जिनपदाम्बुज में रुची से।।अर्हंत.।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा जुही वकुल केतकि पुष्प लेके।
अर्पूं सदा जिन पदाम्बुज में रुची से।।
अर्हंत सिद्ध प्रतिमा नित पूजहूँ मैं।
नौ लब्धिवत् नव नवों तूप में जो।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू सुहाल बरफी भर थाल में ले।
अर्पण करूँ जिन पदाम्बुज में रुची से।।अर्हंत.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती दश दिश प्रकासे।
आर्ती उतार कर पूजूँ मैं रुची से।।अर्हंत.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊं सुगंधि वर धूप सुधूप घट में।
हों कर्म भस्म उड़ती बहु धूम्र दीखे।।अर्हंत.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता बदाम अखरोट भराय थाली।
अर्पण करूँ सुफल हेतु तुम्हें फलों को।।अर्हंत.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ उसमें बहु रत्न ले के।
अर्पण करूँ रत्नत्रय फल लाभ हेतू।।अर्हंत.।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिनवनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पद्म सरोवर नीर ले, जिनपद धार करंत।
तिहुंजग में मुझमें सदा, करो शांति भगवन्त।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंधि कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

पुण्यराशि जिनबिंब, अतिशय महिमा को धरें।
जो पूजें हर डिंभ, वो न भ्रमें भव वन विषें।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद –

श्री वृषभदेव की पूर्व गली में, नव स्तूप बखाने।
उसमें जिन सिद्धों की प्रतिमा, भविजन के अघ हाने।।
नव पदार्थ की श्रद्धा करके सम्यक्रत्न धरूँ मैं।
नव केवल लब्धी हेतू ही, नित प्रति यजन करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की दक्षिण वीथी, नव स्तूप खड़े हैं।
उनमें जिन प्रतिमा को पूजत, धन जन सुयश बढ़े हैं।।नव.।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में तृतिय गली में, नवस्तूप मनोहर।
गणधर मुनिगण जिनप्रतिमा को, वंदत सर्व तमोहर।।नव.।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनभूमि चौथी वीथी में नव स्तूप दिपे हैं।
पूजत ही दुख दारिद संकट, तन मन व्याधि खिपैहैं।।
नव पदार्थ की श्रद्धा करके सम्यक्रत्न धरूँ मैं।
नव केवल लब्धी हेतू ही, नित प्रति यजन करूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के समवसरण में, भवन भूमि सप्तम है।
प्रथम गली में सुर नर वंदित, नव स्तूप उत्तम हैं।।नव.5।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में द्वितिय गली में, नवस्तूप अति ऊँचे।
मुनिगण प्रदक्षिणा दे करके, वंदत निज में पहुँचे।।नव.।।6।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव स्तूप रत्नों से निर्मित, मणिमय जिन बिंबों युत।
अष्ट द्रव्य से पूजन करते, भविजन बहु भक्तीयुत।।नव.।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मराग मणियों से निर्मित, नवस्तूप अति शोभे।
जिन प्रतिमा को पूजें भविजन, सुर किन्नर मन लोभें।।नव.।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवजिन के समवसरण में, भवनभूमि भवनों युत।
दर्शन करते प्रथम गली में, नव स्तूप बिंबों युत।।नव.।।9।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. नष्ट होती है।

समवसरण में भवन भूमि में, ऊँचे भवन बने हैं।
द्वितीय गली में नव स्तूप की, प्रतिमा भविक नमें हैं।।नव.।।10।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन भूमि के महलों में नित, सुर जिन न्हवन रचाते।
नृत्य करें बहु नव स्तूप की जिन प्रतिमा गुण गाते।।नव.।।11।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो त्रय चार पांच खन महलों, में सुर खग रहते हैं।
जिनगुण गाते नवस्तूप की प्रतिमा को यजते हैं।।नव.।।12।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन प्रभु सवसरण में, भवन भूमि अतिसुन्दर।
वापी पर्वत बने मनोहर, नवस्तूप प्रतिमा धर।।नव.।।13।।

ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन भूमि में उपवन सुंदर, बहुविध वृक्ष फले हैं।
द्वितिय भूमि में नवस्तूप में, जिनवर बिंब भले हैं।।नव.।।14।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में नवस्तूप में, चित्र विचित्रित रचना।
अर्हत सिद्ध बिंब को नमते, भव भव दुख से बचना।।नव.।।15।।

ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनभूमि में बावड़ियों में, सुंदर कमल खिले हैं।
नव स्तूप को नमते मुनि के, चित्त सरोज खिले हैं।।नव.।।16।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पद्धड़ी छंद –

जिनसुमतिनाथ का समवसर्ण, उत भवनभूमि है विविध वर्ण।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।17।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में भवन भूमि, वंदन से मिलती मोक्ष भूमि।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।18।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिदक्षिणवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन भवन भूमि है सौख्यकार, मुनिगण वहाँ करते नित विहार।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।19।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण में भवन पंक्ति, जहं रमती हैं सुर मनुज पंक्ति।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।20।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनपद्मप्रभू का समवसर्ण, सब भव्यों ने ली वहाँ शर्ण।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।21।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जिन पूजें तज सकल आधि, वो पा लेते अंतिम समाधि।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो समवसरण दर्शन करंत, वो भव्य भवोदधि को तरंत।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।23।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में महलतुंग, सब जन का करते मानभंग।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।24।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सुपार्श्व का समवसर्ण, उसमें रचना है विविध वर्ण।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।25।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो समवसरण से करे प्रेम, उनके हर क्षण ही सकल क्षेम।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।26।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में सभी जंतु, सब वैर भाव तज बने बंधु।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।27।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में साधु वृंद, ले स्वात्म सुधारस का अनंद।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।28।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चंद्रनाथ से जग सनाथ, गणधर नित नमते नमां माथ।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।29।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में भवन भूमि, वंदन से मिलती सिद्धभूमि।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।30।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदप्रभु हरते जगत ताप, उन नाम मंत्र सब हरे पाप।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।31।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन से होते कर्मक्षार, जिनसमवसरण अतिशय अपार।
स्तूप नवों हैं गगनचुंब, मैं नित पूजूँ जिन सिद्ध बिंब।।32।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

पुष्पदंत त्रिभुवन भगवंत, समवसरण उन अतिशयवंत।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।33।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण सुखसार, भविजन को शिवसुख दातार।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श गंध रस वर्ण विहीन, श्री जिननाथ विविध गुणलीन।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।35।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम परमात्म समान, जिनवर भक्ति करे भगवान।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल समवसरण अभिराम, तुम पद भक्त लहे निजधाम।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।37।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतल जग शीतल करें, साम्य सुधारस वर्षा करें।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।38।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय चिंतामणि भगवान, भक्त लहे इच्छित वरदान।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।39।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक प्रकाशी ज्ञान, ज्ञान मेरा कैवल्य समान।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।40।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में रहें जिनेश, श्री श्रेयांस जगत् परमेश।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।41।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर जिनगुण में लवलीन, आत्म सुधारस पिये प्रवीण।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।42।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर की दिव्यध्वनि खिरे, परमानंद सुख झरना झरे।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।43।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांस त्रिभुवन के नाथ, द्वादश गण को करें सनाथ।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।44।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य वासवगण[1] पूज्य, भक्त बने भी क्षण में पूज्य।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।45।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण जिनगुणमणिराशि, पूजत पावें निज गुणराशि।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।46।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर भवन भूमि फलदायि, वंदत पुण्य बंधे अतिशायि।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।47।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य को पूजें भव्य, निजसमरस सुख पावें नव्य।
नव स्तूप में जिनवर बिंब, पूजत कटें कर्म कटुनिंब।।48।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद –

श्री विमलनाथ जी के समोसर्ण में,
सातवीं भूमि नित सौख्य देवे हमें।
स्तूप के बिंब को पूजते शोक ना,
इष्ट वीयोग आनिष्ट संयोग ना।।49।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. देवगण।

जो समोसर्ण में वंदते नाथ को।
प्राप्त हों स्वात्म की सौख्य संपत्ति को।।स्तूप.।।50।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्षमाभाव से क्रोध को वारते।
स्वात्म पीयूष आनंद वो पावते।।स्तूप.।।51।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मृदूभाव से मान को मारते।
इन्द्र से भी सदा मान वो पावते।।स्तूप.।।52।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अनंतेश की दिव्यध्वनि को सुनें।
वे स्वयं शुद्ध निज तत्त्व को ही गुने।।स्तूप.।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सदा भक्ति से नाथ गुण गावते।
इन्द्र भी प्रीति से उन सुयश गावते।।स्तूप.।।54।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो करें नृत्य संगीत भक्ती भरे।
इन्द्र उनके निकट नृत्य तांडव करें।।स्तूप.।।55।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रभू पास में आ चमर ढोरते।
इन्द्र भी उनके ऊपर चमर ढोरते।।स्तूप.।।56।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थेश वीहार करते भले।
धर्म का चक्र उन आगे आगे चले।।
स्तूप के बिंब को पूजते शोक ना,
इष्ट वीयोग अनिष्ट संयोग ना।।57।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तुम्हारे उपरि छत्र को धारते।
इन्द्र भी उसके ऊपर छतर लावते।।स्तूप.।।58।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो करें नित्य अभिषेक जिनबिंब का।
इन्द्र करते न्हवन मेरु पे उन्हीं का।।स्तूप.।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तूप के बिंब की जो करें अर्चना।
आधि व्याधी कभी भी उन्हें रंच ना।।स्तूप.।।60।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति तीर्थेश चक्रीश कामेश हैं।
शांति के हेतु हम नाथ को पूज हैं।।स्तूप.।।61।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ शांतीश का जो समोसर्ण है।
वो भवांभोधि तारण तरण एक है।।स्तूप.।।62।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तूप पे छत्र फिरते चंवर ढुर रहें।
तोरणों पुष्प हारों से शोभित रहें।।स्तूप.।।63।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तूप के बिंब को नित्य मुनि वंदते।
जो नमें वे महामोह को खंडते।।स्तूप.।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चामर छंद –

कुंथुनाथ का समोसरण महान् विश्व में।
सातवीं मकान पंक्ति भूमि सौख्य दे हमें।।
स्तूप के अर्हंत सिद्धबिंब को सदा जजूँ।
ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य स्वात्म संपदा भजूं।।65।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ भक्ति कर्म पंक धोवने समर्थ है।
स्थान सप्त परम को प्रदान हेतु दक्ष है।।स्तूप.।।66।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य वंदना करें जिनेश की शतेन्द्र भी।
आप भक्ति से पशू व नारकी न हों कभी।।स्तूप.।।67।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक नाथ भक्ति सर्व पाप नाश हेतु है।
घोर भव समुद्र पार हेतु एक सेतु है।।स्तूप.।।68।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ अर जिनेश का समोसरण अपूर्व है।
आप भक्ति भाव से रचे उसे कुबेर हैं।।
स्तूप के अर्हंत सिद्धबिंब को सदा जजूँ।
ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य स्वात्म संपदा भजूं।।69।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप पादपद्म का शरण लिया मुनीश ने।
आत्म सौख्य प्राप्ति हेतु बार बार ही नमें।।स्तूप.।।70।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य कर्म से विहीन आत्मा स्वतंत्र है।
नाथ भक्ति के प्रताप आत्मा पवित्र है।।स्तूप.।।71।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वकर्म से छुड़ाय मोक्ष में पठावते।
ध्यान आपका धरें निजात्म धाम पावते।।स्तूप.।।72।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ का समोसरण त्रिलोक ख्यात है।
नाथ के अनंत गुण उन्हीं में आत्मसात् हैं।।स्तूप.।।73।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप नाम मात्र चिंतितार्थ वस्तु दे सके।
आप ध्यान से हि जन्म की परंपरा मिटे।।स्तूप.।।74।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काम मल्ल मोहमल्ल मृत्युमल्ल हैं बड़े।
आपका प्रभाव देख आप के चरण पड़ें।।स्तूप.।।75।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तूप आप देह से ही बारहे गुणे कहे।
पद्मराग से बने मुनींद्र वंद्य हो रहे।।स्तूप.।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ मुनिसुव्रतेश का समोसरण दिपे।
नौ निधी वहाँ प्रतेक द्वार पे सदा दिखें।।स्तूप.।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु भी महाव्रतादि ले पवित्र हो रहे।
आत्म तत्त्व शुद्ध ध्याय कर्म पंक धो रहे।।स्तूप.।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ पाद वंदना अनंत पाप खंडती।
स्वर्ग सौख्य देय गुण अनंत पे भि मंडती।।स्तूप.।।79।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सदा चित्त में आप को धारते।
वे महात्मा पुरुष सर्व को तारते।।स्तूप.।।80।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

नमिजिन त्रिभुवन वंद्य, समवसरण में राजते।
नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।81।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजको निज में ध्याय, मुक्तिरमा को वश किया।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।82।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे मोह का खंड, जिन प्रतिमा जिन सारखी।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।83।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजानंद रसमग्न, फिर भी तिहुं जग देखते।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।84।।

ॐ ह्रीं नमिजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ जग वंद्य, समवसरण महिमा प्रगट।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।85।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा आप अचिन्त्य, गणधर भी नहिं कह सके।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।86।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम दर्शन से रम्य, सुख संपति नवनिधि मिले।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।87।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानंद निमग्न, परम ज्योति को धारते।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।88।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ भगवंत, समवसरण त्रिभुवन शरण।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।89।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग शोक दुख द्वंद, तुम भक्ती से दूर हों।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।90।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैर कलह जगनिंद्य, दूर भगे तुम भक्ति से।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।91।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलियुग कष्ट अनंत, नश जाते तुम नाम से।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।92।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर भगवंत, कल्पवृक्ष दाता तुम्हीं।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।93।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भविजन वहां असंख्य, समवसरण में बैठते।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।94।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धारथ के नंद, त्रिभुवन जन के हो पिता।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।95।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण जग वंद्य, भवन भूमि से शोभता।
नव स्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।96।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद –

प्रत्येक गली के नव नव ये, चारों के सब छत्तीस हुये।
चौबीस समवसृति के स्तूप, ये आठ शतक चौसष्ठ हुये।।
शिर छत्र फिरें अरु चंवर ढुरें, वंदनवारों से शोभ रहें।
हम इनकी जिन प्रतिमाओं को, नित अर्घ चढ़ाकर कर्म दहें।।97।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिमध्यवीथीसंबंधि-चतुषष्ट्यधिकअष्टशतस्तूपमध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

परमब्रह्म परमातमा, परमपिता परमेश।
गाऊँ तुम गुण मालिका, मिटे सकल भवक्लेश।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय जिनवर के समवसरण, जय भवन भूमियाँ मनहारी।
जय जय स्तूप के सिद्धबिंब, जय जय इनकी महिमा न्यारी।।
जय जय स्तूप पर छत्र फिरें, बहुवर्णध्वजायें फहरातीं।
जय मंगल द्रव्य वहां रक्खें, रत्नों की रचना मनभाती।।2।।

इन भवन भूमियों में ऊँचे, बहु महल बने सुर युगलों के।
संगीत नृत्य से देव वहां, अभिषेक करें जिनबिंबों के।।
कहिं स्वर्ण हिंडोले में बैठीं, देवी सब झूला झूल रहीं।
कहिं खिले कमल से हंसों से, वापी सब जन मन मोह रहीं।।3।।

प्रत्येक गली के मध्य बने, स्तूप विविध रत्नों के हैं।
उनके मधि मकराकार धरें, सौ-सौ तोरण रत्नों के हैं।।
ये अपने अपने जिनवर से, बारह गुणिते ऊँचे माने।
इनमें जिनबिंब बने मणिमय, उनकी पूजा भवदुख हाने।।4।।

वहं छत्र चंवर भृंगार कलश, पंखा ठोना ध्वज दर्पण हैं।
ये मंगल द्रव्य आठ मानें, प्रत्येक एक सौ आठ रहें।।
इन स्तूपों के आसपास, मुनियों के सभाभवन दिखते।
जो पूजें इन सब मुनियों को, उनके सब पाप अरी भगते।।5।।

जहाँ प्रभु का समवसरण रहता, षट्ऋतु के फल फल जाते हैं।
सब ऋतु के फूल खिले सुंदर, दश दिश को भी महकाते हैं।।
सब जात विरोधी क्रूर पशू, आपस में मिलकर रहते हैं।
सुर मनुज पुराने वैर छोड़ आपस में प्रीति करते हैं।।6।।

यह समवसरण का ही प्रभाव, वहाँ जाते भव्य कहाते हैं।
मिथ्यात्व हलाहल विष उगलें, सम्यक्त्व निधी पा जाते हैं।।
निज में ही निज को पाकरके, निजआत्मा को ही ध्याते हैं।
फिर 'ज्ञानमती' पूरी करके, क्रम से शिवपद पा जाते हैं।।7।।

–दोहा –

धन्य धन्य जिनराज तुम, धन्य धन्य तुम भक्त।
धन्य तुम्हारी अर्चना, धन्य धन्य यह वक्त।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितभवनभूमिसंबंधिसर्वस्तूपमध्य-विराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.10)
आठवीं श्रीमंडप भूमि पूजा

– अथ स्थापना – नरेन्द्र छंद –

रत्नों के खंभों पर सुस्थित, मुक्तामालाओं से सुन्दर।
श्री मंडपभूमि आठवीं है, द्वादशगण रचना से मनहर।।
इनमें जो मुनी आर्यिका हैं, हम उनका वंदन करते हैं।
इन समवसरण युत जिनवर का, आह्वानन कर हम यजते हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितसमवसरणविभूतिधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –चाल –नंदीश्वर पूजा –

यमुना नदि का शुचि नीर, झारी पूर्ण भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि, तीर, तुमपद धार करूँ।।
श्री मंडप भूमि महान्, बारह गण धारे।
हो स्वपर भेद विज्ञान, पूजूँ रुचि धारे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सार, गंध सुगंध करे।
चर्चूं जिनपद सुखकार, मन की तपन हरे।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम अक्षत लाय, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज अक्षय पद को पाय, यहाँ न आऊँ मैं।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला मचकुंद गुलाब, चुन चुन के लाऊं।
अर्पूं जिनवर चरणाब्ज निजसुख यश पाऊँ।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं लड्डू मोतीचूर, थाली भर लाऊँ।
हो क्षुधा वेदना दूर, अर्पत सुख पाऊँ।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय दीपक की ज्योति, जग अंधेर हरे।
मुझ मोह तिमिर हर ज्योति, ज्ञान उद्योत करे।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेऊँ अगनी में।
उड़ती दशदिश में धूम्र, फैले यश जग में।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंगूर अनार, श्रीफल भर थाली।
अर्पूं जिन आगे सार, मनरथ नहिं खाली।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ बनाय, उसमें रत्न मिला।
जिन आगे नित्य चढ़ाय, पाऊँ सिद्ध शिला।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पद्म सरोवर नीर ले, जिनपदधार करंत।
तिहुंजग में मुझमें सदा, करो शांति भगवंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंधि कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा –

त्रिभुवन का साम्राज्य, प्राप्त किया कर्मारि हन।
मिले निजातम राज्य, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

श्री वृषभदेव का समवसरण, बारहयोजन[1] मुनि गाते हैं।
उसमें श्रीमंडपभूमी में, बारह कोठे बन जाते हैं।।
मुनि आर्या देव देवियां नर, पशु गण अगणित वहाँ बैठे हैं।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, ये भव भव के दुख मेटें हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीवृषभदेवसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ का समवसरण साढ़े ग्यारह योजन मानों।।
चहुँदिश माला की सुरभी से, भविजन यश फैल रहा मानों।।
सोलह स्फटिक दिवालों से चउ गली व बारह कोठे हैं।
जो पूजें उनके धनधान्यों से भर जाते सब कोठे हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीअजितनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनवर का समवसरण, ग्यारह योजन का व्यास धरे।
श्री मंडपभूमी में मोती, माला वंदनवारादि भरें।।
इस मंडप में इक साथ तीन, जग के सब जीव समा सकते।
यह अतिशय जिनवर का ही है, हम पूजत निजपद सुख लभते।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीसंभवनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन जिनका समवसरण, साढ़े दस योजन विस्तृत है।
जो कभी नहीं मुरझायें ऐसी, पुष्पमाल से सुरभित है।।

1. एक योजन चार कोस का होता है।

सुर असुर असंख्यातों इसमें, बाधा बिन सुख से रहते हैं।
यह जिनवर का माहात्म्य अहो, पूजत ही विघ्न विनशते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीअभिनंदनजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्री सुमतिनाथ का समवसरण, दश योजन का मुनि कहते हैं।
श्रीमंडप की दीवालों पर, त्रिभुवन पदार्थ भी झलके हैं।।
स्फटिकमणी की दीवालें, बहुचित्र विचित्र शोभती हैं।
हम पूजें अर्घ चढ़ाकर ये, शिव लक्ष्मी को भि मोहती हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीसुमतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपद्मप्रभू का समवसरण, साढ़े नव योजन माना है।
उसमें श्रीमंडप गगनसदृश, अतिशय उत्तुंग बखाना है।।
चौंसठ ऋद्धीधारी गणधर, पहले कोठे में राज रहे।
हम पूजें श्रीमंडपभूमी, निज समरस सुधा प्रवाह बहे।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीपद्मप्रभजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के खंभों पर ठहरा, श्रीमंडप सार्थक नाम धरे।
सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से, इसको कुबेर ही रचा करे।।
जिनवर सुपार्श्व का समवसरण, नवयोजन का ही होता है।
इसको पूजें हम अर्घ लिये, यह रोग शोक दुख खोता है।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीसुपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चंदाप्रभु का समवसरण, बस योजन साढ़े आठ रहा।
इसकी श्रीमंडपभूमी में, सब भविजन जिनध्वनि सुने वहां।।
मंडप की उज्ज्वल कांति में, मानों भविजन स्नान करें।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, मेरे भी कलिमल साफ करें।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीचन्द्रप्रभजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश स्फटिक मणी निर्मित, चौथा परकोटा ऊँचा है।
चउ गोपुर द्वारों से सुंदर, यह कोट सात खन ऊँचा है।।
जिन पुष्पदंत का समवसरण, बस योजन आठ व्यास वाला।
परकोटे आगे मंडप भू, पूजत पाऊँ गुण मणिमाला।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीपुष्पदंतजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतल जिनका समवसरण, बस योजन साढ़े सात कहा।
स्फटिक कोट के द्वारों पर, मंगल दर्पण बहु धरें वहां।।
इन दर्पण में नित दर्शक गण, निज पूरब भव को देखे हैं।
मंडपभूमी को अर्घ चढ़ा, हम पूजें निज को देखे हैं।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीशीतलजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ का समवसरण, यह योजन सात कहा मुनि ने।
इसमें श्रीमंडपभूमि अतुल, उसमें सब बैठै ध्वनि सुनने।।
हम सात परम स्थान हेतु, सातों तत्वों का मनन करें।
जिन पूजा सब कुछ दे सकती, इसलिए यहाँ हम यजनकरें।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीश्रेयांसनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीवासुपूज्य का समवसरण, साढ़े छह योजन सरधानो।
जिनवचनामृत को पी पीकर, निज के भवरोग सभी हानों।।
समकित संयम की रक्षा हो, बस अन्त समाधीमरण मिले।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, मेरी मनकलियाँ शीघ्र खिलें।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीवासुपूज्यजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्री विमलनाथ का समवसरण, छह योजन इन्द्रनीलमणि का।
खाई वनभूमि लताओं से, अतिशोभ रहा यह पचरंगा।।
इन्द्रों के मुकुटों से चुंबित, जिन चरण सरोरुह पुण्य भरें।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, ये शीघ्र भवोदधि पार करें।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीविमलनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनंत का समवसरण, यह योजन साढ़े पांच कहा।
जो भव्यनिकट संसारी हैं, वे ही जा दर्शन करें वहाँ।।
जो हैं अभव्य मिथ्यादृष्टि, पाखंडी वे नहिं जा सकते।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, मेरे भव भवपातक टलते।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीअनंतनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ का समवसरण, योजन हि पांच विस्तार धरे।
उसमें सब त्रिभुवन का वैभव, लाकर कुबेर इक साथ धरे।।

जिनदेव देव की महिमा यह प्रभु धर्मामृत बरसाते हैं।
जो पूजें अर्घ चढ़ा करके, वे आतम अनुभव पाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीधर्मनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ का समवसरण, साढ़े चउ योजन मुनि कहते।
जग शांति विधाता शांतिनाथ, सब उनकी एक शरण गहते।।
जो पूर्ण शांति के इच्छुक हैं, वे शांतिनाथ को भजते हैं।
जो पूजें अर्घ चढ़ाकर वे परमानंदामृत चखते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीशांतिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ का समसरण, चउ योजन माना अतिशायी।
श्री मंडपभूमी में तिष्ठे, भविजन ध्वनि सुनते सुखदायी।।
जो पंचेंद्रिय को वश करते, संसार पंच से डरते हैं।
वे पंचम गति को पा लेते, अतएव यहां हम यजते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीकुंथुनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ का समवसरण, साढ़े त्रय योजन मुनि गाते।
उसके अन्दर के वैभव को गणधर भी कहकर थक जाते।।
यह महिमा जिनवर सन्निध की, जो जिनगुण इच्छुक होते हैं।
वे ही जिनवर की पूजा कर, सब पाप पंक को धोते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीअरनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ का समवसरण, त्रय योजन व्यास धरें सुंदर।
उसमें श्रीमंडपभू अष्टम, जहाँ द्वादश गण बैठे सुखकर।।
स्फटिक कोट के द्वारों पर सुर कल्पवासि रक्षा करते।
हम समवसरण को नित पूजें, ये इष्टसिद्धिनवनिधि भरते।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीमल्लिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिनका समवसरण, ढाई योजन का माने हैं।
उसमें भू आठ कोट चउ हैं, वेदिका पांच सरधाने हैं।।
जिन परमौदारिक देह धरें, इस समवसरण में तिष्ठे हैं।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, पूजा से भव दुख मिटते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीमुनिसुव्रतजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीनमि जिनवर का समवसरण, दो योजन कहा मुनीश्वर ने।
केवलज्ञानी श्रुतज्ञानी मुनि, रहते हैं सब श्री मंडप में।।
व्यवहार व निश्चय रत्नत्रय पा जाऊँ मैं इस इच्छा से।
नित पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, मनवचतन कर अतिशय रुचि से।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीनमिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ का समवसरण, छह[1] कोश कहा निश्चित मानो।
गणधर मुनिगण सुरनर पशुगण, निज निज कोठे बैठे जानो।।
जो समवसरण पूजा करते, वे निश्चित ही वहाँ जायेंगे।
निज में ही निज को पा करके, शिवलक्ष्मी को पा जायेंगे।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीनेमिनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ का समवसरण, है पाँच कोश का अति सुंदर।
वहाँ बीस हजार सीढ़ियों से, जाकर दर्शन करते ऊपर।।
कमठासुर भी वहाँ आ करके, सब वैरछोड़ सम्यक्त्व लिया।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, हो जावें सुगम मोक्ष गलियाँ।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीपार्श्वनाथसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर प्रभू का समवसरण, है चार कोश विस्तार धरे।
उसमें भी त्रिभुवन की संपत्, धनपति लाकर एकत्र करे।।
यह वीर प्रभू का ही प्रभाव, जो भव्य असंख्ये ध्वनि सुनते।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नित मेरे भी मनवाञ्छित फलते।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीमहावीरजिनसमवसरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा –

चौबीसों जिनराज के, समवसरण गुणखान।
श्री मंडपभूमी जजूँ, होऊं निज गुणवान।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

---

1. डेढ़ योजन।

जयमाला

–त्रिभंगी छंद –

जय जय तीर्थंकर, समवसरणवर, घातिकर्म का नाश किया।
नव केवल लब्धी, जिन उपलब्धी, पाकर केवलज्ञान लिया।।
तुम समवसरण में, निज दर्पण में, भविजन निजभवदेख रहे।
रत्नत्रय पाकर, मोह हटाकर, मुनि बनकर शिवपंथ गहे।।1।।

–स्रग्विणी छंद –

पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
मोह पर से छुटे ध्यान हो आपना।।
श्री समोसर्ण में आठवीं भूमि में।
सोलहों भित्ति से कोष्ठ बारह बने।।पूरिये.।।2।।

सामने कोष्ठ में गणधरा मुनिवरा।
नाथ ध्वनि सुन रहें जो महासुख करा।।पूरिये.।।3।।

दूसरे कोष्ठ में कल्प[1] की देवियां।
तीसरे आर्यिका श्राविकायें वहां।।पूरिये.।।4।।

ज्योतिषी व्यंतरी फिर भवनवासियाँ[2]।
भौन सुर व्यंतरा ज्योतिषी सुर[3] वहाँ।।पूरिये.।।5।।

ये सभी क्रम से फिर देव हैं स्वर्ग के।
ग्यारमें चक्रवर्ती मनुज बैठते।।पूरिये.।।6।।

बारवें सिंह हरिणादि हैं प्रेम से।
इस तरह बारहों गण सभा नेम से।।पूरिये.।।7।।

देव देवी असंख्यों वहां बैठते।
नर पशू सर्व बाधा बिना तिष्ठते।।पूरिये.।।8।।

1. कल्पवासिनी देवियाँ। 2. चौथे, पाँचवे, छठे कोठे में क्रम से ज्योतिर्वासिनी,व्यंतरनी और भवनवासिनी देवियाँ हैं। 3. सातवें, आठवें, नवमें कोठे में भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिष्कदेव क्रम से बैठते हैं।

नाथ की दिव्यध्वनि तीन संध्या खिरे।
एक योजन तके सब सुने रुचि धरे।।पूरिये.।।9।।

हां समोसर्ण में रोग शोकादि ना।
भूख प्यासादि बाधा जनममृत्यु ना।।पूरिये.।।10।।

वैर उत्पात आतंक भीती नहीं।
सर्वथा हर्ष ही हर्ष सुख की मही।।पूरिये.।।11।।

धन्य मैं धन्य मैं अर्चना कर रहा।
धन्य ये जन्म मेरा सफल हो रहा।।पूरिये.।।12।।

आत्म पीयूष निर्झर पिऊँ प्रेम से।
स्वात्मसिद्धी मिले एक ही क्षेम से।।पूरिये.।।13।।

–दोहा –

श्रीमंडप भू बेढ़कर, पंचम वेदी स्वच्छ।
नमूँ नमूँ कर जोड़कर, करो हृदय मम स्वच्छ।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.11)

प्रथम पीठ पूजा

–अथ स्थापना– नरेन्द्र छंद–

पंचम वेदी के बाद [1]पीठ, पहला वैडूर्य मणी का है।
बारह कोठे अरु चार गली, से सोलह बनी सीढ़ियां हैं।।
चूड़ी सम गोल इसी ऊपर, चारों दिश में यक्षेंद्र खड़े।
वे शिर पर धर्मचक्र धारें, उन पूजत सुख सौभाग्य बढ़े।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितयक्षेंद्रमस्तकोपरिविराजमान-चतुश्चतुर्धर्मचक्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितयक्षेंद्रमस्तकोपरिविराजमान-चतुश्चतुर्धर्मचक्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितयक्षेंद्रमस्तकोपरिविराजमान-चतुश्चतुर्धर्मचक्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (चाल-हे दीनबंधु.....)

मुनिराज के मनसम पवित्र नीर लिया है।
जिनधर्मचक्र को हि तीन धार दिया है।।
मैं धर्मचक्र की सदैव अर्चना करूँ।
जिनधर्म से हि मृत्यु की भि खंडना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ के तन सम सुगंध गंध को लिया।
जिनधर्मचक्र चर्च के मन शांतकर लिया।।मै.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्मचक्र सदृश श्वेत शालि धवल हैं।
जिनधर्मचक्र अग्रपुंज धरूँ विमल हैं।।मै.।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

1. कटनी।

जिनयश समान सुरभि भरे फूल चुन लिये।
जिनधर्मचक्र के निकट अर्पण सुमन किये।।मै.।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत सदृश पूआ जलेबियां सोहाल लें।
जिनधर्मचक्र को चढ़ाऊँ क्षुधा टालने।।मै.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप में कर्पूर ज्योति आरती करूँ।
जिनधर्मचक्र पूजते अज्ञान तम हरूँ।।मै.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं धूपघट में धूप खेय धूम्र उड़ाऊँ।
जिनधर्मचक्र पूजते हि कर्म जलाऊँ।।मै.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अनन्नास सेव लेय के भले।
जिनधर्मचक्र को चढ़ाऊँ मोक्षफल मिले।।मै.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलगंध अक्षतादि लेय रत्न मिलाऊँ।
जिनधर्मचक्र के समक्ष अर्घ चढ़ाऊँ।।मै.।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पद्म सरोवर नीर ले, जिनपद धार करंत।
तिहुं जगमें मुझमें सदा, करो शांति भगवंत।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

धर्मचक्र चमकंत, तिहुंजग को उद्योतते।
पुष्पांजलि अर्पंत, पूजत भेद विज्ञान हो।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नाराच छंद –

समोसरण जिनेश आदिनाथ का विशाल है।
सुपीठ उपरि धर्मचक्र सहस रश्मि जाल है।।
जिनेन्द्र के विहार में सुअग्र अग्र ये चलें।
सहस्रआर धर्मचक्र पूजहूं सदा भले।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेंद्र आदिनाथ पीठ दाहिनी दिशी दिपे।
सुधर्मचक्र भव्य के हजार पाप को खिपे।।जिनेंद्र.।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समोसरण जिनेश के सुपीठ पे अपर दिशा।
सुधर्मचक्र भक्त के हजार दोष टालता।।जिनेंद्र.।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेंद्र आदिनाथ के हि उत्तरी कटनीय पे।
सुयश शीश पे विराजमान चक्र बहु दिपे।।जिनेंद्र.।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजित जिनेंद्र का समोसरण अजेय विश्व में।
हजार रश्मि से चमक रहा अपूर्व पूर्व में।।
जिनेन्द्र के विहार में सुअग्र अग्र ये चलें।
सहस्रआर धर्मचक्र पूजहूं सदा भले।।5।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश के समोसरणविषे सुदूर से दिखे।
हजार खंड मोह के करे अपूर्व तेज से।।जिनेंद्र.।।6।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपूर्व तेज से सुभक्त चित्त अंधकार को।
क्षणेक में भगावता सहस्रआर चक्र जो।।जिनेंद्र.।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महानदीप्तिमान चक्र रात्रि भी न हो वहां।
अनेक कोटि सूर्य तेज देख लाजते[1] वहां।।जिनेंद्र.।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश सम्भवेश का समोसरण चकासता[2]।
वहीं पे पूर्व में हि धर्मचक्र खूब भासता[3]।।जिनेंद्र.।।9।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठो[4]परिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनीश शीश नावते अपूर्व भक्तिभाव से।
गणीशकीर्ति धर्मचक्र की सदैव गावते।।जिनेंद्र.।।10।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. फीके पड़ जाते हैं। 2. चमक रहा है। 3. चमकता है। 4. कटनी और पीठ पर्यायवाची हैं।

सुरेश पूजते सदैव अष्टद्रव्य लाय के।
नरेश वंदते सदैव धर्मचक्र भाव से।।जिनेंद्र.।।11।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत जन्म के अनंत कर्म नष्ट होयंगे।
सुचक्र पूजते अनंत ज्ञान सौख्य होयंगे।।जिनेंद्र.।।12।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश अभिनंदनेश का समोसरण दिपे।
वहां सुपूर्वदिक्क में सुचक्र तेज से दिपे।।जिनेंद्र.।।13।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंख्य देव देवियां सुचक्र पूजते वहां।
सुअप्सरायें बांसुरी बजाय गावती वहां।।जिनेंद्र.।।14।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजात्म तत्व प्राप्ति हेतु साधु वंदना करें।
सुचक्र के समीप आर्यिकायें स्तोत्र उच्चरें।।जिनेंद्र.।।15।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शशीकिरण हजार से अधीक रश्मियां धरे।
सुचक्र सौम्यकांति से दिशा प्रसन्न भी करे।।जिनेंद्र.।।16।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

सुमतिनाथ जिनराज का, समवसरण अभिराम।
धर्मचक्र पूरब दिशी, झुक झुक करूँ प्रणाम।।17।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरणदक्षिणदिशी, धर्मचक्र चमकंत।
इक हजार आरों सहित, जजत उसे अघ अंत।।18।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पीठ पर अपर दिश, धर्म चक्र भास्वान्।
सूर्यचंद्र फीका करे, पूजत स्वात्म निधान।।19।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र उत्तरदिशी, आरे एक हजार।
चमचम करते शोभते, जजत मिले भवपार।।20।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभू जिनराज का, समवसरण विलसंत।
पूजूँ श्रद्धा भक्ति से, मिले सुज्ञान अनंत।।21।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में पीठ पर, धर्मचक्र अभिनंद्य।
अर्घ चढ़ाकर मैं जजूँ, सुर नर मुनिगण वंद्य।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पीठ वैडूर्यमणि, निर्मित शोभावान्।
धर्मचक्र को नित जजूं, रोग शोक दुख हान।।23।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मा लक्ष्मी तुम चरण, सेवे भक्ति भरंत।
धर्मचक्र की अर्चना, करते सौख्य भरंत।।24।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीसुपार्श्व जिनदेव का, समवसरण सुर मान्य।
धर्मचक्र पूरब दिशी, जजत बनूँ जग मान्य।।25।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय निधि के धनी, वीतराग जिनदेव।
धर्मचक्र पूजूँ मुझे, एक रत्न ही देव।।26।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्मों के हेतु मैं, करूँ आपकी सेव।
धर्मचक्र पूजूँ सदा, पूरो वांछा देव।।27।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध मान मायादि मुझ, दोष हरो जिनदेव।
परम शांति हित मैं करूँ, धम्रचक्र की सेव।।28।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ भगवान का, समवसरण अतिशायि।
धर्मचक्र पूजूँ सदा, जिनवर वृष सुखदायि।।29।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र कांति सम आपके, गुणमणि धवल अनंत।
हजार आरा से दिपे, जजत चक्र भव अंत।।30।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व व्याधि पीड़ा नशे, धर्मचक्र पूजंत।
अंत समाधी हो भली, यही आश भगवंत।।31।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म सुखामृत पीवते, ऋद्धिधारि मुनिसंत।
धर्मचक्र को सेवते, निजगुणरत्न भरंत।।32।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चामर छंद–

पुष्पदंत नाथ का समोसरण अपूर्व है।
हजार आर से दिपंत धर्म चक्र पूर्व है।।
रोग शोक भी टलें हजार पाप शांत हों।
धर्म चक्र पूजते निजात्म सौख्य लाभ हो।।33।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध मान छद्म लोभ राग द्वेष मोह ये।
आतमा को कष्ट दें इन्हें निकाल दीजिए।।रोग.।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप पाद पद्म सेय मैं निहाल हो गया।
तीन रत्न पाय के हि भाग्यशाली हो गया।।रोग.।।35।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध वर्ण रस स्पर्श शून्य आतमा अमूर्त।
आप पाद पूजते हि प्राप्त होय निज स्वरूप।।रोग.।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलेश का समोसरण शतेंद्र पूज्य है।
वाक्य भी अतीव शीत सर्व दोष दूर हैं।।रोग.।।37।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरातमा जजें जिनेंद्र पाद भक्ति से।
सर्व दोष टाल के हि सिद्ध आतमा बनें।।रोग.।।38।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्व भौम चक्रवर्ति संपदा लहें वही।
भक्ति से जिनेंद्र पाद पूजते सदा यहीं।।रोग.।।39।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म मृत्यु नाश के अपूर्व धाम दीजिये।
नाथ आप पास में मुझे स्थान दीजिये।।रोग.।।40।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ समोसर्ण में अधर रहें।
भव्य जीव के अनंत पाप को तुरत दहें।।रोग.।।41।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधुवृन्द आप पाद वंदते सुयश लहें।
आत्म रस पियूष का प्रवाह चित्त में बहे।।रोग.।।42।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार ज्ञान धारि भी गणेश आप वंदते।
भव्य जीव वंद वंद सर्व दोष खंडते।।रोग.।।43।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गृहस्थ नित्य अर्चना करें व दान दें।
वे तुरंत खार भव समुद्र पार पा सकें।।रोग.।।44।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य कीर्ति को सरस्वती सदा कहे।
आप पाद पूज भव्य सर्व आपदा दहें।।
रोग शोक भी टलें हजार पाप शांत हों।
धर्म चक्र पूजते निजात्म सौख्य लाभ हो।।45।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य आदि से सुलेश[1] पाप हो सही।
विंदु मात्र विष समुद्र नीर दूषता नहीं।।रोग.।।46।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गृहस्थ आप बिंब औ निलय बनावते।
वे दु तीन ही भवों में सिद्धि सौख्य पावते।।रोग.।।47।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त भंग की तरंग से ध्वनी तरंगिणी।
भव्य पाप पंक धोय के करे पवित्रनी।।रोग.।।48।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–वसंततिलका छंद –

तीर्थेश श्रीविमल के सुसमोसरण में।
यक्षेश शीश पर धर्म सु चक्र धारें।।
श्रीधर्मचक्र यजते मन ध्वांत[2] भागे।
सज्ज्ञानसूर्य चमके शिव सौख्य जागे।।49।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सामग्री बनाने से आरंभ का कुछ पाप होता है। 2. अंधेरा।

आरे हजार चमकें जिनधर्म फैले।
मोहारि शीश झट काट स्वराज्य ले लें।।श्री.।।50।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व रत्न अनमोल त्रिलोक में है।
जो आप भक्त उनको क्षण में मिले हैं।।श्री.।।51।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मोपदेश प्रभु का अद्भुत जगत् में।
जो पा लिये भुवन में धन धन्य वो हैं।।श्री.।।52।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी अनंत यम अंतक नांत गुणभृत्।
सौधर्म इन्द्र तुम किन्नर है शिरोनत।।श्री.।।53।।

ॐ ह्रीं अनन्तनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीचक्र का सहज तेज अपूर्व ऐसा।
कोटी रवी शशि व अगनी में न वैसा।।श्री.।।54।।

ॐ ह्रीं अनन्तनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं आप में विमल दर्शन ज्ञान शक्ती।
निर्बाध सौख्य गुणमणिनिधियाँ अनंती।।श्री.।।55।।

ॐ ह्रीं अनन्तनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आपके चरण में नमते सदा ही।
वे गुण अनंत निज के धरते सदा ही।।श्री.।।56।।

ॐ ह्रीं अनन्तनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ निज आसन से अधर हैं।
मृत्युंजयी पद सरोज नमें मुनी हैं।।
श्रीधर्मचक्र यजते मन ध्वांत भागे।
सज्ज्ञानसूर्य चमके शिव सौख्य जागे।।57।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जन्म मृत्यु भव दुःख विनाश चाहें।
वे धर्म तीर्थ जल में नित ही नहावें।।श्री.।।58।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेंद्रियां मन छहों वश में करें जो।
छै द्रव्य को श्रद्धहें सुख से तिरें वो।।श्री.।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो साधु नित्य रमते जिनपाद में ही।
वे पावते निज सुधारस धाम जल्दी।।श्री.।।60।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ जिनके सु समोसरण में।
भक्ती धरें परम शांत बने क्षणों में।।श्री.।।61।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आपके चरण पंकज में नमें हैं।
वे सर्व वैर कलहादि स्वयं वमें हैं।।श्री.।।62।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो पूर्ण शांति मन में इस हेतु वंदूं।
संपूर्ण ज्ञान सुख से निज आत्म मंडूं।।श्री.।।63।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ तिहुं लोक सुशांति दाता।
तुम नाम मंत्र जपते मिटती असाता।।श्री.।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद –

श्री कुंथुनाथ जग त्राता, तुम समवसरण सुखदाता।
वैडूर्यमणी कटनी पे, जजुं धर्मचक्र अतिदीपे।।65।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहली कटनी मन मोहे, अठ मंगल द्रव्य सु सोहें।
जिन धर्मचक्र अति चमके, सब पुण्य फले अतिदमके।।66।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस धर्मचक्र कटनी पे, पूजन सामग्री शोभे।
जिनधर्म चक्र मैं पूजूँ, भवभव के दुख से छूटूँ।।67।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्य स्वजन की वृद्धी, जिन पूजत सर्व समृद्धी।
जिनधर्म चक्र मैं पूजूँ, भवभव के दुख से छूटूँ।।68।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अष्टद्रव्य ले करके, जिन पूजें मन वच तन से।
वो पावें सुख अतिशायी, जिनधर्मचक्र सुखदायी।।69।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवंता, उन समवसरण विलसंता।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।70।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहारिजयी अरनाथा, मुनि नित्य नमाते माथा।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।71।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विघ्न अरी झट भागे, पूजा से सब सुख सागे।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।72।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमल्लिनाथ भवविजयी, इन समवसरण सुखभरई।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।73।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय चिंतामणि देवा, चिंतित फलती प्रभुसेवा।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।74।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कल्पतरू फलदाता, बिन मांगे सब सुखदाता।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।75।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब इष्ट फलें पूजा से, सब विघ्न भगें पूजा से।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिनवर भक्ती, इससे प्रगटे निज शक्ती।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय अनघ निधी है, जिनपूजा से मिलती है।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तपश्चरण नित करते, वे भी निज भक्ती धरते।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।79।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनभक्ती समकित निधि है, इस बिन सिद्धी नहिं हो है।
जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।80।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–अडिल्ल छंद –

समवसरण में नमि जिनराज विराजते।
प्रथम पीठ पर धर्म, चक्र शुभ राजते।।
सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूँ।
धर्मचक्र को जजूँ, मुक्ति लक्ष्मी वरूँ।।81।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म के बंध, उदय सत्ता टले।
ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होय अतिशय भले।।
सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूँ।
धर्मचक्र को जजूँ, मुक्ति लक्ष्मी वरूँ।।82।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौम्य छवी नासाग्र दृष्टि मन को हरे।
सम्यग्दृष्टि भाव भक्ति से सुख भरें।।सप्त.।।83।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ योग से बचूँ प्रवृत्ती शुभ करूँ।
देश चरित को धार कर्म हल्के करूँ।।सप्त.।।84।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ जिन समवसरण में राजते।
पूजत ही निजज्ञान ज्योति हृदि भासते।।सप्त.।।85।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जटित सिंहासन, छवि जन मन हरे।
अधर राजते जिनवर, त्रिभुवन सुख करें।।सप्त.।।86।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र शिर ऊपर, शोभें कांति से।
त्रिभुवन प्रभुत्ता कहें, सभी को भाव से।।सप्त.।।87।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढोरें चौंसठ चंवर यक्ष भक्ती भरे।
जो जन भक्ती करें सुयश जिन विस्तरें।।सप्त.।।88।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ जिनराज, सर्व सरताज हैं।
समवसरण में आप, सर्व जन तात हैं।।सप्त.।।89।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकट मोचन शोकहरन, भविशर्ण हैं।
आप एक भववारिधि तारण तर्ण हैं।।सप्त.।।90।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमा मार्दव आर्जव शौच सुधर्म हैं।
तुम भक्ती से धर्म करें शिव शर्म हैं।।सप्त.।।91।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच संयम तप त्याग, अकिंचन ब्रह्मव्रत।
जिन भक्ती से पूरण हों, ये धर्म सब।।सप्त.।।92।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर जिन समवसरण अतिशय भरा।
खाई लता बगीचे से चहुंदिश हरा।।सप्त.।।93।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्धे लंगड़े लूले बहिरे स्वस्थ हों।
बीस हजार सीढ़ियाँ चढ़ जिन भक्त हों।।सप्त.।।94।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म चक्र के हजार आरे चमकते।
अंधकार जन मन का हरते दमकते।।सप्त.।।95।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो परोक्ष में समवसरण को पूजते।
वे निश्चित प्रत्यक्ष दर्श को पावते।।सप्त.।।96।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –दोहा –

एक एक जिनराज के, चार-चार वृष[1] चक्र।
चौबीसों के छ्यानवें, पूजत हो मम भद्र।।97।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिविराजमान-षण्णवतिधर्मचक्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य –ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा –

धर्मचक्र जिनदेव का, कहा अनादि अनंत।
समवसरण में राजता, अतः आदि भी अंत।।1।।

–रोला छंद –

जय जय श्रीजिनदेव, जय जय श्री भगवंता।
जय जय तुमपद सेव, करते मुनिगण संता।।
जय जय सुर नर वंद्य, चरण कमल अतिशायी।
मिले निजातम सद्म, साम्य सुधारस पायी।।2।।

1. धर्मचक्र।

जो तुम भक्ति करंत, पुण्य भंडार भरे हैं।
कटते पाप अनंत, गुण भंडार धरे हैं।।
विष निर्विष हो जाय, सर्प बनें सुम[1] माला।
शत्रु मित्र हो जाय, अग्नि बने जल कमला।।3।।

नदी सिंधु तालाब, पार करें इक क्षण में।
स्थल सम बन जाय, नहिं डूबे जन जल में।।
जो जन हों प्रतिकूल, सब अनुकूल बने हैं।
व्यंतर भूत पिशाच, क्षण में दूर भगे हैं।।4।।

कुष्ठ भंगदर आदि, व्याधि नशें भक्ती से।
नहिं टिक सकती आधि, आर्त भगे शक्ती से।।
बंधे असाता कर्म, सातामय परिणमते।
जो पूजें जिन चर्ण, अशुभकरम शुभ बनते।।5।।

इष्ट वियोग न होय, नहिं अनिष्ट संयोगा।
इच्छित पूरे होय, कभी न हो दुख शोका।।
राजादिक सब वश्य, सब जग में यश फैले।
करें सभी सन्मान, शांति स्वस्थता मीले।।6।।

धन धान्यादिक वृद्धि, वंश फले संतति से।
भार्या पुत्र सुतादि, बढ़ें धर्म नीति से।।
श्रावक धर्म बढ़ाय, दान शील उपवासा।
जिन पूजा सुखदाय, करो गृहस्थ निवासा।।7।।

समवसरण में पीठ, नीलमणी का सुंदर।
धर्म चक्र हैं चार, आरे सहस मनोहर।।
इनको पूजें भव्य, अतिशय पुण्य बढ़ावें।
करें करमवन ध्वस्त, शिव रमणी को पावें।।8।।

1. फूलों की।

–दोहा –

नमूँ नमूँ नित भक्ति से, धर्म चक्र तिहुंकाल।
ज्ञानमती सुख संपदा, देकर करो निहाल।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिविराजमान-षण्णवतिधर्मचक्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.12)

द्वितीय पीठ पूजा

–अथ स्थापना –अडिल्ल छंद –

समवसरण में पीठ दूसरा स्वर्ण का।
आठ दिशा में आठ ध्वजायें वर्णिता।।
नव निधि मंगल द्रव्य धूप घट शोभते।
पूजूं भक्ति बढ़ाय, सर्वमन मोहते।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-अडिल्ल छंद –

काल अनादी से तृष्णा दुख देत है।
तास निवारण हेतु नीर शुचि लेत हैं।।
महाध्वजायें आठ पूजते भक्ति से।
कीर्ति ध्वजा फर हरे उन्हों की चहुंदिशे।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भव के त्रयताप निवारण कारणे।
मलयागिरि चंदन घिस लायो पावने।।महा.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल उज्ज्वल धोय, पुंज रचना करें।
निज अखंड पद मिले, पुनर्भव ना धरें।।
महाध्वजायें आठ पूजते भक्ति से।
कीर्ति ध्वजा फर हरे उन्हों की चहुंदिशे।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध वर्ण के पुष्प सुगंधित लावते।
पूजत ही यश सुरभि बढ़े दशहूँ दिशे।।महा.।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक पेड़ा बरफी भर के थाल में।
पूजत भागे क्षुधा व्याधि तत्काल में।।महा.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक में कर्पूर जला आरति करें।
ज्ञान ज्योति को जला भ्रांति तम परिहरें।।महा.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूप घट में जो खेते भक्ति से।
स्वपर भेद विज्ञान उन्हें हो युक्ति से।।महा.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतफल अंगूर आम केला भले।
फल से पूजत सर्व सौख्य मिलते भले।।महा.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ चढ़ाते सुख मिले
पाप ताप संताप मिटे जन मन खिलें।।महा.।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्ट-अष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पद्म सरोवर नीर ले, जिनपद धार करंत।
तिहुं जग में मुझमें सदा, करो शांति भगवंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा –

महाध्वजा के खंभ, द्वितिय पीठ पर हैं खड़े।
यजन हेतु अठ द्रव्य, वहीं मिले जन पूजते।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–स्रग्विणी छंद –

आदि तीर्थेश के श्री समोसर्ण में
हैं द्वितीय पीठ पे सीढ़ियाँ दिक्क[1] में।।
पूजहूँ मैं ध्वजा आठ भक्ती भरे।
सिद्ध के आठ गुण सम धवल फरहरें।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ स्वामी अजितनाथ के पीठ पे।
जो जजें ध्वज सदा सर्वगुण से दिपें।।

1. चार दिशा में।

पूजहूँ मैं ध्वजा आठ भक्ती भरे।
सिद्ध के आठ गुण सम धवल फरहरें।।2।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ संभव हरे पंच संसार को।
पूजते ही महामोह संहार हो।।पूजहूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ अभिनंदनेश्वर निजानंद दें।
भक्ति से भव्यजन सर्व आनंद लें।।पूजहूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्ट-महाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथजी सर्व कुमती हरें।
जो जजें सर्व रिद्धी समृद्धी भरें।।पूजहूँ.।।5।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्ट-महाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभु जब चलें चर्ण तल पद्म हों।
वे सुगंधी भरे स्वर्णमय पद्म हों।।पूजहूँ.।।6।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ सान्निध्य पा पूज्य होतीं ध्वजा।
जो सुपारस जजें सर्व नाशें व्यथा।।पूजहूँ.।।7।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रप्रभ की धवल कांति उन कीर्तिसम।
जो जजें वो करें मुक्ति पथ को सुगम।।पूजहूँ.।।8।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंतेश निजभक्त के ईश हैं।
इन्द्रशत वंदते नित नमां शीश हैं।।पूजहूँ.।।9।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ शीतल भविक चित्त शीतल करें।
जो जजें वो महा दुःख वारिधि तरें।।पूजहूँ.।।10।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ श्रेयांस हरते जगत् की व्यथा।
भव्य पंकज खिलाती उन्हीं की कथा।।पूजहूँ.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ वसुपूज्य सुत सर्व जग के पिता।
जो शरण आ गये वे तुम्हीं में रता।।पूजहूँ.।।12।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीविमलनाथ निजको विमल कर लिया।
स्वात्म करने विमल भक्त शरणा लिया।।पूजहूँ.।।13।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंतेश के गुण अनंते कहे।
जो जजें वे स्वयं गुण अनंते लहें।।पूजहूँ.।।14।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ सानिध्य पा ये ध्वजा पूज्य हैं।
जो शरण आ गये वो बने पूज्य हैं।।पूजहूँ.।।15।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति तीर्थेश के पाद पंकेज को।
जो जजें वो लहें शांति पीयूष को।।
पूजहूँ मैं ध्वजा आठ भक्ती भरे।
सिद्ध के आठ गुण सम धवल फरहरें।।16।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथु भगवान् मेरी कुबुद्धी हरो।
भेद विज्ञान हो श्रेष्ठ बुद्धी भरो।।पूजहूँ.।।17।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ के पाद अरविंद को।
पूजते ही भविक को निजानंद हो।।पूजहूँ.।।18।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लि तीर्थेश पूरें भविक याचना।
फेर होता न संसार में आवना।।पूजहूँ.।।19।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ मुनिसुव्रतं को नमूँ प्रीति से।
शुद्ध सम्यक्त्व की प्राप्ति होवो मुझे।।पूजहूँ.।।20।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नमीनाथ की नित्य अर्चा करें।
दुःख दारिद्र हर रिद्धि सिद्धी भरें।।पूजहूँ.।।21।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं करूँ नेमिजिन की सदा वंदना।
राग द्वेषादि की हो स्वयं वंचना।।पूजहूँ.।।22।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वजिन भक्त के सर्व संकट हरें।
क्रोध ईर्ष्यादि हरके क्षमा गुण भरें।।पूजहूँ.।।23।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर प्रभु में महावीरता।
मृत्यु को मारने की जगे वीरता।।पूजहूँ.।।24।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा –

चौबीसों जिनराज की, कटनी द्वितिय अपूर्व।
आठ ध्वजाओं को जजत, उगे ज्ञानरवि पूर्व।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणद्वितीयपीठोपरिस्थितद्विनवत्यधिक-एकशतमहाध्वजाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–छंद त्रिभंगी –

जय समवसरण में, कटनी स्वर्णिम, उस पर मणिमय खंभों में
जय अतिशय ऊँची, नभ को छूतीं, आठ महाध्वज हैं उनमें।।
ये सिंह, बैल, पंकेज, चक्र, माला व गरुड़ गज चिन्ह धरें।
जो इनको पूजें, शिवपथ सूझे, ये अपयश अरु विघ्न हरें।।1।।

1. चौदह पूर्व का ज्ञान ।

–चामर छंद –

नाथ आप पाद वंद मैं निहाल हो गया।
आप से हि तीनरत्न को संभाल के लिया।।
धन्य ये घड़ी व आज धन्य जन्म हो गया।
धन्य नेत्र हैं मेरे व धन्य शीश हो गया।।2।।

धन्य स्वात्म तत्त्व का भि ज्ञान प्राप्त हो गया।
हरेक क्षण बना रहे सु एक प्रार्थना किया।।
आत्म तेज सूर्य चंद्र अग्नि तेज को जिते।
सर्वरत्न तेज से अनंत गुणा हो दिपे।।3।।

आतमा अनंत सौख्य धाम दीप्तिमान है।
आतमा अनंत गुण निधान कीर्तिमान है।।
एक आत्मज्ञान ही समस्त दोष को हरे।
एक स्वात्मज्ञान ही सदा प्रसन्न मन करे।।4।।

स्वात्म के समान अन्य ना हुआ न होयगा।
मोक्ष धाम दे यही न अन्य कोई देयगा।।
स्वात्मसिद्धि हेतु एक साम्यभाव ही कहा।
साम्य रससुधा बिना न सिद्धि हो कभी यहां।।5।।

शत्रु मित्र जन्म मृत्यु लाभ वा अलाभ में।
एकरूपता[1] रहे सदैव सुक्ख दुःख में।।
नाथ आप भक्ति से यही सुशक्ति प्राप्त हो।
सम्यक्त्व ज्ञान युक्ति[2] से हि मुक्ति प्राप्त हो।।6।।

ना होय फेर फेर मुझे भव में आवना।
नाथ! मेरी पूरिये एक येहि कामना।।
मात्र इसी हेतु मैं कोटि बार पग पड़ूं।
सर्वसिद्धि सीढ़ियों पे बढ़ते कदम चढ़ूं।।7।।

1. रागद्वेष रहित या विषाद रहित समता। 2. चारित्र।

–दोहा –

पूजन सामग्री धरी, कटनी पर बहु भांति।
भव्य वहां पूजन करें, मिले 'ज्ञानमती' शांति।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणद्वितीयपीठोपरिस्थितद्विनवत्यधिक-एकशतमहाध्वजाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.13)

गंधकुटी पूजा

–अथ स्थापना–अडिल्ल छंद–

समवसरण जिन खिले कमलवत् शोभता।
गंधकुटी है उसमें मानों कर्णिका।।
चामर किंकणी वंदन माला हार से।
शोभे अतिशय गंधकुटी पूजूं उसे।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-तोटक छंद –

जलभृंग भरूं शुचि शीतल मैं।
भव भव की प्यास बुझे क्षण में।।
जिनगंध कुटी जजहूं नित मैं।
निज आत्म विशुद्धि करूं नित मैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस चन्दन पात्र भरा रुचि से।
मन शीतल शुद्ध करूँ जजते।।जिन.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

शशि रश्मि सदृश अक्षत भर के।
प्रभु सन्मुख पुंज चढ़ा हरसें।।जिन.।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

अरविंद गुलाब लिये सुमना।
जिन पाद सरोज धरूं सुमना।।जिन.।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

बरफी गुझियाँ पकवान चढ़ा।
निज भूख व्यथा हर सौख्य बढ़ा।।जिन.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीप जले जग ध्वांत टले।
जिन आरति से मन ज्योति जले।।जिन.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा

दश गंध जला अगनी संग में।
सब कर्म जलें सुख हो मन में।।जिन.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा

अखरोट बदाम चढ़ा करके।
फल मोक्ष मिले गुण गाकर के।।जिन.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु।
वर दीप व धूप फलादि भरूँ।।जिन.।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगंधकुटीभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

–दोहा –

पद्म सरोवर नीर ले, जिनपद धार करंत।
तिहुं जगमें मुझमें सदा, करो शांति भगवंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा –

चंदन अगर सुगंध, रत्न दीप धूपादि से।
गंध कुटी मुनि वंद्य, कुसुमांजलि कर पूजहूं।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद –

सब रत्नमय यह पीठ सुंदर देवनिर्मित तीसरा।
श्री आदिनाथ जिनेश का यह शोभता अतिशय भरा।।
वर ज्ञान आदिक क्षायिकी मिल जांय केवल लब्धियां।
जिन गंधकुटि को पूजहूँ मिल जांय आतम सिद्धियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजित जिनके समवसृति में सर्व रत्नसु पीठ पे।
जिन गंध कुटि चामर ध्वजाओं से भरी अतिशय दिपे।।वर.।।2।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर पीठ तीजे से चतुर्दिश आठ आठहिं सीढ़ियां।
उस पर सुशोभे गंधकुटि जहं नाचतीं ध्वजपंक्तियां।।वर.।।3।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ जिसमें राजते यह गंधकुटि सुर वंद्य है।
नित करें स्तुति वंदना शिर नावते मुनि वृंद हैं।।वर.।।4।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमति जिन अज्ञान हरते, ज्ञान भरते भक्त में।
मुनिमन कमल विकसावते प्रभु सूर्य अनुपम जगत में।।वर.।।5।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पद्म प्रभु की गंधकुटि में सर्वदिश रचना दिखे।
प्रत्येक मंगल द्रव्य इक सौ आठ चारों दिश रखें।।वर.।।6।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप घट मणिरत्न दीपक मोतियों के हार हैं।
मणि पीठ तीजा सोहता जो पुण्य का भंडार है।।वर.।।7।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदाप्रभू के समवसृति में सर्वजन प्रीती भरें।
जिनपाद पंकज सेवते मन में अतुल भक्ती धरें।।वर.।।8।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णिम रजतमाला कुसुममाला सुरभि फैलावतीं।
जिन नाथ का हि प्रभाव सोने में सुगंधी आवती।।वर.।।9।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनेश्वर वचन सारे विश्व को शीतल करें।
जो उन वचन पीयूष पीते वे अमर पद को धरें।।वर.।।10।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांस जिन जग में सभी को क्षेम मंगल कर रहें।
जो नाथ के प्रतिकूल हैं वो दुर्गती में पड़ रहे।।वर.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आप का संस्तव करें वे सर्व सुख संपति लहें।
निंदा करें वे दुख लहें प्रभु वीतरागी ही रहें।।
वर ज्ञान आदिक क्षायिकी मिल जांय केवल लब्धियां।
जिन गंधकुटि को पूजहूँ मिल जांय आतम सिद्धियाँ।।12।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमल जिनके पाद पंकज मन पवित्र बनावते।
जो आप शरणे आ गये वो रिद्धि सिद्धी पावते।।वर.।।13।।

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहिरात्मा को छोड़कर मैं अंतरात्मा हो गया।
परमात्मपद कैसे मिले यह भान मुझको हो गया।।वर.।।14।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ जिनेंद्र दशविध धर्म के दातार हैं।
जो पूजते उनके चरण वे शीघ्र भवदधिपार हैं।।वर.।।15।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिये फिर हो कभी वांछा नहीं।।वर.।।16।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथु जिनके समवसृति में भव्य सम्यग्दृष्टि हैं।
जो उन चरण को पूजते उनको मिले भवमुक्ति है।।वर.।।17।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरनाथ मोहारी विजेता घातिया को घात के।
निज धाम को पाकर बने भगवान जग आधार वे।।वर.।।18।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लि जिनवर द्रव्य मल अरु भाव मल को धोयंो।
जो भव्य उन पूजा करें वो पूर्ण पावन होयंगे।।वर.।।19।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान मुनिसुव्रत निजातम शांति रस में लीन हैं।
उनकी करें जो वंदना वे धन्य हैं स्वाधीन हैं।।वर.।।20।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह आत्मा रसगंधवर्ण स्पर्श गुण से शून्य है।
जो ध्यावते झट पावते निज के अखिल गुणपूर्ण वे।।वर.।।21।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ जगत् पिता श्रीकृष्ण के लघु भ्राता भी।
जग सूर्य करुणा सिंधुवर्धन हेतु अनुपम चंद्र भी।।वर.।।22।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्वनाथ त्रिलोक शेखर शिखामणि विख्यात हैं।
पद्मावती धरणेंद्र भी नित प्रति नमाते माथ हैं।।वर.।।23।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर प्रभु का आज भी शासन जगत में छा रहा।
जो हैं अहिंसा प्रिय उन्हों के चित्त को अति भा रहा।।वर.।।24।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

चौबीस जिनके समवसृति में रत्ननिर्मित पीठ पे।
शुभगंधकुटि अतिशायि मंगलद्रव्य माला से दिपे।।
वर ज्ञान आदिक क्षायिकी मिल जांय केवल लब्धियां।
जिन गंधकुटि को पूजहूँ मिल जांय आतम सिद्धियाँ।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिचतुर्विंशति-गंधकुटीभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

विविध सुगंधी से भरी, गंधकुटी अभिराम।
गाऊं गुण मणिमालिका, शत शत करूं प्रणाम।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय श्रीजिनवर गंधकुटी, चहुंदिश रत्नों की मालायें।
जय जय श्रीजिनवर गंधकुटी, चहुंदिश फूलों की मालायें।।
जय गंधकुटी के शिखरों पर, फहरायें कोटि पताकायें।
चहुं ओर लटकते मोती के, झालर अरु वंदन मालायें।।2।।

स्वर्गों पर है सर्वार्थसिद्धि मेरु पर दिपे चूलिका है।
वैसे ही समवसरण मस्तक पर, गंधकुटी सु कर्णिका है।।
मंगल द्रव्यों से मंगलमय, बहुधूप घटों से सुरभित है।
चहुं ओर जड़े बहु रत्नों की, कांती से चित्र विचित्रित है।।3।।

इस गंधकुटी की शोभा को, सुरगुरु भी नहिं कह सकते हैं।
इस गंध कुटी की महिमा को गणधर गाते नहिं थकते हैं।।
मां सरस्वती कल्पांत काल तक महिमा नहिं लिख सकती है।
फिर मुझमें बुद्धी अती तुच्छ, लव कहने की नहिं शक्ती है।।4।।

सिंहासन स्वर्णमयी सुंदर बहुविध रत्नों से जड़ा हुआ।
निज छवि से इंद्रधनुष शोभा, वह चारों दिश में करा रहा।।
इस सिंहासन पर तीर्थंकर, चतुरंगुल अधर विराज रहे।
ऐश्वर्य तीन जग अतिशायी, पाकर भी उससे पृथक् रहें।।5।।

नभ से सुरगण नाना विध के, पुष्पों की वर्षा करते हैं।
वे पुष्प सुगंधित जहां तहां, डंठल नीचे कर पड़ते हैं।।
वे खिले पुष्प मानों कहते, जो प्रभु के पग में पड़ते हैं।
उनके कर्मों के बंधन सब नीचे, होकर गिर पड़ते हैं।।6।।

प्रभु के समीप तरुवर अशोक, वह पवन झकोरे से हिलता।
मरकतमणि के पत्ते चिकने, मूंगे के पुष्पों से खिलता।।
प्रभु शिर पर तीन छत्र उज्ज्वल मोती की लरें लटकती हैं।
त्रिभुवन के ईश्वर हैं जिनवर ऐसा कह खूब चमकती हैं।।7।।

दोनों बाजू यक्षेंद्र खड़े, चौंसठ चंवरों को ढोरे हैं।
पय सागर लहरों सदृश दिखें, या झरने सम अति शोभें हैं।।
ढुरते ये चंवर उपरि जाते, मानों भव्यों से कहते हैं।
जो चंवर ढुराते जिनवर के, वे ऊर्ध्वगती ही लहते हैं।।8।।

सुरगण मिल जिनको बजा रहें ऐसी दुंदुभि वहं बजती हैं।
जो शंख नगाड़े पणव आदि की ऊंची ध्वनि मन हरती है।।
प्रभु की तनु छवि से बना हुआ भामंडल अद्भुत तेज धरें।
भविजन उसमें निज सातसात भव देखें अतिशय मोद भरें।।9।।

दिव्यध्वनि मेघ गर्जनासम, जिनमुख पंकज से खिरती है।
भव्यों के कानों में जाकर सब भाषामय परिणमती है।।
ये आठ कहें हैं प्रातिहार्य, जिनको सुरगण मिल करते हैं।
इन वैभव के स्वामी जिनवर, वंदत अनंत सुख हरते हैं।।10।।

जिन गंधकुटी त्रिभुवन वंदित, मुनिगण भी शिर से नमते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, वे भव वारिधि से तरते हैं।।

जिनवर सन्निध पा गंध कुटी, सब जन से पूजा पाती है।
जो नाममात्र इसका लेते, उन्हें समकित रत्न दिलाती है।।11।।

–दोहा –

त्रिभुवन की सब सुरभियुत, गंधकुटी जगश्रेष्ठ।
'ज्ञानमती' शिरनत नमूं, बनूं जगत में ज्येष्ठ।।12।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिचतुर्विंशति-गंधकुटीभ्यः जयमाल पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

(पूजा नं.14)

तीर्थंकर गुण पूजा

–अथ स्थापना–शंभु छंद–

जो पंच कल्याणक के स्वामी, तीर्थंकर पद के धारी हैं।
उनका ही समवसरण बनता, जिसकी शोभा अतिन्यारी है।।
यद्यपि उनके गुण हैं अनंत, फिर भी छ्यालिस गुण विख्याते।
उनका आह्वानन कर पूजें, वे मेरे सब गुण विकसाते।।1।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-(चाल –हे दीन बंधू....)

सरयू नदी का नीर स्वर्णभृंग में भरूँ।
जिननाथ पाद पद्म में त्रयधार मैं करूँ।।
तीर्थेश गुण समूह की मैं अर्चना करूँ।
निजगुण समूह हेतु आज प्रार्थना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर को घिसा चंदन सुरभि लिया।
जिननाथ चरण चर्च मैं मनको सुवासिया।।तीर्थेश.।।2।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अखंड शालि धोय थाल में भरे।
जिन अग्र पुंज धारतें अखंड सुख भरें।।तीर्थेश.।।3।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब केतकी चंपा खिले खिले।
जिनपाद में चढ़ावते सम्यक्त्व गुण मिले।।
तीर्थेश गुण समूह की मैं अर्चना करूँ।
निजगुण समूह हेतु आज प्रार्थना करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूड़ी सोहाल मालपुआ थाल भर लिये।
जिन अग्र में चढ़ाय आत्म तृप्ति कर लिये।।तीर्थेश.।।5।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप में कपूर ज्योति को जलावते।
जिन आरती करंत मोह तम भगावते।।तीर्थेश.।।6।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धूप पात्र में सुगंध धूप खेवते।
उन पाप कर्म भस्म होंय आप सेवते।।तीर्थेश.।।7।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार आम संतरा मंगा लिया।
जिन अग्र में चढ़ाय सर्वश्रेष्ठ फल लिया।।तीर्थेश.।।8।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ लेय श्रेष्ठ रत्न मिलाऊं।
जिन अग्र में चढ़ाय चित्त कमल खिलाऊं।।तीर्थेश.।।9।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

पद्म सरोवर नीर ले, जिनपद धार करंत।
तिहुंजग में मुझ में सदा, करो शांति भगवंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा –

जिनवर गुणमणि तेज, सर्व लोक में व्यापता।
हो मुझ ज्ञान अशेष, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

तीर्थंकर प्रभु के जन्म समय से, दश अतिशय सुखदायी हैं।
उनके तनु में नहिं हो पसेव, यह अतिशय गुण मन भायी है।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।1।।

ॐ ह्रीं निः स्वेदत्वसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माता की कुक्षी से जन्में, औदारिक तनु मानव का है।
फिर भी मल मूत्र नहीं तुममें, यह अतिशय पुण्य उदय का है।।मैं.।।2।।

ॐ ह्रीं निर्मलतासहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तन में श्वेत रुधिर पय सम, यह अतिशय तीर्थंकर के हो।
अतएव मात सम त्रिभुवन जन, पोषण करते उदार मन हो।।मैं.।।3।।

ॐ ह्रीं क्षीरसमधवलरुधिरत्वसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संहनन सुवज्रवृषभनाराच कहाता शक्ति धरे।
यह अन्य जनों को सुलभ तथापि तुममें अतिशय नाम धरे।।मैं.।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रऋषभनाराचसंहननसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तन में एक एक अवयव, सब माप सहित अतिशय सुंदर।
यह सम चतुरस्र नाम का ही, संस्थान कहा त्रिभुवन मनहर।।मैं.।।5।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में उपमारहित रूप अतिसुंदर अणुओं से निर्मित।
सुरपति निज नेत्र हजार बना, प्रभु को निरखे फिर भी अतृप्त।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।6।।

ॐ ह्रीं अनुपमरूपसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव चंपक की उत्तम सुगंध, सम देह सुगंधित प्रभु का है।
यह अतिशय अन्य मनुज तन में नहिं कभी प्राप्त हो सकता है।।मैं.।।7।।

ॐ ह्रीं सौगंध्यसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ एक हजार आठ लक्षण, प्रभु तन का अतिशय कहते हैं।
यह तीन जगत् में भी उत्तम, अतएव इंद्र सब नमते हैं।।मैं.।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु में अनंत[1] बल वीर्य रहे, जन्मत ही यह अतिशय प्रगटे।
अतएव हजार हजार बड़े कलशों से न्हवन भि झेल सकें।।मैं.।।9।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हितमित सुमधुर वाणी प्रभु की, जनमन को अतिशय प्रिय लगती।
त्रिभुवन हितकारी भावों से, यह अद्भुत वचन शक्ति मिलती।।मैं.।।10।।

ॐ ह्रीं प्रियहितमधुरवचनसहजातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

केवल ज्योति प्रगट होती इक दश[2] अतिशय होते हैं।
चारों दिश में सुभिक्ष होवे, चउ चउसौ कोसों में।।

---

1. अणंतबलविरियं। तिलोयपण्णपत्ति पृ. 263। 2. तिलोयपण्णत्ति में ग्यारह माने हैं

घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूँ।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान प्रगट होते ही जिनवर, गगन गमन करते हैं।
बीस हजार हाथ ऊपर जा, अधर सिंहासन पर हैं।।घाति.।।12।।

ॐ ह्रीं गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के गमन शरीर आदि से, प्राणी वध नहिं होवे।
करुणा सिंधु अभय दाता को, पूजत निर्भय होवें।।घाति.।।13।।

ॐ ह्रीं प्राणिवधाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटी पूर्व वर्ष आयु में, कुछ कम ही वर्षों में।
केवलि का उत्कृष्ट काल यह, बिन भोजन है तन में।।घाति.।।14।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव मनुज तिर्यंच आदि उपसर्ग नहीं कर सकते।
केवलि प्रभु के कर्म असाता, साता में ही फलते।।घाति.।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की गोल सभा में, चहुंदिश प्रभु मुख दीखे।
चतुर्मुखी[1] ब्रह्मा यद्यपि ये, पूर्व उदङ् मुख तिष्ठे।।घाति.।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक पुद्गल तनु भी, छाया नहीं पड़े है।
केवलज्ञान सूर्य होकर भी सबको छांव करे हैं।।घाति.।।17।।

ॐ ह्रीं छायारहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. भगवान का मुख पूर्व या उत्तर दिशा में ही रहता है फिर भी सभा में सबको अपनी तरफ मुख दिखते हैं। यह चतुर्मुख नाम का अतिशय है।

नेत्रों की पलकें नहिं झपकें, निर्निमेष दृष्टी है।
जो पूजें वे भव्य लहें तुम, सदा कृपा दृष्टी है।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूँ।।18।।

ॐ ह्रीं पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में जितनी विद्या हैं, सबके ईश्वर प्रभु हैं।
जो भवि पूजें वे सब विद्या, अतिशय प्राप्त करे हैं।।घाति.।।19।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केश और नख बढ़े न प्रभु के, चिच्चैतन्य प्रभू हैं।
दिव्यदेह को धारण करते, त्रिभुवन एक विभू हैं।।घाति.।।20।।

ॐ ह्रीं समाननखकेशत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम दिव्यध्वनी[1] त्रय संध्या, मुहूर्त त्रय त्रय खिरती।
चारकोश तक सुनते भविजन, सब भाषामय बनती।।घाति.।।21।।

ॐ ह्रीं अकारानक्षरात्मकसर्वभाषामयदिव्यध्वनिकेवलज्ञानातिशयगुणमंडित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

प्रभु के श्रीविहार में दशदिश, संख्यात कोस तक असमय में।
सब ऋतु के फल फलते वे फूल, खिल जाते हैं वन उपवन में।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणामदेवोपनीतातिशयगुणमंडित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. तिलोयपण्णत्ति में इस दिव्यध्वनि को केवलज्ञान का अतिशय मानकर ग्यारह अतिशय गिनाये हैं। अन्यत्र केवलज्ञान के दश अतिशय लेकर सर्वार्धमागधी भाषा नाम से देवकृत अतिशय में लिया है।

कंटक धूली को दूर करे, जनमन हर सुखद पवन बहती।
प्रभु के विहार में बहुत दूर तक, स्वच्छ हुई भूमी दिखती।।तीर्थ.।।23।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादिदेवोपनीतातिशयगुणमंडित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीव पूर्व के बैर छोड़, आपस में प्रीती से रहते।
इस अतिशय पूजत निंदा कलह अशांति बैर निश्चित टलते।।तीर्थ.।।24।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथिवी दर्पण तल सदृश स्वच्छ, अरु रत्नमयी हो जाती है।
जहं जहं प्रभु विहरण करते हैं, वह भूमि रम्य मन भाती है।।तीर्थ.।।25।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयगुणमंडित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर मेघ कुमार सुगंध शीत, जल कण की वर्षा करते हैं।
इंद्राज्ञा से सब देववृंद, प्रभु का अतिशय विस्तरते हैं।।तीर्थ.।।26।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयगुणमंडित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाली जौ आदिक धान्यभरित, खेती फल से झुक जाती है।
सब तरफ खेत हों हरे भरे, यह महिमा सुखद सुहाती है।।तीर्थ.।।27।।

ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जनमन परमानंद भरें, जहं जहं प्रभु विचरण करते हैं।
मुनिजन भी आत्म सुधा पीकर, क्रम से शिवरमणी वरते हैं।।तीर्थ.।।28।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायू कुमार जिन भक्तीरत, सुख शीतल पवन चलाते हैं।
जिन विहरण में अनुकूल पवन उससे जन व्याधि नशाते हैं।।तीर्थ.।।29।।

ॐ ह्रीं विहरणमनुगतवायुत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुंये सरोवर बावड़ियाँ, निर्मल जल से भर जाते हैं।
इस चमत्कार को देख भव्य, निज पुण्य कोष भर लाते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।30।।

ॐ ह्रीं निर्मलजलपूर्णकूपसरोवरादिदेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश धूम्र उल्कादि रहित, अतिस्वच्छ शरद्ऋतु सम होता।
जिनवर भक्ती वंदन करते, भविजन मन भी निर्मल होता।।तीर्थ.।।31।।

ॐ ह्रीं शरत्कालवन्निर्मलाकाशदेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन ही रोग शोक संकट, बाधाओं से छुट जाते हैं।
जहं जहं प्रभु विहरण करते हैं, सर्वोपद्रव टल जाते हैं।।तीर्थ.।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वजनरोगशोकबाधारहितत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षेंद्र चार दिश मस्तक पर, शुचि धर्मचक्र धारण करते।
उनमें हजार आरे अपनी, किरणों से अतिशय चमचमते।।तीर्थ.।।33।।

ॐ ह्रीं यक्षेंद्रशीशोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिश विदिशा में छप्पन सुवर्ण, पंकज खिलते सुरभी करते।
इक पाद पीठ मंगल सु द्रव्य, पूजन सुद्रव्य सुरगण धरते।।
प्रभु के विहार में चरण तले, सुर स्वर्ण कमल रखते जाते।
इन तेरह[1] सुरकृत अतिशय को, हम पूजत ही सम सुख पाते।।34।।

ॐ ह्रीं जिनचरणकमलतलस्वर्णकमलरचनादेवोपनीतातिशयगुणमंडितचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

वर प्रातिहार्य सु आठ में, तरुवर अशोक विराजता।
मरकत मणी के पत्र पुष्पों, से खिला अति भासता।।

---

1. तिलोयपण्णत्ति में दिव्यध्वनि नाम से 11वाँ अतिशय केवलज्ञान अतिशय में से लेने से यहाँ देवोपनीत में तेरह ही लिये हैं।

निज तीर्थकर ऊँचाई से बारह गुणे तुंग फरहरे।
इसकी करें हम अर्चना, यह शोक सब मन का हरे।।5।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शीश पर त्रय छत्र शोभें, मोतियों की हैं लरें।
प्रभु तीन जग के ईश हैं, यह सूचना करती फिरें।।
क्या चंद्रमा नक्षत्रगण, को साथ ले भक्ती करें।
इस कल्पना युत छत्र त्रय की, हम सदा अर्चा करें।।36।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल फटिक मणि से बना, बहुरत्न से चित्रित हुआ।
जिननाथ सिंहासन दिपे, निजतेज से नभ को हुआ।।
इस पीठ पर तीर्थेश, चतुरंगुल अधर ही राजते।
यह प्रातिहार्य महान जो जन पूजते निज भासते।।37।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर मुनीगण देव देवी, चक्रि नर पशु आदि सब।
निज निजी कोठे बैठ अंजलि जोड़ते सुप्रसन्न मुख।।
इन बारहों गुण से घिरे तीर्थेश त्रिभुवन सूर्य हैं।
यह प्रातिहार्य महान इसको जजत जन जग सूर्य हैं।।38।।

ॐ ह्रीं द्वादशगणपरिवेष्टितमहाप्रातिहार्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आइये जिन शरण में, मानों कहे यह दुंदुभी।
सब देव गण मिलकर बजाते बहुत बाजे दुंदुभी।।
यह प्रातिहार्य महान इसको वाद्य ध्वनि से पूजते।
सुरगण बजावें वाद्य उनके सामने बहु भक्ति से।।39।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. यहाँ प्रातिहार्य में दिव्यध्वनि की जगह 'भगवान बारह गण से घिरे हुए हैं यह प्रातिहार्य हैं। यहाँ तिलोयपण्णति के आधार से अतिशय और प्रातिहार्यों का वर्णन है।

सुरगण गगन से कल्पतरु के पुष्प बहु वर्षा रहें।
यह वर्ण वर्ण सुगंध खिलते पुष्प जन मन भा रहे।।
यह प्रातिहार्य महान इसको सुमन अर्घ लिये जजूँ।
अतिशय सुयश सुख प्राप्तकर सब अशुभ अपयश से बचूँ।।40।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कोटि भास्कर तेज हरता प्रभा मंडल नाथ का।
जन दर्श से निज सात भव को देखते उसमें सदा।।
यह प्रातिहार्य महान इसको पूजहूँ अतिचाव से।
निज आत्म तेज अपूर्व पाकर छूटहूँ भव दाव से।।41।।

ॐ ह्रीं भामंडलमहाप्रातिहार्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर यक्षगण चौंसठ चंवर जिनराज पर ढोरें सदा।
ये चंद्रसम उज्ज्वल चंवर हरते सभी मन की व्यथा।।
यह प्रातिहार्य महान इसको पूजहूँ श्रद्धा धरे।
जो जजें चामर ढोरकर वे उच्च पद के सुख भरें।।42।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नाराच छंद –

तीन लोक तीनकाल की समस्त वस्तु को।
एक साथ जानता अनंत ज्ञान विश्व को।।
जो अनंतज्ञान युक्त इन्द्र अर्चते जिन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनंतज्ञान हेतु मैं।।43।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अरु अलोक के समस्त ही पदार्थको।
एक साथ देखता अनंत दर्श सर्व को।।
जो अनंत दर्श युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनंत दर्श हेतु मैं।।44।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधहीन जो अनंत सौख्य भोगते सदा।
हो भले अनंतकाल आवते न ह्यां कदा।।
वे अनंत सौख्य युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा तिन्हें अनंत सौख्य हेतु मैं।।45।।

ॐ ह्रीं अनन्तसौख्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अनंतवीर्यवान अंतराय को हने।
तिष्ठते अनंत काल श्रम नहीं कभी उन्हें।।
वे अनंत शक्ति युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा तिन्हें अनंत वीर्य हेतु मैं।।46।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –शंभु छंद –

दश अतिशय जन्म समय से ग्यारह केवलज्ञान उदय से हों।
देवों कृत तेरह अतिशय ह्वें, चौंतिस अतिशय सब मिलकेहों।।
वर प्रातिहार्य हैं आठ कहें, सु अनंत चतुष्टय चार कहें।
ये छ्यालिस गुण तीर्थंकर के, हम पूजें वांछित सर्व लहें।।47।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अठारह दोष रहित के अर्घ

–सोरठा –

दोष अनंतानंत, त्रिभुवन जन में व्याप्त हैं।
आप किया उन अंत, कुसुमांजलि से पूजहूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–भुजंगप्रयात छंद –

क्षुधा व्याधि पीड़ा करे सर्व जन को।
ये आहार संज्ञा हरें घातिहर जो।।

प्रभो केवली के असाता उदय भी।
फले सौख्य में मैं जजूँ नित उन्हें ही।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधामहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा वेदना से पिपासित सभी हैं।
प्रभो आपने स्वात्म अमृत पिया है।।
इसे नाशने हेतु प्रभु को जजूँ मैं।
सदा साम्य पीयूष रुचि से चखूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं तृषामहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा दोष भीती सभी को सतावे।
प्रभू ने सभी भय डराकर भगाये।।
जजूँ सात भय नाश हेतू तुम्हीं को।
भजूँ सात उत्तम परं स्थान ही को।।3।।

ॐ ह्रीं भयमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा क्रोध अग्नी दहे सर्व जग को।
प्रभू ने महाशांति से नाशा उसको।।
इसी क्रोध आश्रित सभी दोष आते।
जजूँ आप को क्रोध को मूल नाशें।।4।।

ॐ ह्रीं क्रोधमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिता से अधिक दुःख चिंता करे है।
तनू स्वास्थ्य को हर महा दुख भरे है।।
इसे मूल से आपने नष्ट कीना।
जजूँ मैं न चिंता कभी हो हृदय मा।।5।।

ॐ ह्रीं चिंतामहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा जर्जरी देह करके सुखावे।
इसे नाश कर मूल से सौख्य पावें।।
प्रभो केवली आपको ही जजूँ मैं।
इसे नाश के स्वात्म सुख को भजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं जरामहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा राग संसार में ही भ्रमावे।
प्रभो आपमें राग मुक्ती दिलावे।।
तथापी तुम्हीं ने सभी राग नाशे।
जजूँ भक्ति से तो अशुभ राग भागे।।7।।

ॐ ह्रीं रागमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोह सम्राट से सब दुखी हैं।
इसे मूल से प्रभु उखाड़ा सुखी हैं।।
इसी मोह को नाश हेतू जजूँ मैं।
महाध्वांत हर ज्ञान ज्योती भजूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं मोहमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करोड़ों भरे रोग इस देह में हैं।
प्रभू रोग को नाश करके सुखी हैं।।
विविध भांति के रोग नित कष्ट देते।
तुम्हें पूजते ये मुझे छोड़ देते।।9।।

ॐ ह्रीं रोगमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामल्ल मृत्यू ने त्रैलोक्य जीता।
इसे जीत तुम मुक्ति लक्ष्मी गृहीता।।
जजें आपको सर्व दुख के जयी हों।
वही लोक में शीघ्र मृत्युंजयी हों।।10।।

ॐ ह्रीं मृत्युमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पसीना न तन में प्रभू आप के हो।
प्रभो केवली आपके ये नहीं हो।।
इसे मूल से जो हरें वीतरागी।
उन्हीं को जजूँ मैं बनूँ सौख्यभागी।।11।।

ॐ ह्रीं स्वेदमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! एक क्षण में त्रयी लोक लोका।
नहीं ''खेद'' श्रम रंच भी आपको था।।

विषादो महादोष जीता तुम्हीं ने।
नशे दोष मेरा जजूँ अर्घ से मैं।।12।।

ॐ ह्रीं विषादमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामद कहें आठ विध या असंख्ये।
उन्हीं से लहें नीचगति जीव सब ये।।
हरें मान उनको सभी इंद्र वंदे।
जजूँ आपको सर्व मद को विखंडे।।13।।

ॐ ह्रीं मदमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रती दोषसे प्रीति हो इष्ट पर में।
इसे नाश निज में धरी प्रीति प्रभु ने।।
प्रभू केवली प्रीति नाहीं किसी में।
तथापी जगत् हित करो नित जजूँ मैं।।14।।

ॐ ह्रीं रतिमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुतूहलमयी विश्व को देख करके।
करें जो ऽतिविस्मय हरें पूर्ण सुख वे।।
सभी कर्मकृत फेर आश्चर्य कैसा।
जजूँ भक्ति से सौख्य हो आप जैसा।।15।।

ॐ ह्रीं विस्मयमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निद्रा के वश वो स्वयं को न देखें।
निजातमदरश पूर्ण को रोक ले ये।।
इसे नष्टकर सर्व जग को विलोका।
जजूँ मैं दरश प्राप्त होवे प्रभू को।।16।।

ॐ ह्रीं निद्रामहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतों दफे जन्म धर-धर दुःखी मैं।
न हो जन्म फिर से करूँ यत्न वो मैं।।
तुम्हीं ने पुनर्जन्म नाशा जगत में।
अतः पूजहूँ तुम चरण नाश अब मैं।।17।।

ॐ ह्रीं जन्ममहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरतिदोष से आकुलित चित्त होवे।
इसे नाशकर आपने कर्म धोये।।
यही दोष मुझको सदा दुःख देता।
जजूँ आपको ये भगे शीघ्र भीता।।18।।

ॐ ह्रीं अरतिमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद –

इन दोष अठारह ने जग में सबको दुख दे दे वश्य किया।
इनसे बच सका नहीं कोई इन त्रिभुवन में अधिपत्य किया।।
जो इनको जीते वे ''जिनेंद्र'' सौ इंद्रों से वंदित जग में।
मैं पूजूँ उनको अर्घ चढ़ा, हर दोष भरें गुण वे मुझमें।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादशमहादोषरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

चौबीस यक्षों के अर्घ

–दोहा –

समवसरण में भक्तियुत, तीर्थंकर के पास।
यक्ष यक्षिणी नित रहे, उन्हें बुलाऊँ आज।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चाल शेर –

श्रीआदिनाथ के निकट जो भक्ति से रहें।
'गोवदन' यक्ष नाम जिनका सूरिवर कहें।।
जिन नाथ के शासन के देव आइये यहाँ।
निज यज्ञ भाग लीजिए सुख कीजिए यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवस्य शासनदेव गोमुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री अजितनाथ के निकट जो नित्य ही रहे।
शासनसुदेव 'महायक्ष' नाम श्रुत कहे।।जिन.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य शासनदेव महायक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

संभव जिनेश के समोसरण में नित रहे।
जिनपाद कमल भक्त 'त्रिमुख' नाम यक्ष है।।
जिन नाथ के शासन के देव आइये यहाँ।
निज यज्ञ भाग लीजिए सुख कीजिए यहाँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य शासनदेव त्रिमुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

तीर्थेश अभीनंदन के पास में सदा।
प्रभुपाद कमलभक्ति 'यक्षेश्वर' करे मुदा।।जिन.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य शासनदेव यक्षेश्वरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

तीर्थेश सुमतिनाथ समवसरण में सदा।
नित पास रहे 'तुंबुरव' सुभक्त शर्मदा।।जिन.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य शासनदेव तुंबुरवयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री पद्मनाथ पास भक्तिभाव से रहे।
'मातंग' यक्षनाथ भक्त के विघन दहे।।जिन.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य शासनदेव मातंगयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

सुपार्श्वनाथ पाद 'विजय' यक्ष नित नमें।
ये नाथ भक्त भव्य का रक्षक सदा बनें।।जिन.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य शासनदेव विजययक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चन्दाप्रभू के पास 'अजित' यक्ष नित्य है।
जिन भक्तगणों के सभी विघ्नों को हरत है।।जिन.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य शासनदेव अजितयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री पुष्पदंत भक्तिलीन 'ब्रह्मयक्ष' है।
प्रभु भक्त के समस्त कष्ट हरण दक्ष है।।जिन.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तनाथस्य शासनदेव ब्रह्मयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शीतल जिनेश समवसरण में सदा रहें।
वो नाथ भक्ति लीन 'ब्रह्मेश्वर' सुयक्ष हैं।।जिन.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य शासनदेव ब्रह्मेश्वरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्रेयांसनाथ पास में 'कुमार यक्ष' है।
तीर्थेश भक्त विपद् दूर करन दक्ष है।।जिन.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य कुमारयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्रीवासूपूज्य पास में 'षण्मुख' सुयक्ष है।
जिनपूजकों के विघ्न दूर करन दक्ष है।।जिन.।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य शासनदेव षण्मुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–दोहा –

सतत यक्ष 'पाताल' है, विमलनाथ के पास।
यज्ञ भाग उनके लिए, अर्पूं रुचि से आज।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य शासनदेव पातालयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री अनंत जिन पास में, 'किन्नर' यक्ष वसंत।
यज्ञ भाग उनके लिए, अर्पण करूं तुरंत।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य शासनदेव किन्नरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

धर्मनाथ का 'किंपुरुष', शासन देव प्रसिद्ध।
जिन भक्तों के कार्य सब, करे शीघ्र ही सिद्ध।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य शासनदेव किंपुरुषयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शांतिनाथ के पास में, 'गरुड़' यक्ष निवसंत।
जिन भक्तों का भक्त है, करे विघन घन अंत।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव गरुड़यक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

कुंथुनाथ के पास में, यक्ष रहे 'गंधर्व'।
जिन भक्तों के प्रेम से पूरे वांछित सर्व।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य शासनदेव गंधर्वयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अरहनाथ के निकट में, रहे 'कुबेर' सुयक्ष।
जिन पूजा के विघ्न को, दूर करन में दक्ष।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य शासनदेव कुबेरयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मल्लिनाथ के पास में, 'वरुण' यक्ष निवसंत।
जिन पूजक के प्रेम से, करें उपद्रव शांत।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य शासनदेव वरुणयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मुनिसुव्रत के पास में, 'भृकुटि' नाम के यक्ष।
जिनपद भक्तों के सतत, इष्ट सिद्धि में दक्ष।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य शासनदेव भृकुटियक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नमि जिनके सानिध्य में, रहे यक्ष 'गोमेध'।
जिन शासन का भक्त ये, हरे भव्यजन खेद।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य शासनदेव गोमेधयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नेमिनाथ के पास में, 'पार्श्वयक्ष' निवसंत।
भक्तों को सुख शांति दे, हरे परस्पर द्वंद।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य शासनदेव पार्श्वयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

समवसरण में पार्श्व के यक्ष रहें 'मातंग'।
द्वितिय नाम 'धरणेंद्र' है, रहे भक्त के संग।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेव धरणेंद्रयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

महावीर जिन पास में, यक्ष रहे 'मातंग'।
जिन शासन रक्षक कहा, अर्घ चढ़ा पूजंत।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः शासनदेव मातंगयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-गीता छंद –

तीर्थंकरों के पास रहते सदा जिनवर भक्त हैं।
गोमुख[1] प्रमुख ये यक्ष चौबिस धर्म में अनुरक्त हैं।।
ये जैन शासन की सतत रक्षा करें वृद्धी करें।
सम्यक्त्व धारी हैं स्वयं सब भव्य संकट परिहरें।।

–दोहा –

महाकल्पतरु यज्ञ में, आवो शासनदेव।
यज्ञ भाग तुम अर्पिहूं, करो सहाय सदैव।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेवगोमुखप्रमुखसर्वयक्षा अत्र आगच्छत, आगच्छत! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

चौबीस यक्षिणी के अर्घ

–नरेंद्र दंद –

वृषभदेव के समवसरण में, 'चक्रेश्वरी' सुयक्षी।
सम्यग्दर्शन गुण से मंडित, खंडे सर्व विपक्षी।।
महायज्ञ पूजा विधान में, आवो आवो माता।
यज्ञ भाग मैं अर्पण करता, करो सर्व सुख साता।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवस्य शासनदेवि चक्रेश्वरीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

1. सभी यक्षों के नाम तिलोयपण्णत्ति के आधार से हैं।

अजितनाथ के समवसरण में, रहे 'रोहिणी' यक्षी।
जिन भक्ती में रत महिलायें, पूजा करतीं अच्छी।।
महायज्ञ पूजा विधान में, आवो आवो माता।
यज्ञ भाग मैं अर्पण करता, करो सर्व सुख साता।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य शासनदेवि रोहिणीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

संभव जिनके निकट भक्तिरत, 'प्रज्ञप्ती' यक्षी हैं।
जिन भक्तों के संकट हरतीं, अधर्म प्रति पक्षी हैं।।महा.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य शासनदेवि प्रज्ञप्तीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अभिनंदन के निकट रहें नित, 'वज्रश्रृंखला देवी'।
जिन पूजक के विघ्न निवारें, जिन चरणाम्बुज सेवी।।महा.।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य शासनदेवि वज्रश्रृंखलायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'वज्रांकुशा' यक्षिणी नितप्रति, सुमतिनाथ पदभक्ता।
जो जिनभक्त धर्म के प्रेमी, उन गुण में अनुरक्ता।।महा.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य शासनदेवि वज्रांकुशायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'अप्रतिचक्रेश्वरी' यक्षिणी, पद्मप्रभू पद सेवें।
जो जिनशासन में अनुरागी, उनको सब दुख देवें।।महा.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य शासनदेवि अप्रतिचक्रेश्वरीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के पास रहें नित, सुरी 'पुरुषदत्ता' हैं।
जैनधर्म की वृद्धि करें नित, जिनगुण अनुरक्ता हैं।।महा.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पुरुषदत्तायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चंद्रप्रभू के चरण लीन प्रभुभक्त 'मनोवेगा' हैं।
अपर नाम 'ज्वालामालिनी' ये धर्मनीतिवेत्ता हैं।।
महायज्ञ पूजा विधान में, आवो आवो माता।
यज्ञ भाग मैं अर्पण करता, करो सर्व सुख साता।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य शासनदेवि मनोवेगायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

पुष्पदंत के चरण कमलरत, 'काली देवी' यक्षी।
सम्यग्दर्शन गुण से भूषित, भविजन विघ्न विपक्षी।।महा.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य शासनदेवि कालीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शीतल जिनकी 'ज्वालामालिनि', देवी प्रियंवदा है।
सुख संपति सौभाग्य बढ़ातीं, जिन भक्तों के सदा हैं।।महा.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य शासनदेवि ज्वालामालिनीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नाम 'महाकाली' देवी ये सम्यग्दर्शन युत हैं।
श्री श्रेयांस के समवसरण में, जिनपद पंकजरत हैं।।महा.।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य शासनदेवि महाकालीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

वासुपूज्य जिनशासन देवी 'गौरी' नाम धरे है।
शुक्लवर्ण सम शुभ्र गुणों से जिनपद भक्ति करे है।।महा.।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य शासनदेवि गौरीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–दोहा –

'गांधारीयक्षी' सदा विमलनाथ पद भक्त।
अर्घ समर्पूं प्रीति से, ग्रहण करो हे यक्षि।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य शासनदेवि गांधारीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'वैरोटी' यक्षी रहें, प्रभु अनंत जिन पास।
अर्घ समर्पूं प्रेम से, ग्रहण करो तुम आज।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य शासनदेवि वैरोटीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शासनदेवि 'अनंतमती' धर्मनाथ गुणलीन।
अर्घ समर्पूं नित्य मैं, करो विघन सब क्षीण।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य शासनदेवि अनंतमतीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शांतिनाथ की 'मानसी', शासन देवी मान्य।
पूजूँ अर्घ समर्प्य मैं, करो शांति जगमान्य।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि मानसीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'महामानसी' यक्षिणी, कुंथुनाथ पद भक्त।
अर्घ समर्पूं प्रीति से, करो उपद्रव नष्ट।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य शासनदेवि महामानसीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अरहनाथ की यक्षिणी 'जया' नाम से ख्यात।
अर्घ समर्पूं यज्ञ में, करो विजय सुप्रभात।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य शासनदेवि जयायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मल्लिनाथ की यक्षिणी, 'विजया' विजय करंत।
रुचि से अर्घ समर्प्यते, धर्मविजय विलसंत।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य शासनदेवि विजयायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मुनिसुव्रत शासनरता, 'अपराजिता' विख्यात।
अर्घ समर्पूं प्रेम से, करो पराजित पाप।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य शासनदेवि अपराजितायक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नमि जिनकी 'बहुरूपिणी' शासन देवी सिद्ध।
अर्घ समर्पूं प्रीति से, हो धन धान्य समृद्ध।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य शासनदेवि बहुरूपिणीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'कूष्मांडिनी' यक्षिणी, नेमिनाथ पद भक्त।
रुचि से अर्घ चढ़ावते, नाशो सर्व अनिष्ट।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य शासनदेवि कूष्मांडिनीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

माता 'पद्मावती' करें, पार्श्वनाथ गुणगान।
अर्घ समर्पण कर जजूँ, भरो सौख्य धनधान।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावतीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

महावीर जिन भक्तिका, 'सिद्धायिनी' प्रसिद्ध।
रुचि से अर्घ चढ़ावते, करो मनोरथ सिद्ध।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः शासनदेवि सिद्धायिनीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-गीता छंद –

तीर्थंकरों के निकट में, चौबीस शासन देवियाँ[1]।
सम्यक्त्व गुण से मंडिता, जिनपाद पंकज सेवियाँ।।
जिन धर्म वत्सल भाव से, जिनभक्त के संकट हरें।
उनको यहाँ यज्ञांश देकर, धर्म प्रीती विस्तरें।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेवीचक्रेश्वरीप्रमुखसर्वयक्ष्यः। अत्र आगच्छत आगच्छत, इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

जाप्य – **ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

1. सभी यक्षियों के नाम तिलोयपण्णत्ति के आधार से हैं।

जयमाला

–त्रिभंगी छंद –

जय जय तीर्थंकर घातिक्षयंकर केवल सूर्य प्रभात खिला।
त्रिभुवन समुद्र महिं हर्ष लहर हुइ, सब जन को आनंद मिला।।
सुर कल्पतरू से सुमनस बरसें, इन्द्र सिंहासन डोल रहे।
सब दिशा प्रसन्ना, स्वच्छ सुगगना मंद सुगंधित पवन बहें।।1।।

–शंभु छंद –

जय केवलज्ञान उदित होते, तिहुंजग में अद्‌भुत शांति हुई।
सब जग में अतिशय क्षोभ उठा, नरकों में भी क्षण शांति हुई।।
सुर कल्पवासी गृह में घंटा, स्वयमेव बजे सुर नाच उठे।
ज्योतिषी गृहों में सिंहनाद, सुरललना के मन नाच उठे।।2।।

व्यंतर सुर गृह में भेरी और नगाड़े जोरों से बाजे।
सुर भवनवासि घर में शंखों की ध्वनी हुई, सब दिश गाजें।।
सु गज सूँडों में कमल लिये ऊँचे कर करके नाच रहें।
मानों ये प्रभु को अर्घ करें भक्ती से सुरगण नाच रहें।।3।।

ऐरावत हाथी की शोभा, सुरगुरु वर्णन नहिं कर सकते।
वह एक लाख योजन प्रमाण, बत्तीस बने हैं मुख उसके।।
प्रतिमुख मे आठ आठ दंता, प्रतिदंत एक इक सरवर हैं।
प्रति सरवर में एकेक कमलिनी, स्वर्ण कमल से सुरभित हैं।।4।।

एकेक कमलिनी कमलिनी में, बत्तिस बत्तिस हैं कमल खिले।
प्रत्येक कमल में बत्तिस दल, वे बड़े बड़े लंबे फैले।।
इक-इक दल पर बत्तिस बत्तिस, सुर अप्सरियाँ बहु नृत्य करें।
सब हावभाव श्रृंगार पूर्ण, नवरस में भक्ती स्तवन करें।।5।।

यह हाथी श्वेत वर्ण सुंदर, घंटा माला किंकणियों से।
अति शोभ रहा मन मोह रहा, नर्तन करती अप्सरियों से।।

इसके उुपर कामग विमान, रत्नों से बना चमकशाली।
मोती के हार पुष्पमाला, फन्नूसों से अतिशय शाली।।6।।

सौधर्म इन्द्र शचिदेवी सह इस गज, पर चढ़कर आते हैं।
ईशान इंद्र आदिक सब मिल, निज निज वाहन चढ़ आते हैं।।
सबसे आगे किल्विषक देव बहु वाद्य बजाते चलते हैं।
फिर सौधमेंद्र प्रभृति सुरगण निज निज वैभवयुत चलते हैं।।7।।

आगे आगे सुर अप्सरियाँ किन्नरियाँ नर्तन करती हैं
जिन महिमा के स्तोत्र पढ़े जिनवर गुण वर्णन करती हैं।।
गज पर सत्ताइस कोटि प्रमित अप्सरियाँ नृत्य करें सर में।
सातों कक्षा की सेना के सब देव चलें निज निज क्रम में।।8।।

इंद्राज्ञा से धनपति आकर, इक क्षण में समवसरण रचता।
अतिशय रचना है जगह जगह, त्रिभुवन का वहाँ वैभव रखता।।
प्रभु समवसरण में सिंहासन पर चतुरंगुल से अधर रहें।
वैभव अनंत को पाकर भी, प्रभु उससे नित्य अलिप्त रहें।।9।।

चौंतीसों अतिशय सहित आप, वसु प्रातिहार्य के स्वामी हो।
आनत्य चतुष्टय से मंडित, सब जग के अंतर्यामी हो।।
सुरपति प्रदक्षिणा दे करके जिनदेव वंदना करते हैं।
नरपति पशु भी आ वंदन कर बारह कोठों में बसते हैं।।10।।

यद्यपि यह क्षेत्र बहुत छोटा, फिर भी अवकाश सभी को है।
जिनवर माहात्म्य से यह अतिशय सब आपस में अस्पर्शित हैं।।
इन कोठों में मिथ्यादृष्टी, संदिग्ध विपर्यय नहिं जाते।
नहिं जाय असंज्ञी अरु अभव्य, पाखंडी द्रोही नहिं जाते।।11।।

नहिं वहां कभी आतंक रोग, क्षुध तृष्णा कामादिक बाधा।
नहिं जन्ममरण नहिं वैर कलह, नहिं शोक वियोग जनित बाधा।।
सब सीढ़ी एक हाथ ऊँची, जो बीस हजार प्रमाण कही।
बालक व वृद्ध पंगू आदिक, अंतर्मुहूर्त[1] में चढ़ें सही।।12।।

1. अड़तालिस मिनट में।

प्रभु की कल्याणी वाणी सुन निज भव त्रैकालिक जान रहे।
अतिशय अनंत गुण श्रेणि रूप, परिणाम विशुद्धी ठान रहे।।
सब असंख्यात गुणश्रेणी में कर्मों का खंडन करते हैं।
क्रम से जन बोधि समाधी पा, मुक्ती कन्या को वरते हैं।।13।।

प्रभु क्षुधातृषादिक जन्म मरण अठरह दोषों से छूट गये।
सब दोष आप से त्यक्त अतः सारे जग में ही घूम रहे।।
गोमुख आदिक चौबीस यक्ष, चक्रेश्वरि आदिक यक्षी हैं।
जिनशासन देव देवियां ये, इनमें प्रभु भक्ती सच्ची है।।14।।

तीर्थंकर के गुणमणि अनंत, नहिं गणधर भी कह सकते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनके मन पंकज खिलते हैं।।
मैं भी प्रभु आप कीर्ति सुनकर अब चरण शरण में आया हूँ।
अब जो कर्तव्य आपका हो, वह कीजे मैं अकुलाया हूँ।।15।।

–घत्ता –

जय जय जिन भास्कर, सर्व सुखाकर ज्ञान ज्योति उद्योत भरें।
मुझ 'ज्ञानमती' को, तीन रतन दो, जिससे तुम पद प्राप्त करें।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितअष्टादशदोषविखंडितगोमुखचक्रेश्वर्या-दियक्षयक्षीसेवितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।

बड़ी जयमाला

– दोहा –

घाति चतुष्टय घातकर, प्रभु तुम हुय कुतार्थ।
नवकेवल लब्धीरमा, रमणी किया सनाथ।।1।।

– शेरछंद –

प्रभु दर्श मोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकनाम को परिपूर्ण किया है।।
चारित्र मोहतीय का विनाश जब किया।
क्षायिक चरित्र नाम यथाख्यात को लिया।।2।।

संपूर्ण ज्ञानावर्ण का जब आप क्षय किया।
कैवल्यज्ञान से त्रिलोक ज्ञान जब लिाय।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनंता।
सब लोक औ अलोक देखते हो तुरंता।।3।।

दानान्तराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम शिवपथ का दान जो।।
लाभान्तराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंतलाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परम शुभ सूक्ष्म दिव्यानन्त वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
शिव प्राप्त होने तक शरीर भी टिका हरे।।5।।

भोगान्तराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध-उदकवृष्टि शोभ हैं।।
पग के तले वर पद्म रचे देवगण सदा।
सौगंध शीतपवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अन्तराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चंवर तरु अशोक हैं।
सुर दुदुंभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश के आनन्त्य वीर्य है।
होते न कभी श्रांत आप धीर वीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।8।।

हे तीर्थनाथ! आप धमतीर्थ चलाया।
गणधर मुनीन्द्र नाथ आप कीर्ति को गाया।।
जो भव्य आप तीर्थ में स्नान करे हैं।
वे पापमल को धोके हृदय स्वच्छ करे हैं।।9।।

तनु भी पवित्र आप का सुद्रव्य कहावे।
शुभ ही सभी परमाणुओं से प्रकृति बनावे।।
तुम देह के आकार वर्ण गंध आदि की।
पूजा करें वे धन्य मनुज जन्म करें भी।।10।।

नगरी वही पावन हुई, जिसमें जनम लिया।
दीक्षा जहाँ ली वह सुथल भी पूज्यकर दिया।।
जहाँ पे हुआ कैवल्य औ निर्वाण की भूमी।
सब पूज्य हुईं पाँचों हि कल्याण की भूमी।।11।।

जिस क्षण गर्भ में आवसे जिस क्षण जनम लिया।
जिस काल में दीक्षा व ज्ञान मोक्ष पद लिया।।
वे दिन सभी पावन हुए प्रभु के प्रसाद से।
उस काल की पूजा करूँ तुम नाम जाप से।।12।।

जो भाव आप के वही जग में महान् हैं।
उनको जो सतत पूजते वे भाग्यवान हैं।।
इस विध सुद्रव्य क्षेत्र काल भाव सभी भी।
होते पवित्र आपके आश्रय से सभी भी।।13।।

सुद्रव्य क्षेत्रकाल भाव प्राप्ति के लिए।
निजात्म तत्त्व साधना की प्राप्ति के लिए।।
मैं बार-बार आपके द्रव्यादि को गाऊँ।
इनके निमित्त स्वात्म की आराधना पाऊँ।।14।।

जिनवर! अनंत सौख्य के भंडार आप हो।
हे नाथ! समवसरण के सर्वस्व आप हो।।
जो निज हृदय कमल में आप ध्यान करे हैं।
वे सर्व हृदय रोग आदि क्षण में हरे हैं।।15।।

जो मन में आप के गुणों का स्मरण करें।
वे मानसिक व्यथा समस्त ही हरण करें।।
जो नित्य वचन से तुम्हारे गुण को गावते।
वे विश्व में सभी जनों से कीर्ति पावते।।16।।

पंचांग जो प्रणाम करें आप को सदा।
उनके समस्त रोग शोक क्षणमें हो विदा।।
ये कुछेक फल प्रभो! तुम भक्ति किये से।
फल तो अचिन्त्य है न कोई कह सके उसे।।17।।

तुम भक्ति अकेली समस्त कर्म हर सके।
तुम भक्ति अकेली अनंत गुण भी भर सके।।
तुम भक्ति भक्त को स्वयं भगवान बनाती।
फिर कौन सी वो वस्तु जिसे ये न दिलाती।।18।।

हे नाथ! आप तीन लोक के गुरु कहे।
भक्तों को इच्छा के बिना सब सौख्य दे रहे।।
अतएव तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधि पाय मैं धनवान हो गया।।19।।

रज गंध वर्ण स्पर्श से मैं शून्य ही रहा।
इस मोह कर्म से मेरा संबंध ना रहा।।
ये द्रव्यकर्म आत्मा से बद्ध नहीं हैं।

ये भावकर्म तो मुझे छूते भी नहीं हैं।।20।।

मैं एक हूं विशुद्ध ज्ञानदर्श स्वरूपी।
चैतन्य चमत्कार ज्योतिपुंज अरूपी।।
परमार्थनय से मैं तो सदा शुद्ध कहाता।
ये भावना ही एक सर्वसिद्धि प्रदाता।।21।।

व्यवहारनय से यद्यपी अशुद्ध हो रहा।
संसार पारावार में ही डूबता रहा।
फिर भी तो मुझे आज मिले आप खिवैया।
निज हाथ का अवलंब दे भवपार करैया।।22।।

ये कीर्ति सुन के नाथ! आप अर्चना करूँ।
अपने गुणों की प्राप्ति हेतु वंदना करूँ।।
हे नाथ! तुम प्रसाद से अब जन्म ना धरूँ।
आनन्त्य सौख्य दीजिये अभ्यर्थना करूँ।।23।।

– दोहा –

तीर्थंकर प्रकृति कही, महापुण्य फलराशि।
ज्ञानमती कैवल्य हो, मिले सर्वसुख राशि।।25।।

ॐ ह्रीं समवसरणविभवसमन्वित-वृषभादिवर्द्धमानपर्यंतचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

– गीताछंद –

जो समवसरण विधान करते, भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनंत लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्यकर, वे मोक्ष लक्ष्मी सुख भजें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

इति समवसरण विधानं संपूर्णम्

प्रशस्ति

–शंभु छंद–

श्री ऋषभदेव से महावीर तक, तीर्थंकर का ध्यान धरूँ।
श्री गौतम स्वामी को प्रणमूँ, माँ सरस्वती गुणगान करूँ।।
यह जिनवर शासन सार्वभौम, अक्षुण्य अनादि अनंत रहे।
इस युग में महावी शासन, पंचम कालान्त्य मुनीश कहें।।1।।

इस शासन में श्री कुंदकुंद आचार्य मूलसंघाधिपती।
उन आम्नाय में शारदगच्छ, बलात्कारगणख्या अती।।
इस परम्परा में प्रथम सूरि, आचार्य शांतिसागर मानें।
उन पट्टाधीश वीरसागर, आचार्य मेरे गुरु जग जाने।।2।।

श्री शांतिनाथ की जन्मभूमि वर, तीर्थ हस्तिनापुर सुंदर।
जहाँ जंबूद्वीप बना मनहर, जगभर में ख्यात हुआ सुखकर।।
शुभ पौष शुक्ल चौदश, पच्चीस सौ बत्तीस वीर संवत्सर है।
यह समवसरण पूजा विधान, हुआ पूर्ण बना अतिशय कर है।।3।।

इसमें चौदह पूजा व सात सौ साठ अर्घ्य सोलह पूर्णार्घ्य।
तीर्थंकर समवसरण वैभव, उन अंतर वैभव गुण अनर्घ्य।।
सर्वोत्तम कल्पद्रुम विधान, उसमें से समवसरण विधान।
मैंने निकालकर इसे दिया, यह अतिशायी महिमा निधान।।4।।

मुझ गणिनी ज्ञानमती साध्वी ने, तीर्थंकर गुणगान किया।
पूजा विधान रचना सुंदर, मुनिगण ने भी बहुमान्य किया।।
जब तक महावीर प्रभू शासन, तब तक सब भव्य विधान करें।
कैवल्यज्ञान मति होने तक, यह अनुष्ठान सब सौख्य भरे।।5।।

।।इति प्रशस्ति संपूर्णा।।

समवसरण की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

चौबीस जिनवर के समवसरण की, मंगलदीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया।

समवसरण के बीच प्रभू जी नासादृष्टि विराजे।
गणधर मुनि नरपति से शोभित, बारह सभा सुराजे।।प्रभु जी....
ओंकार ध्वनि, सुन करके मुनि, रत रहें स्वपर कल्याण में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

चार दिशा के मानस्तभों को भी मेरा वंदन।
मिथ्यादृष्टि जिनको लखकर पाते सम्यग्दर्शन।।प्रभु जी.....
करके दर्शन, प्रभु का वन्दन, सम्यक् का हुआ प्रचार है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।

ध्वजाभूमि के अन्दर देखो, ऊँचे ध्वज लहराएँ।
मालादिक चिन्हों से युत वे, जिनवर का यश गाएँ।। प्रभु जी.....
शुभ कल्पवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, से समवसरण सुखकार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

भवनभूमि के स्तूपों में, जिनवर बिंब विराजें।
द्वादशगण युत श्री मण्डप में, सम्यग्दृष्टि राजें।।प्रभु जी.....
अगणित वैभव, युत बाह्य विभव से, शोभ रहें भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

धर्मचक्रयुत गंधकुटी पर, अधर प्रभू रहते हैं।
उनकी आरति से ही 'चन्दना' भव आरत टरते हैं।। प्रभु जी.....
प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक महिमा अपरंपार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज –सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी।।
भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।1।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनमन पाया था।।2।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।
सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।3।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में ''चन्दना'' देखो प्रभू की गंधकुटी भी है।।
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।4।।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री–**आर्यिका चन्दनामती**

–स्थापना–

पूजन करो जी-
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं . . . .
पूजन करो जी,
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

–अष्टक–

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।

उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शेरछंद

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा . . .।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् . . .।।

जयमाला

दोहा

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन–नागिन-मेरा मन डोले . . .।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।1।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।। माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।2।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।3।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।4।।

तीर्थ अयोध्या-मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।5।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।6।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।। माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।7।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।8।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।9।।

–दोहा–

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमती मात।।10।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभुछंद–

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें सदा पूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।